



NECAR

उत्तर पूर्वी प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग एवं प्रसार केन्द्र

(भारत सरकार का विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के
तहत एक स्वायत्त निकाय)

वार्षिक रिपोर्ट

2023-24

75
Azadi Ka
Amrit Mahotsav

G20
भारत 2023 INDIA

विषय सारणी

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
1	महानिदेशक की कलम से	1 – 4
2	वार्षिक रिपोर्ट का सारांश (वित्तीय वर्ष) 2023-2024	5 – 6
3	अध्याय 1: नेक्टर का संक्षिप्त परिचय	7– 10
4	अध्याय 2: नेक्टर की सफलता की कहानियाँ	11– 26
5	अध्याय 3: बाहरी वित्तपोषित परियोजनाएँ	27 – 58
6	अध्याय 4: स्व-निर्मित परियोजनाएँ	59 – 69
7	अध्याय 5: नेक्टर अनुदान सहायता परियोजनाएँ	70 – 82
8	अध्याय 6: प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण	83 – 89
9	अध्याय 7: सम्मेलन और आयोजन	90 - 108
10	अध्याय 8: समाचारों में नेक्टर	110 - 114
11	अध्याय 9: लेखा परीक्षा और खाता विवरण वित्तीय वर्ष 2023-24	अनुलग्नक

नेक्टर के महानिदेशक की कलम से संदेश

उत्तर पूर्वी प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग एवं प्रसार केंद्र (नेक्टर) ने वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान उत्तर पूर्व के लगभग सभी दूरस्थ क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी वितरण और पहुंच में एक नये ढाँचे की शुरुआत की है। यह पहल कई राज्यों के सरकारी विभागों द्वारा भी विभिन्न स्थानों विशिष्टता के साथ प्रदर्शित की गई है। सभी कार्यक्रमों की तैयारी और वास्तविक कार्यान्वयन अंत उपयोगकर्ताओं और संबंधित राज्य हितधारकों के साथ परामर्श के माध्यम से किए गए थे, ताकि नेक्टर के प्राथमिक कार्यों की पहुंच को बढ़ाया जा सके, जिसमें प्रौद्योगिकी प्रसार, कौशल और उद्यमिता प्रशिक्षण और छात्रों के इंटरशिप कार्यक्रम शामिल हैं, जिससे पूरे उत्तर पूर्व को लाभ हो सके।

नेक्टर ने वित्तीय वर्ष के दौरान उत्तर पूर्व में ग्रामीण आजीविका के उन्नयन के लिए विभिन्न नवोन्मेषी और क्रांतिकारी तकनीकों के माध्यम से कई गतिविधियों को अपनाया। संगठन ने एक व्यापक गतिविधि मानचित्र तैयार किया है, ताकि उत्तर पूर्व में आवश्यक प्रौद्योगिकी सेवाओं की वितरण क्षमता को बढ़ाया जा सके।

वित्तीय वर्ष 2023-2024 के दौरान, नेक्टर ने विभिन्न क्षेत्रों में कई परियोजनाओं को वित्त पोषित किया, जिनमें से अधिकांश खाद्य प्रसंस्करण, कृषि और कौशल आधारित प्रशिक्षण पहलों के लिए आवंटित की गई। परियोजनाएँ उत्तर पूर्व के आठ राज्यों में वितरित की गईं। पहलों ने सीधे 931 व्यक्तियों को लाभ पहुंचाया और अप्रत्यक्ष रूप से लगभग 2,550 लोगों को प्रभावित किया। प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन लगभग 1,302 व्यक्तियों के लिए किया गया, जिनमें अधिकांश एसटी और एससी समुदाय के लोग और अन्य पिछड़े वर्ग के लोग शामिल थे।

पिछले वित्तीय वर्ष के दौरान नेक्टर की एक उल्लेखनीय सफल परियोजनाओं में से एक उत्तर पूर्वी भारत में केसर की वैज्ञानिक खेती का कार्यान्वयन और प्रदर्शन था, जिसने अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम और मेघालय राज्यों में विशेष रूप से आशाजनक परिणाम प्रदान किए। यह पहल विभिन्न कार्यान्वयन एजेंसियों के साथ साझेदारी में की गई, जिसमें संबंधित राज्य सरकार के विभाग और NGOs शामिल थे, और लगभग 3 एकड़ की कृषि भूमि पर फैली हुई थी। इस परियोजना ने मुख्यतः ST समुदाय के लगभग 85 किसानों को सीधे लाभ पहुंचाया, जिनमें से अधिकांश महिलाएं थीं। संग्रहित केसर को पैक किया गया और “अष्टलक्ष्मी केसर” ब्रांड के तहत औपचारिक रूप से लॉन्च किया गया।

नेक्टर विभिन्न स्थानों पर स्थानीय किसानों के लिए हल्दी और अदरक सहित अन्य मसालों को सुखाने के लिए स्वतंत्र सौर हाइब्रिड डिहाइड्रेटर्स की स्थापना को बढ़ावा दे रहा है। अब तक, 15 डिहाइड्रेटर्स जिनकी सूखाने की क्षमता 100 किलोग्राम प्रत्येक है, मेघालय, नागालैंड और मिजोरम में विभिन्न स्थानों पर स्थापित किए गए हैं, जिससे किसानों को सूखे उत्पादों के उत्पादन में सहायता मिली है, साथ ही कच्चे माल की सुरक्षा और गुणवत्ता सुनिश्चित की गई है। इन डिहाइड्रेटर्स से अब तक उत्पादों में लखड़ांग हल्दी, अदरक, जैकफ्रूट बीज, मिर्च, बांस की शूट और आंवला शामिल हैं।

कृषि, ग्रामीण आजीविका, और सामुदायिक विकास को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में, उत्तर पूर्व में दो सामुदायिक रेडियो स्टेशनों की स्थापना की गई है - मेघालय के मावकनरेव में 89.60 एफएम सामुदायिक रेडियो और मणिपुर के थौबल में वाहोंग रेडियो स्टेशन। दोनों सामुदायिक रेडियो स्टेशनों ने संबंधित क्षेत्रों में प्रासंगिक जानकारी प्रदान करके, सामाजिक और आर्थिक विकास को बढ़ावा देकर,

और हाशिए पर रहने वाले समुदायों की आवाजों को प्रबलित करके गहन प्रभाव डाला है, जिससे लगभग 35,000 लोगों की आबादी वाले 100 से अधिक एकांत गांवों को लाभ हुआ है, विशेषकर अंतर्राष्ट्रीय सीमा क्षेत्रों में।

नेक्टर का हनी मिशन (2023-2024) उत्तर पूर्व भारत में वैज्ञानिक मधुमक्खी पालन को बढ़ावा देने का लक्ष्य है। पिछले वर्षों में सफल पायलट परियोजनाओं पर आधारित, नेक्टर ने असम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, मेघालय, और मणिपुर में 2000 से अधिक वैज्ञानिक मधुमक्खी कॉलोनियों का समर्थन किया है, जिसमें वैज्ञानिक मधुमक्खी पालन प्रथाओं को बढ़ावा देने, शहद की उपज को बढ़ाने, और मधुमक्खीपालकों द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों को संबोधित करने के लिए विभिन्न क्षमता निर्माण पहलों और हितधारक बैठकों पर ध्यान केंद्रित किया गया है, जिसमें मधुमक्खी पराग और मधुमक्खी विष जैसी उच्च मूल्य वर्धन गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

PM-DevINE के तहत दो परियोजनाएं विभिन्न स्थानों पर शुरू की गई हैं और उनकी प्रगति संतोषजनक है। हमें उम्मीद है कि 'केला छद्म तने का उपयोग कर मूल्य वर्धित उत्पाद परियोजना' के तहत 6 संयंत्रों में से कम से कम 4 दिसंबर 2024 तक पूरे हो जाएंगे। इसी प्रकार 'उत्तर पूर्व में वैज्ञानिक जैविक कृषि को बढ़ावा देना' परियोजना लगभग 30% पूर्ण हो चुकी है और हम वर्तमान वित्तीय वर्ष के भीतर 60% कार्य की उम्मीद कर रहे हैं। वैज्ञानिक जैविक कृषि परियोजना के अंतर्गत महत्वपूर्ण विकास में 250 पहचान किए गए क्लस्टरों में किसान सक्रियता और फसल चयन, BARC द्वारा अनुमोदित मिट्टी जैविक कार्बन पहचान किट "वसुंधरा" का बड़े पैमाने पर उत्पादन शामिल है। केले के छद्म तने परियोजना के अंतर्गत, विभिन्न स्थानों पर सामान्य सुविधा केंद्र (CFC) का निर्माण किया जा रहा है, जिसमें गांव स्तर पर क्षमता निर्माण और तकनीकी समर्थन की कई पहलें शामिल हैं। हमें उम्मीद है कि दोनों परियोजनाएं इस वित्तीय वर्ष में एक उचित आकार ले लेंगी।

नेक्टर उत्तर पूर्व में 10,000 किसान उत्पादक संगठनों (FPOs) की स्थापना और प्रचार के तहत परियोजना भी लागू कर रहा है, जिसमें अरुणाचल प्रदेश के 7 जिलों के 21 ब्लॉकों में 21 एफपीओ स्थापित किए गए हैं, जिनसे अब तक लगभग 2500 लाभार्थियों को लाभ हुआ है, जिनमें मुख्य रूप से एसटी श्रेणी के लोग शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, इन एफपीओ को प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण कार्यशालाओं के माध्यम से तकनीकी समर्थन प्रदान किया जा रहा है और उनके परियोजनाओं और कार्यशील पूंजी की जरूरतों के लिए वित्तीय संस्थानों से क्रेडिट सुनिश्चित किया जा रहा है।

अशारीकंडी गांव, असम में पारंपरिक टेराकोटा और मिट्टी के बर्तन व्यवसाय की स्थिरता में सुधार के लिए सफल पायलट परियोजना के बाद, नेक्टर ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय की SEED डिवीजन से अतिरिक्त वित्तपोषण प्राप्त किया है। स्थानीय शिल्प को बढ़ावा देने के लिए एक क्राफ्ट मेला आयोजित किया गया, और इस परियोजना ने कारीगरों के लिए उत्पादकता, आर्थिक विकास और जीवन की गुणवत्ता में सुधार किया है, जिससे उनके उत्पादों को वैश्विक मांग मिल रही है।

क्टर ने उन्नत प्रौद्योगिकियों का उपयोग करते हुए विभिन्न परियोजनाओं को भी अपनाया है, जैसे कि रिमोट सेंसिंग, GIS, AI/ML, और ड्रोन सर्वेक्षण विभिन्न अनुप्रयोगों के लिए। इन परियोजनाओं में वन सर्वेक्षण और मानचित्रण, कृषि के लिए हवाई ड्रोन सर्वेक्षण, खासी मंडारिन संतरे की गुणवत्ता मूल्यांकन, और मेघालय के विभिन्न स्थानों पर चतुर्भुज सर्वेक्षण शामिल हैं; ओडिशा में महानदी कोलफील्ड्स खनन क्षेत्र के लिए हवाई ड्रोन सर्वेक्षण; कर्नाटक और केरल में शहरी योजना और अवसंरचना विकास के लिए DGPS तकनीक का उपयोग करके ग्राउंड कंट्रोल सर्वेक्षण; और भारत के 13 जिलों में फसल उपज का अनुमान लगाने के लिए पायलट अध्ययन। इन परियोजनाओं ने महत्वपूर्ण परिणाम प्राप्त किए हैं और कारीगरों, किसानों, कृषि हितधारकों, वन विभागों, स्थानीय समुदायों, और औद्योगिक संस्थाओं को लाभ पहुंचाया है।

पूरे टीम के समर्थन से, नेक्टर ने उत्तर पूर्व में विभिन्न प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किए हैं, जिसमें टेक्नो-प्रेन्योरशिप, बांस उत्पाद निर्माण, मधुमक्खीपालन, एकीकृत कृषि, भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी, ड्रोन निर्माण और PMKVY 4 के तहत विभिन्न कौशल विकास पाठ्यक्रम शामिल हैं। कार्यक्रमों ने 1,500 से अधिक व्यक्तियों को सफलतापूर्वक प्रशिक्षित किया है, जिसमें व्यावहारिक कौशल विकास, उत्पाद निर्माण, और प्रमाणन पर ध्यान केंद्रित किया गया है। राज्य सरकार विभागों, एजेंसियों और संगठनों के साथ सहयोग ने कार्यक्रमों की गुणवत्ता और प्रभावशीलता को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

नेक्टर ने उत्तर पूर्वी भारत में नवाचार, उद्यमिता और सतत विकास को सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया है, विभिन्न कार्यक्रमों, कार्यशालाओं और विस्तार परियोजनाओं के माध्यम से, जैसे कि भारत-जापान पोषक तत्व हस्तक्षेप पर संगोष्ठी, उत्तर पूर्वी स्टार्ट-अप और उद्यमियों का सम्मेलन 2024, और कई कार्यशालाएँ नवीन कृषि प्रथाओं, आपदा प्रतिक्रिया, और भाषा-संबंधित मल्टीमीडिया लैब्स पर। नेक्टर ने अशारीकांडी शिल्प मेला का आयोजन किया, एक समावेशी संगीत विद्यालय की उद्घाटन की, और मेघालय बकव्हीट रणनीति संवाद 2024 में भाग लिया। इसके अतिरिक्त, नेक्टर ने विभिन्न कार्यशालाओं और कार्यक्रमों के माध्यम से हिंदी को एक आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाने को भी बढ़ावा दिया है।

आंतरिक संसाधनों का उपयोग करके, नेक्टर ने असम के धुबरी और माजुली जिलों में बाढ़-प्रवण क्षेत्रों का मानचित्रण करने के लिए एक पायलट अध्ययन किया है, जिसमें भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी का उपयोग किया गया है। इसका उद्देश्य आपदा जोखिम को कम करना और लचीलापन निर्माण करना है। इस अध्ययन ने गांवों को उनकी संवेदनशीलता के आधार पर वर्गीकृत किया, जिसमें धुबरी और माजुली में क्रमशः 291 और 168 गांवों को अत्यधिक संवेदनशील पाया गया, और पिछले 50 वर्षों में जलाशयों की सीमाओं में हुए परिवर्तनों की पहचान की। अध्ययन ने अनुमान लगाया कि माजुली में 1.36 लाख और धुबरी में 4.18 लाख लोग उच्च संवेदनशीलता से प्रभावित हैं। निष्कर्षों को अगले बाढ़ सत्र के दौरान मान्य किया जाएगा, जिसमें समुदाय के लचीलापन को बढ़ाने, बाढ़-लचीला बुनियादी ढांचे को बढ़ावा देने, और सतत बाढ़ प्रबंधन के लिए अभिनव सुझाव प्रदान करने का लक्ष्य है।

वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान, नेक्टर ने उत्तर पूर्वी क्षेत्र (NER) में पहलों और परियोजनाओं को लागू करने के लिए विभिन्न संगठनों और संस्थानों के साथ समझौते किए। इनमें शामिल हैं:

- ICAR-नेशनल रिसर्च सेंटर फॉर बनाना; नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ रूरल डेवलपमेंट और पंचायती राज, हैदराबाद; ICAR-नेशनल ब्यूरो ऑफ प्लांट जेनेटिक रिसोर्सेज; कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय; मेघालय स्टेट रूरल लाइवलीहुड्स सोसाइटी; मेघालय किसान सशक्तिकरण आयोग; मेघालय सरकार का बायो-रिसोर्सेज डेवलपमेंट सेंटर और इंस्टीट्यूट ऑफ बायो-रिसोर्सेज एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट, इम्फाल; आरसी हॉबीटेक और अन्य के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं, जिनके तहत PM-DevINE योजना के तहत केला के झूठे तने का उपयोग, उत्तर पूर्व में वैज्ञानिक जैविक कृषि को बढ़ावा देना, PMKVY 4.0, और मधुमक्खी पालन को बढ़ावा देना जैसी परियोजनाओं का कार्यान्वयन किया जाएगा।
- अमृत विश्व विद्यापीठ और KIIT यूनिवर्सिटी जैसे शैक्षणिक संस्थानों के साथ उत्पादों के विकास और सत्यापन, शैक्षणिक सहयोग, और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के लिए समझौते किए गए हैं।

इन सभी के साथ-साथ, नेक्टर ने 27-28 मार्च 2024 को भारत सरकार और संबंधित राज्य सरकारों के हितधारकों के साथ मिलकर एक उत्तर पूर्वी स्टार्ट-अप सम्मेलन (NE Start-Up Conclave) आयोजित किया। इस सम्मेलन की सभी हितधारकों द्वारा बहुत सराहना की गई।

मुझे आपको यह बताते हुए खुशी हो रही है कि नेक्टर ने उत्तर पूर्वी क्षेत्र (NER) में प्रशासनिक विस्तार के लिए कई योजनाएँ बनाई हैं। PM-DevINE परियोजना के तहत, असम के गुवाहाटी बायो टेक पार्क में एक प्रशासनिक कार्यालय स्थापित किया गया है। परियोजना के तहत दैनिक गतिविधियों की निगरानी के लिए लगभग 40 परियोजना साथी (सभी NE राज्यों से) की भर्ती की गई है। शिलांग में नेक्टर के स्थायी परिसर के प्रस्ताव को पहले ही मंत्रालय द्वारा अनुमोदित और स्वीकृत कर दिया गया है और निर्माण कार्य CPWD को सौंपा गया है। मिजोरम, मणिपुर, सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश की सरकारों से नेक्टर के उप-कार्यालय को उनके राज्यों में खोलने के लिए अनुरोध प्राप्त हुए हैं।

अंत में, मैं विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार के प्रति अपनी हार्दिक आभार व्यक्त करना चाहता हूँ, जिन्होंने नेक्टर के दृष्टिकोण और मिशन को साकार करने में अटूट समर्थन प्रदान किया। मैं नेक्टर की गवर्निंग काउंसिल, एग्जीक्यूटिव काउंसिल, फाइनेंस कमेटी और प्रोजेक्ट असेसमेंट कमेटी (PAC) के माननीय सदस्यों का भी धन्यवाद करता हूँ, जिन्होंने नेक्टर की गतिविधियों की दिशा-निर्देश और आलोचनात्मक निगरानी की और हमेशा सर्वोत्तम सुझाव प्रदान किए। सभी NE राज्यों की सरकारों और मातृ मंत्रालय के समर्थन और शुभकामनाओं के साथ, नेक्टर की गतिविधियाँ पिछले 2-3 वर्षों में कई गुना बढ़ी हैं, और मैं सभी हितधारकों को उनके अमूल्य समर्थन और सहयोग के लिए धन्यवाद करता हूँ। मैं PM-DevINE के तहत दो परियोजनाओं के लिए हमें समर्थन देने के लिए DoNER मंत्रालय का भी हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ, और मंत्रालय पशुपालन, उत्तर पूर्वी परिषद के निरंतर समर्थन के लिए धन्यवाद करता हूँ। मेरी पूरी नेक्टर टीम के सदस्यों को प्रशंसा के पात्र है, जिन्होंने संगठन की भावना को बनाए रखने के लिए दृढ़ता से काम किया। मुझे पूरा विश्वास है कि उनके योगदान और सच्ची भागीदारी के साथ, नेक्टर उत्तर पूर्वी क्षेत्र के समग्र विकास के लिए नई तकनीकी सीमाओं को उजागर करता रहेगा। इस विश्वास के साथ, मैं आपको नेक्टर की 2023-24 वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करता हूँ।

डॉ. अरुण कुमार शर्मा

वित्तीय वर्ष 2023-24 की वार्षिक रिपोर्ट का सारांश

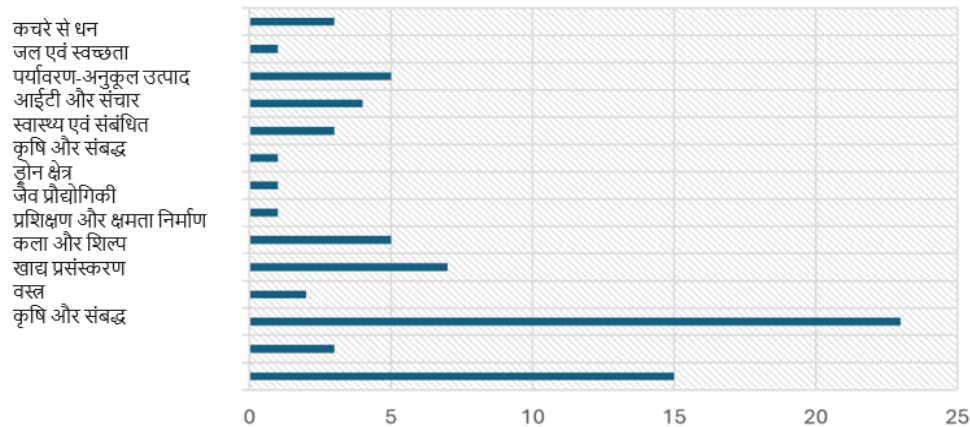
वित्तीय वर्ष 2023-2024 के दौरान, उत्तर पूर्वी प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग एवं प्रसार केंद्र (नेक्टर) ने पूर्वोत्तर क्षेत्र में सामाजिक-आर्थिक विकास और तकनीकी प्रगति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कई पहलों का नेतृत्व किया। इसमें मुख्य रूप से Toss और बांस योजनाओं, आंतरिक परियोजनाओं, और सरकार की विभिन्न योजनाओं व मंत्रालयों से बाहरी वित्त पोषित परियोजनाओं के माध्यम से विभिन्न संगठनों के साथ कई परियोजनाओं, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, और सहयोग शामिल थे। इन विभिन्न गतिविधियों को नेक्टर के तकनीकी विभागों, जैसे आजीविका विभाग, संचार विभाग, और भू-स्थानिक विभाग के माध्यम से शुरू और कार्यान्वित किया गया।

उल्लेखनीय प्रयासों में विभिन्न परियोजनाओं के सफल और चल रहे निष्पादन शामिल हैं, जैसे पूर्वोत्तर क्षेत्र में केसर की खेती पर पायलट परियोजना, जिससे सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुए, विशेष रूप से सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश में, जहाँ इस उच्च मूल्य वाली फसल के लिए क्षेत्र की उपयुक्तता सिद्ध हुई। 10,000 किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) के गठन और संवर्धन के तहत, अरुणाचल प्रदेश के 7 जिलों के 21 ब्लॉकों में कुल 21 एफपीओ स्थापित किए, जिससे स्थानीय किसान बाजार से जुड़ सके और व्यवसाय प्रबंधन की सुविधा प्राप्त होगी और शहद मिशन ने असम, सिक्किम और त्रिपुरा राज्यों को शामिल किया, जहां सभी साइटों पर लगभग 500 किसानों को व्यापक प्रशिक्षण प्रदान किया गया और मधुमक्खी बक्से वितरित किए गए। नेक्टर ने स्थानीय किसानों द्वारा हल्दी और अदरक को सुखाने के लिए विभिन्न स्थानों पर सौर डिहाइड्रेटर की स्थापना के माध्यम से स्थायी प्रथाओं को प्राथमिकता दी। इसके अतिरिक्त, पीएम-डेवाइन योजना के अंतर्गत केले के छद्म-तने जैसे कृषि उप-उत्पादों के मूल्य संवर्धन पर ध्यान केंद्रित किया गया और कृषि में नवीनतम विकास व ड्रोन प्रौद्योगिकी का लाभ उठाकर जैविक खेती को बढ़ावा दिया गया। यह क्षेत्र कृषि और बागवानी विकास के लिए एक समग्र दृष्टिकोण को दर्शाता है। इसके अतिरिक्त, नवाचार और प्रौद्योगिकी को अपनाने के लिए नेक्टर की प्रतिबद्धता स्पष्ट रूप से झलकती है, जैसे आंतरिक परियोजना निगरानी के लिए एक परियोजना प्रबंधन सूचना प्रणाली (पीएमआईएस) का विकास, मेघालय और मणिपुर में शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, कृषि और स्थानीय संगीत पर सामुदायिक रेडियो स्टेशनों की स्थापना। LiDAR का उपयोग करके मेघालय में आरक्षित वनों का मानचित्रण किया गया और व्यापक मानचित्रण अभ्यास के रूप में विभिन्न अन्य स्थानों पर ड्रोन सर्वेक्षण किए गए।

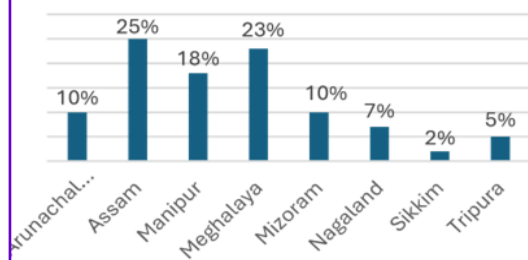
इनमें से अधिकांश परियोजनाएं मुख्य रूप से खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र और कृषि व संबद्ध क्षेत्रों में थीं, जिनके माध्यम से लगभग 4474 व्यक्तियों को विभिन्न पहलों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों और परियोजनाओं का लाभ मिला, जिनमें से अधिकांश लाभार्थी महिलाएं और अनुसूचित जनजाति समुदाय के सदस्य थे। कार्यान्वित की गई परियोजनाओं का बड़ा हिस्सा असम (25%), मेघालय (23%), और मणिपुर (18%) राज्यों में था। अपने उद्देश्यों और दृष्टिकोणों को प्राप्त करने के लिए, नेक्टर पूर्वोत्तर के सभी राज्य सरकारों के विभिन्न विभागों के साथ निकट समन्वय में काम कर रहा है। इसके अलावा, नेक्टर ने पूर्वोत्तर परिषद (एनईसी), उत्तर पूर्व क्षेत्र विकास मंत्रालय (एमडीओएनईआर), इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (एमईआईटीवाई), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर), भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम) शिलांग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) गुवाहाटी आदि जैसे विभिन्न संस्थानों में आजीविका सृजन के लिए प्रौद्योगिकी कार्यान्वयन के व्यापक एजेंडा के अंतर्गत कई प्रकार से सहयोग प्रदान किया।

वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान नेक्टर द्वारा की गई विभिन्न गतिविधियों का सारांश।

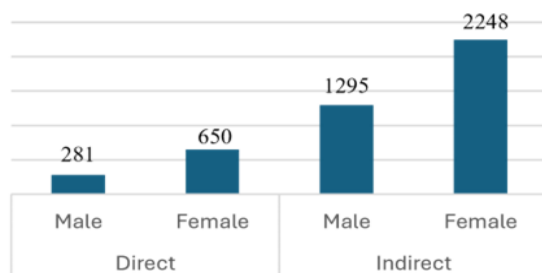
वित्त वर्ष 2023-24 के दौरान क्षेत्रवार परियोजनाओं का वितरण:



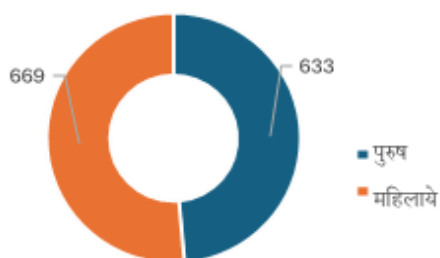
वित्त वर्ष 2023-24 में विभिन्न परियोजनाओं के लिए राज्यवार धनराशि का वितरण।



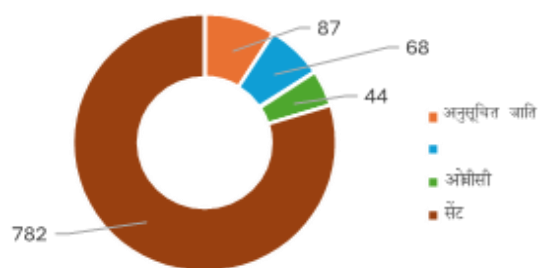
विभिन्न परियोजनाओं के तहत लाभार्थियों।



विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत कुल लाभार्थी



अन विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अंतर्गत कुल लाभार्थियों की श्रेणी



अध्याय 1: नेक्टर के बारे में संक्षिप्त जानकारी

" उत्तर पूर्वी प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग एवं प्रसार केंद्र (नेक्टर) को भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत , शिलांग, मेघालय में एक स्वायत्त संस्थान के रूप में स्थापित किया गया था। नेक्टर के निर्माण को 7 जून, 2012 को आर्थिक मामलों की कैबिनेट समिति द्वारा अनुमोदित किया गया था, और इसे आधिकारिक तौर पर 30 नवंबर, 2012 को 1860 के सोसायटी पंजीकरण अधिनियम के तहत पंजीकृत किया गया था। कैबिनेट के निर्णय के बाद, 2004 में शुरू किए राष्ट्रीय बांस अनुप्रयोग मिशन (NMBA) और 2009 में शुरू किए गए मिशन फॉर भू-स्थानिक अनुप्रयोग मिशन (MGA) को 1 जनवरी, 2014 से उनकी संपत्ति और देनदारियों के साथ नेक्टर में मिला दिया गया था।"

नेक्टर का उद्देश्य सार्वजनिक और सामाजिक लाभ के लिए प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग को बढ़ावा देना, पोषण करना और सुनिश्चित करना है। इसका मिशन व्यक्तियों, समुदायों, संस्थानों और सरकारों तक प्रौद्योगिकी की पहुंच और लाभों का विस्तार करना है, और भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में समान और समावेशी सामाजिक-आर्थिक विकास को बढ़ावा देना, केंद्र क्षेत्रीय विकास का समर्थन करने के लिए केंद्रीय वैज्ञानिक विभागों और संस्थानों से उन्नत प्रौद्योगिकियों का लाभ उठाएगा।

नेक्टर कृषि, खाद्य प्रसंस्करण, जल स्वच्छता, जैव विविधता, वाटरशेड प्रबंधन, टेलीमेडिसिन, बागवानी, बुनियादी ढांचा योजना और विकास, और अत्याधुनिक तकनीकी समाधानों के साथ टेली-स्कूलिंग के माध्यम से शिक्षा जैसे क्षेत्रों में उपयुक्त प्रौद्योगिकियों को लागू करने पर ध्यान केंद्रित करेगा। केंद्र का लक्ष्य रोजगार अवसर उत्पन्न करना और उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के समग्र विकास में योगदान करना है।

नेक्टर का मुख्यालय वर्तमान में शिलांग में स्थित है और यह भारतीय सर्वेक्षण, शिलांग के पट्टे पर लिए गए भवन से कार्य कर रहा है। इसके गुवाहाटी में दो प्रचालनरत क्षेत्रीय कार्यालय हैं। नेक्टर अगरतला, त्रिपुरा में भी कार्यरत है और बांस और बेंत विकास संस्थान (BCDI) का प्रबंधन करता है। जबकि नेक्टर के अधिकांश कर्मचारी पूरे उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में विभिन्न परियोजनाओं पर काम करते हैं, दिल्ली कार्यालय, जो आई आई टी (IIT) दिल्ली के विश्वकर्मा भवन परिसर में स्थित है, इस कार्यालय से कुछ प्रशासनिक और तकनीकी कर्मचारी कार्य करते हैं। मेघालय सरकार द्वारा आवंटित 5 एकड़ की साइट पर न्यू शिलांग टाउन एरिया के लिए एक स्थायी नेक्टर परिसर की योजना बनाई गई है, जो वर्तमान में परियोजना प्रबंधन सलाहकार की सहायता से निर्माणधीन स्तर पर है।



चित्र: नेक्टर का दृष्टिकोण और मिशन उद्देश्य

वित्तीय वर्ष 2023-24 मे नेक्टर समितियाँ

नेक्टर शासी परिषद

1.	सचिव, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार	अध्यक्ष
2.	मुख्य सचिव, अरुणाचल प्रदेश सरकार	सदस्य
3.	मुख्य सचिव, असम सरकार	सदस्य
4.	मुख्य सचिव, मणिपुर सरकार	सदस्य
5.	मुख्य सचिव, मेघालय सरकार	सदस्य
6.	मुख्य सचिव, मिजोरम सरकार	सदस्य
7.	मुख्य सचिव, नागालैंड सरकार	सदस्य
8.	मुख्य सचिव, सिक्किम सरकार	सदस्य
9.	मुख्य सचिव, त्रिपुरा सरकार	सदस्य
10.	सचिव, पूर्वोत्तर परिषद (एनईसी)	सदस्य
11.	महानिदेशक, नेक्टर	सदस्य सचिव

नेक्टर के कार्यकारी परिषद

1	महानिदेशक, नेक्टर	अध्यक्ष
2	आर्थिक सलाहकार, एनईसी	सदस्य (उत्तर पूर्वी परिषद के प्रतिनिधि)
3	मुख्य वैज्ञानिक अधिकारी, विज्ञान और प्रौद्योगिकी निदेशालय, मिजोरम सरकार	सदस्य (उत्तर पूर्वी राज्यों के प्रतिनिधि)

नेक्टर के वित्त समिति

1	महानिदेशक, नेक्टर	अध्यक्ष
2	वित्तीय सलाहकार, डीएसटी (DST), भारत सरकार	सदस्य
3	आर्थिक सलाहकार, एनईसी (NEC)	सदस्य
4	मुख्य वैज्ञानिक अधिकारी, विज्ञान और प्रौद्योगिकी निदेशालय, मिजोरम सरकार	सदस्य
5	सलाहकार (तकनीकी), नेक्टर	सदस्य
6	वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, नेक्टर	सदस्य सचिव



अध्याय 2: नेक्टर की सफलता की कहानियाँ

1. परियोजना का नाम: कृषि, ग्रामीण आजीविका और सामुदायिक विकास को बढ़ावा देने के लिए सामुदायिक रेडियो स्टेशन (CRS) की स्थापना - मावकनरूव, मेघालय और थौबल, मणिपुर

कार्यान्वयन एजेंसी: नेक्टर और ग्रामीण सशक्तिकरण और विकास संगठन (CREDO)

कार्यान्वयन स्थल: मावकनरूव गांव, मेघालय और थौबल, मणिपुर

उद्देश्य:

कृषि, ग्रामीण आजीविका, और सामुदायिक विकास को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए, नेक्टर की पहल के अंतर्गत उत्तर-पूर्व क्षेत्र में दो सामुदायिक रेडियो स्टेशनों की स्थापना की गई है। मावकनरूव, मेघालय में 89.60 FM सामुदायिक रेडियो और थौबल, मणिपुर में वाहोंग रेडियो स्टेशन जानकारी के प्रसार और उपभोग के तरीके को क्रांतिकारी ढंग से बदल रहे हैं। ये दोनों सामुदायिक रेडियो स्टेशन अपने-अपने क्षेत्रों में गहरा प्रभाव डाल रहे हैं। सूचना तक पहुंच प्रदान करके, सामाजिक और आर्थिक विकास को बढ़ावा देकर, और हाशिए पर रहने वाली सामुदायिक आवाजों को उजागर करके, इन स्टेशनों ने ग्रामीण जनसंख्या को सशक्त किया है और सामुदायिक भावना और जुड़ाव को बढ़ावा दिया है। इन स्टेशनों ने स्थानीय प्रतिभाओं के लिए भी एक मंच तैयार किया है, जिससे इन क्षेत्रों की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को प्रदर्शित किया जा रहा है।

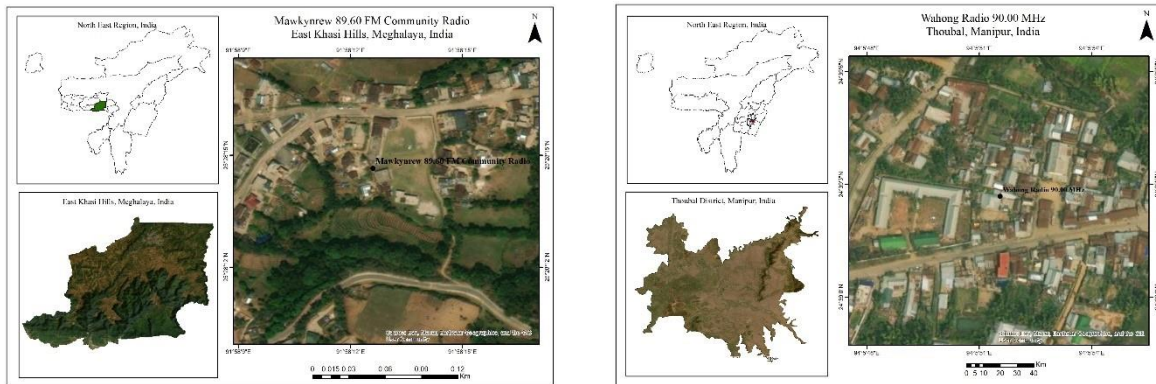


मावकनरूव सामुदायिक रेडियो, जो 89.60 MHz पर संचालित होता है, मेघालय में एक नई पहल है। यह राज्य का पहला सामुदायिक रेडियो स्टेशन है, जिसका उद्देश्य कृषि, ग्रामीण आजीविका, और सामुदायिक विकास को बढ़ावा देना है, जिससे लगभग 35,000 लोगों की आबादी वाले 100 से अधिक दूरदराज गांवों को लाभ हुआ है। स्टेशन की प्रोग्रामिंग शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, कृषि, स्थानीय लोक कला, संस्कृति, पारंपरिक ज्ञान, ग्रामीण और सामुदायिक विकास जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर केंद्रित है। यह समूहों की समस्याओं और सीमाओं को उजागर करने वाले कार्यक्रमों का प्रसारण करके वंचित समूहों की आवाज को भी प्रोत्साहित करेगा। सांस्कृतिक दृष्टिकोण और अल्पसंख्यक समूहों की रुचियों को बढ़ावा देना, और साथ ही स्वदेशी ग्रामीण लोगों की परंपरा को लोकप्रिय बनाना, साथ ही सामाजिक भागीदारी में सुधार और आत्म-रोजगार की शिक्षा और ज्ञान को बढ़ाना।

इस परियोजना का औपचारिक उद्घाटन 15 मार्च 2024 को श्री बंतेडोर लिंगदोह, विधायक-29, मावकनरूव द्वारा हुआ, जिसमें नेक्टर के अधिकारियों और गाँववासियों की उपस्थिति में यह आयोजन किया गया। यह सामुदायिक रेडियो स्टेशन एक सामान्य FM रेडियो स्टेशन की तरह है, जिसे आप 89.6 MHz पर FM बैंड पर अपने रेडियो या मोबाइल डिवाइस से सुन सकते हैं, और शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, कृषि, स्थानीय संगीत आदि पर सूचनप्रद कार्यक्रम सुन सकते हैं। यह परियोजना नेक्टर के संचार विभाग की एक विशिष्ट पहल है, जिसका नेतृत्व और मार्गदर्शन डॉ. अरुण कुमार शर्मा, महानिदेशक, नेक्टर द्वारा किया गया है। इस CRS परियोजना को नेक्टर द्वारा पूरी तरह से ₹60 लाख की राशि से वित्तपोषित किया गया है और इसे गांव डोर्बर जोंगखा द्वारा संचालित किया जाएगा, जो कृषि, ग्रामीण आजीविका और सामुदायिक विकास को बढ़ावा देने में मदद करेगा और मावकनरूव ब्लॉक और आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में 100 से अधिक दूरदराज गांवों की लगभग 35,000 लोगों की आबादी को लाभान्वित करेगा। परियोजना का उद्देश्य ग्रामीण सशक्तिकरण, सामाजिक और आर्थिक विकास है।



दूसरी ओर, वाहोंग रेडियो स्टेशन, जो 90.00 MHz पर संचालित होता है, मणिपुर के थौबल जिले के शिखोंग बाजार, नोंगपोक सेक्माई के दिल में स्थित है, जो सामुदायिक भावना और दृढ़ता का प्रतीक है। अपनी मामूली शुरुआत के बावजूद, यह स्टेशन कृषि विशेषज्ञों, स्थानीय समाचार, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और जमीनी स्तर की सक्रियता के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में विकसित हुआ है। वाहोंग रेडियो की सफलता का एक उल्लेखनीय पहलू यह है कि इसे गाँववासियों और श्रोताओं से निरंतर समर्थन प्राप्त होता है। स्टेशन की अपनी आवाजों को बढ़ावा देने और धरोहर को संरक्षित करने की प्रतिबद्धता से प्रेरित होकर, गाँववासी अक्सर रेडियो स्टेशन पर आते हैं, न केवल श्रोता के रूप में बल्कि सक्रिय योगदानकर्ता के रूप में भी। वे समुदाय के भीतर एकता और सशक्तिकरण को बढ़ावा हेतु स्टेशन की महत्वपूर्ण भूमिका पहचानते हुए नैतिक एवं उदारता का उपहार प्रदान करते हैं।



चित्र: मेघालय और मणिपुर में CRS का स्थान मानचित्र

इन सामुदायिक रेडियो स्टेशनों की सफलता सामुदायिक-प्रेरित मीडिया की शक्ति का प्रमाण है। इन्होंने साबित किया है कि समर्पण और समर्थन के साथ, सामुदायिक रेडियो सामाजिक उत्थान और ग्रामीण सशक्तिकरण के लिए एक प्रभावशाली उपकरण हो सकता है। जैसे-जैसे सामुदायिक रेडियो बढ़ता और फैलता है, जिससे क्षेत्र में विकास और सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की संभावना है, जिससे शहरी और ग्रामीण समुदायों के बीच अंतर को पाटने और एक अधिक समावेशी और समान समाज को बढ़ावा देने में सहयोग प्राप्त होगा।

2. परियोजना का नाम: दृष्टिहीनों के लिए कंप्यूटर और रोजगार योग्यता में आधारभूत पाठ्यक्रम

कार्यान्वयन एजेंसी: बेथनी सोसाइटी, शिलांग

कार्यान्वयन स्थल: पूर्वी खासी हिल्स, मेघालय

उद्देश्य:

- IT और अन्य प्रमुख विभागों में रोजगार प्राप्त करने के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम प्रदान करना।
- विभिन्न नौकरी मॉड्यूल पर ध्यान केंद्रित करके कौशल सेट प्रशिक्षण प्रदान करना।

- प्रशिक्षुओं के कौशल सेट के आधार पर विशिष्ट नौकरी प्रोफाइल में व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करना। "बदलाव बनें! तकनीक के साथ जुड़ें और कौशल प्राप्त करें!"

उपलब्धियां और परिणाम:

- इस पाठ्यक्रम की शुरुआत से पहले, प्रत्येक प्रशिक्षु ने अपनी दृष्टिहीनता के कारण समाज में कई चुनौतियों का सामना किया, और सामाजिक बहिष्करण के उदाहरण बताए।
- हालांकि, अब उन्होंने समाज में एक अंतर लाने और खुद को समन्वित करने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। उनके यात्रा की विशेषता "अभिमान - मैं सक्षम हूँ" के साथ, इस कार्यक्रम के दौरान दर्शकों के साथ साझा की गई।
- **प्रशिक्षण के दौरान**, प्रशिक्षुओं ने कंप्यूटर और रोजगार योग्यता में आधारभूत पाठ्यक्रम के तहत ओरिएंटेशन और गहन प्रशिक्षण प्राप्त किया। उनकी असाधारण यात्रा उनके दृढ़ संकल्प और प्रतिबद्धता को दर्शाती है। अब वे बुनियादी कंप्यूटर संचालन में दक्षता प्राप्त कर चुके हैं और माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस अनुप्रयोगों जैसे Word, Excel, Outlook, और PowerPoint का उपयोग करने में सक्षम हो गए हैं।
- **स्क्रीन रीडिंग सॉफ्टवेयर** जैसे JAWS और NVDA का उपयोग उन्हें डिजिटल इंटरफेस को स्वतंत्र रूप से नेविगेट करने में सक्षम बनाता है। उनके भाषा कौशल, मोखिक एवं लिखित दोनों में उल्लेखनीय सुधार हुआ है, जो उनकी प्रभावी संचार की क्षमता को बढ़ाता है।
- **अतिरिक्त जीवन कौशल प्रशिक्षण** ने उन्हें व्यक्तिगत और व्यावसायिक सफलता के लिए आवश्यक क्षमताओं से सुसज्जित किया है।
- **व्यावहारिक परिवेश में**, प्रशिक्षु सार्वजनिक पार्कों, बाजारों, बैंकों और शॉपिंग मॉल जैसे संस्थानों में फील्ड विजिट पर जाते हैं, जहां वे विभिन्न वातावरणों में कंप्यूटर कौशल के उपयोग पर व्यावहारिक जानकारी प्राप्त करते हैं।
- **कार्य छाया** में सरकारी अधिकारियों, कंपनियों और NGOs के साथ इंटरएक्शन ने उन्हें अनुभव, डायनामिक्स और कार्यों के बारे में जानकारी दी, जिससे उनका आत्मविश्वास और भी बढ़ा। उनकी यात्रा दृढ़ता, संकल्प और उल्लेखनीय प्रगति से चिह्नित है।
- **वे अब तैयार हैं** बेहतर कौशल और आत्मविश्वास के साथ कार्यबल में प्रवेश करने के लिए, अपनी विशेष चुनौतियों को पार करने और विभिन्न भूमिकाओं में सफल होने की क्षमता को प्रदर्शित करते हैं। बेथनी सोसाइटी और सक्षम भारत टीम इन व्यक्तियों को समर्थन और सशक्तिकरण देने में गर्वित हैं, और एक अधिक समावेशी भविष्य की दिशा में काम कर रही हैं।

प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष लाभार्थी: 15 दृष्टिहीन प्रशिक्षुओं (10 पुरुष और 5 महिलाएं, जो ST से संबंधित हैं) ने इस पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा किया, जिसमें बाद में पाठ्यक्रम में शामिल हुए 4 प्रशिक्षुओं की भी समीक्षा की गई।



चित्र: पाठ्यक्रम पूर्णता के उपलक्ष्य पर प्रमाणपत्रों का वितरण

3. परियोजना का नाम: भाषा और मल्टीमीडिया लैब की स्थापना

कार्यान्वयन एजेंसी: पाइनर्सला प्रेस्बिटेरियन सेकेंडरी स्कूल, पाइनर्सला

कार्यान्वयन स्थल: पाइनर्सला, पूर्वी खासी हिल्स जिला, मेघालय

उद्देश्य: "भाषा और मल्टीमीडिया लैब" परियोजना का उद्देश्य इंटरएक्टिव वाइटबोर्ड्स, डिजिटल सामग्री और ऑनलाइन सहयोग उपकरण, और नवीनतम संचार सॉफ्टवेयर के माध्यम से शिक्षा को बढ़ाना है, जो गतिशील शिक्षण विधियों, वास्तविक समय की फीडबैक, और व्यक्तिगत शिक्षण अनुभवों को बढ़ावा दे सकता है, जिससे छात्र की भागीदारी और समझ को प्रोत्साहित किया जा सके। यह लैब आधुनिक कंप्यूटिंग मशीनों, पावर बैकअप और इंटरनेट सुविधाओं से सुसज्जित है।

उपलब्धियां और परिणाम:

- इस अभिनव परियोजना को सफलतापूर्वक लागू किया गया है, जिसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों और आधुनिक प्रौद्योगिकियों की उपलब्धता के बीच के अंतर को पाटना है।
- लैब का उद्घाटन श्री प्रेस्टन टिनसोंग, उपमुख्यमंत्री, मेघालय द्वारा नेक्टर के अधिकारियों की उपस्थिति में किया गया।
- विद्यालय ने इस लैब के पाठ्यक्रम के हिस्से को अपने पाठ्यक्रम में शामिल करना शुरू कर दिया है।

प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष लाभार्थी: इस लैब से लगभग 110 छात्रों को लाभ होगा। इसके अतिरिक्त, इस लैब का उपयोग क्षेत्र में युवाओं को प्रशिक्षित करने के लिए भी किया जाएगा।



चित्र: भाषा और मल्टीमीडिया लैब

4. परियोजना का नाम: मसाला और सुगंधित पौधों की आसवन इकाई की स्थापना



कार्यान्वयन एजेंसी: मेघालय एकीकृत पर्वतीय विकास पहल (MIMDI)

कार्यान्वयन स्थल: मेघालय, री भोई

उद्देश्य:

- आजीविका और स्थाई आजीविका प्रथाओं का निर्माण करना।
- मसाला और MAP प्रजातियों के क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी हस्तक्षेप।
- ग्रामीण स्तर के उद्यमियों को तकनीकी सहायता प्रदान करके लचीली आजीविका के अवसरों को बढ़ावा देना।
- शिफ्टिंग कृषि/ बंजर भूमि को उच्च मूल्य वाली औषधीय और सुगंधित पौधों के माध्यम से नकद फसल खेती में परिवर्तित करना और निर्भरता को कम करना।

- एगो-क्लाइमेटिक उपयुक्तता के आधार पर संभावित मसाले और MAPs का प्रचार।
- किसानों की आय को दोगुना करने में योगदान देना और आश्चस्त खरीदारी के लिए विपणन नेटवर्क को मजबूत करना।
- महिलाओं और बेरोजगार युवाओं को रोजगार देना ताकि नई आर्थिक गतिविधियों के अवसर उत्पन्न हो सकें।

प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष लाभार्थी: कुल 48 व्यक्तियों (19 पुरुष और 27 महिलाएं) को SC और ST श्रेणियों को प्रातक्ष लाभ हुआ, जबकि 140 ST श्रेणी की महिलाएं अप्रत्यक्ष रूप से लाभान्वित हुईं।

5. परियोजना का नाम: कासावा स्टार्च (Manihot esculenta) से बायोडिग्रेडेबल बायोप्लास्टिक बैग का निर्माण

कार्यान्वयन एजेंसी: मैसर्स इकोस्टार्च नागालैंड

कार्यान्वयन स्थल: मोकोकचुंग, नागालैंड

उद्देश्य:

पिछले दशक से पर्यावरणीय चिंताओं, जागरूकता, और विभिन्न सरकारी और एजेंसियों द्वारा कड़े नियमों के कारण बायोप्लास्टिक्स की मांग बढ़ रही है। भारत में, बायोप्लास्टिक्स बाजार अभी शुरुआती चरण में है और वर्तमान में केवल कुछ कंपनियाँ जैसे एनविग्रीन, इकोलाइफ, प्लास्टोबैम्स, अर्थसोल इंडिया, और टूग्रीन बायोप्लास्टिक खंड में काम कर रही हैं। इनमें से अधिकांश कंपनियाँ हर साल 1000-5000 टन बायोप्लास्टिक्स का उत्पादन करती हैं, जबकि देश की वार्षिक खपत 9 मिलियन टन (CPCB) है। यह कमी मांग और आपूर्ति के समीकरण में गंभीर बाधा पैदा कर रही है।

उपलब्धियां और परिणाम:

- यूनिट ने इन बायोप्लास्टिक बैगों का उत्पादन शुरू कर दिया है, जिनकी ले जाने की क्षमता 1-5 किलोग्राम तक होती है।
- वर्तमान उत्पादन क्षमता प्रति माह लगभग 3 टन है।
- बाजार के अवसर के अनुसार, नागालैंड में 6 टन ग्राँसरी बैग और 4 टन ऑयस्टर मशरूम स्पॉन उगाने वाले बैग की मासिक मांग है।
- यह आंकड़ा केवल नागालैंड के लिए है, अन्य पड़ोसी राज्यों से भी प्रति माह 10 टन तक की मांग प्राप्त हुई है।

प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष लाभार्थी: यूनिट में काम करने के लिए 6 लोगों (3 पुरुष और 3 महिलाएं) को प्रारंभिक रोजगार प्रदान किया गया है, दैनिक आधार पर 10-15 लोगों के रोजगार की उम्मीद है, और 250 कासावा किसानों को संगठित किया गया है जिन्होंने कासावा की बुवाई शुरू कर दी है, और ये मुख्य रूप से 10 गांवों के छोटे किसान हैं।



चित्र: मोकोकचुंग, नागालैंड में स्थापित बायोप्लास्टिक इकाई

6. परियोजना का नाम: कोम्बुचा का विकास: खाद्य उद्योग और कृषि कचरे से भारत के लिए एक अप्रयुक्त भविष्य का स्वास्थ्य पेय और पायलट स्तर पर प्रदर्शन



चित्र: कटहल कोम्बुचा

कार्यान्वयन एजेंसी: मेसर्स प्रारस बायोसाइंसेज प्राइवेट लिमिटेड

कार्यान्वयन स्थल: असम, जोरहाट

उद्देश्य:

- औद्योगिक उप-उत्पाद (सोया मेलासेस/ व्हे) या कृषि उप-उत्पाद (अनानास एवं कटहल का कचरा) का उपयोग कोम्बुचा, एक स्वास्थ्य पेय, बनाने के लिए बेंच स्केल पर।
- इस बेंच स्केल अध्ययन के विशेष उद्देश्य:
 1. कोम्बुचा के लिए संस्कृतियों का चयन/ स्क्रीनिंग जो कृषि कचरे का उपयोग कर सके।
 2. कोम्बुचा तैयारी के लिए औद्योगिक कचरे की सामग्री का चयन/ स्क्रीनिंग।
 3. प्रयोगशाला स्तर पर कोम्बुचा तैयारी के लिए किण्वन स्थितियों का अनुकूलन।
 4. अंतरिम और अंतिम उत्पादों के विश्लेषण की विधियों का मानकीकरण।
 5. पायलट स्तर पर कच्चे माल और संस्कृतियों की सत्यापन और मान्यता, प्रक्रिया की आर्थिक/ व्यवहार्यता का मूल्यांकन, और स्वास्थ्य दावों की पुष्टि।
 6. प्रोटोटाइप का प्रदर्शन और परीक्षण, विपणन और प्रदर्शनों के साथ।

उपलब्धियां और परिणाम:

- संस्कृति, कच्चे माल और विकास मापदंडों के सत्यापन और सुरक्षा अध्ययन के अनुकूलन में प्रचार गतिविधियाँ
- उत्पाद 13 सितंबर 2023 को बेंगलुरु में ब्रूज और स्पिरिट्स एक्सपो में लॉन्च किया गया।
- पोषण विश्लेषण ने दिखाया कि कटहल और अनानास कोम्बुचा में अच्छे पोषक तत्वों की मात्रा है।

प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष लाभार्थी: कुल 40 महिलाएँ, जो ST श्रेणी से संबंधित हैं, इस पहल से लाभान्वित हुईं।

7. परियोजना का नाम: नागालैंड में ग्रामीण किसानों के आर्थिक विकास पर पायलट प्रोजेक्ट: शिटेक मशरूम की खेती

कार्यान्वयन एजेंसी: ग्रामीण कृषि अनुसंधान संघ (RAFRA), नागालैंड

कार्यान्वयन स्थल: कोहिमा और जुन्हेबोटो जिला, नागालैंड

उपलब्धियां और परिणाम:

- स परियोजना के माध्यम से अनुसूचित जनजाति (ST) समुदाय की 20 महिला किसानों को RAFRA के पहल और नेक्टर के सहयोग से लाभान्वित किया गया है। लाभार्थियों को शिटेक मशरूम की खेती के विभिन्न पहलुओं पर सफलतापूर्वक प्रशिक्षण

दिया गया, साथ ही उन्हें शुरुआती मशरूम किट और कुल 4000 लकड़ी के लट्टे वितरित किए गए ताकि वे शिटाके मशरूम की खेती कर सकें।

- उनके व्यक्तिगत स्थानों में मशरूम की खेती की गई। उगाए गए शिटाके मशरूम को ताजे और प्रसंस्कृत रूप में सूखाकर खुले बाजारों में बेचा गया, जिससे उन्हें अधिक मार्जिन मिला और लाभार्थियों को अतिरिक्त आय प्राप्त हुई। इस पहल को अप्रैल 2023 में नागालैंड में आयोजित G20 बैठक के दौरान भी सफलतापूर्वक प्रदर्शित किया गया, जिसमें विभिन्न उत्पादों को आधिकारिक प्रतिनिधिमंडल के समक्ष प्रस्तुत किया गया।

प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष लाभार्थी: कुल 20 महिलाएँ, जो अनुसूचित जनजाति (ST) श्रेणी से संबंधित हैं, इस पहल से लाभान्वित हुईं।



चित्र: लॉग में उगाए गए शिटाके मशरूम और जी20 बैठक के दौरान उत्पादों का प्रदर्शन।

8. परियोजना का नाम: चाय निर्माण इकाई की स्थापना

क्रियान्वयन एजेंसी: श्री इगाथो येपथो, सुनिका एंटरप्राइज, नागालैंड,

क्रियान्वयन स्थल (जिला और राज्य): निकेखु गाँव, निउलैंड टाउन, नागालैंड

उद्देश्य:

- हरी चाय का उत्पादन क्षमता 70 किलोग्राम प्रति माह से बढ़ाकर 320 किलोग्राम प्रति माह करना।
- उत्पादित चाय की गुणवत्ता सुनिश्चित करना और खाद्य सुरक्षा और मानकीकरण का पालन करना।
- स्थानीय चाय उत्पादकों को उनके उत्पाद के लिए उचित मूल्य दिलाना।
- स्थानीय हर्ब्स और मसालों का उपयोग करके मिश्रित चाय का उत्पादन करना।

उपलब्धियाँ और परिणाम:

यह परियोजना, जिसका कार्यान्वयन स्थल नायलैंड-दीमापुर रोड, नागालैंड में है, ग्रीन टी तथा जड़ी-बूटियों और मसालों के मिश्रण वाली विभिन्न प्रकार की फ्लेवर्ड चाय के उत्पादन से संबंधित है, जिससे वर्तमान में इकाई में कम से कम 10 लोगों को सीधे रोजगार मिलेगा। इन किस्मों में शुद्ध ग्रीन टी, मसालेदार गुलाब चाय, डिटॉक्स हर्बल चाय, ग्रीन टी पान, ग्रीन टी ब्लूबेरी, ग्रीन टी एप्पल, रोजमेरी हर्बल चाय, ग्रीन टी रास्पबेरी, ग्रीन टी रास्पबेरी, ब्लू पी मिंट आदि शामिल हैं।

प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष लाभार्थी: कुल 25 व्यक्ति, अनुसूचित जनजाति (ST) श्रेणी से संबंधित, इस पहल से लाभान्वित हुए हैं।



चित्र: विभिन्न प्रकार की पैक की गई चाय उत्पादों की किस्मों

9. परियोजना का नाम: बागवानी और औषधीय पौधों के उत्पादों के लिए प्री-प्रोसेसिंग इकाइयों की स्थापना

कार्यान्वयन एजेंसी: डिबांग फार्मर्स प्रोड्यूसर कोऑपरेटिव सोसाइटी लिमिटेड

कार्यान्वयन स्थल: अपेशा, अनिनी, डिबांग घाटी, अरुणाचल प्रदेश

उद्देश्य:

- सामान्य मूल्य संवर्धन और प्रसंस्करण केंद्र की स्थापना करना जो गुणवत्ता में सुधार और मौजूदा बाजार आधार को विस्तारित करेगा।
- किसानों के उद्यमिता कौशल को सुधारना और उन्हें संभावित और जीवंत उत्पादक बनाना।
- बाहरी हितधारक के साथ अग्रणी और पिछड़े लिंक स्थापित करना।
- क्लस्टर गृहस्थियों की समग्र सामाजिक-आर्थिक स्थिति को बढ़ाना।

- किसानों के कौशल को उन्नत करना ताकि वे प्रमुख खुदरा श्रृंखलाओं, निर्यातकों और बदलती ग्राहक प्राथमिकताओं के साथ मेल खा सकें।

उपलब्धियाँ और परिणाम:

यह इकाई, जो नेक्टर द्वारा 25 लाख रुपये की अनुदान राशि से समर्थित है, वर्तमान में पूरी तरह से क्रियाशील है और कीवी तथा अन्य औषधीय पौधों के प्रसंस्करण में लगी हुई है। इस इकाई ने मौसम में उपलब्ध कीवी से कीवी जैम, स्कवैश, सूखे कीवी जैसे उत्पाद तैयार किए हैं, साथ ही वहां उपलब्ध औषधीय जड़ी-बूटियों से भी कई अन्य उत्पाद बनाए हैं। इनमें जल कूट (Water Dropwort) के पत्तों का पाउडर और *Oenanthe Javanica* शामिल हैं, जो पीलिया, उच्च रक्तचाप, पेट दर्द और हेपेटाइटिस जैसी बीमारियों के इलाज में सहायक होते हैं। इसके अलावा, थाम्बाई पत्तियों का पाउडर, जो रोगाणुरोधी और कवकनाशी गुणों वाला होता है, ऑक्सालिस कॉमिकुलाटा (*Oxalis comiculata*) का सूखा पाउडर, जिसे आहार संबंधी खाद्य पदार्थों के रूप में उपयोग किया जा सकता है, और सेंटैला एशियाटिका (*Centella Asiatica*) का सूखा पाउडर, जो घावों को भरने और त्वचा रोगों का इलाज करने में मदद करता है, जैसे उत्पाद भी शामिल हैं। यह परियोजना सीधे तौर पर फैक्ट्री में 10-15 लोगों को रोजगार प्रदान करती है और युवाओं व महिलाओं को गैर-काष्ठ वन उत्पादों और बागवानी उत्पादों के निष्कर्षण, प्रसंस्करण और विपणन के लिए क्षमता निर्माण पर जोर देती है।

प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष लाभार्थी: कुल 111 व्यक्ति, अनुसूचित जनजाति (ST) श्रेणी से संबंधित, इस पहल से लाभान्वित हुए हैं।



10. परियोजना का नाम: असम की विरासत चावल आधारित शराब "ज़ाज पानी" का वाणिज्यिक उत्पादन संयंत्र की स्थापना

कार्यान्वयन एजेंसी: मेसर्स नॉर्थ ईस्ट एग्रो प्रोडक्ट्स एंड सर्विसेज

कार्यान्वयन स्थल: जोरहाट, असम

उद्देश्य:

- "ज़ाज पानी" चावल आधारित शराब की बेहतर तैयार विधि स्थापित करना।
- पेय की स्पष्टता और स्थिरता में सुधार।
- मानक मात्रा की बोतलों में स्वचालित मशीनों द्वारा उचित बोतलबंदीकरण और पैकिंग।
- पूरी प्रक्रिया को एक हरित वातावरण में करना बिना किसी प्रमुख प्रदूषकों के।

उपलब्धियाँ और परिणाम:

- जोरहाट, असम में ज़ाज पानी का वाणिज्यिक उत्पादन संयंत्र स्थापित किया गया।
- 750 मिलीलीटर की बोतलों में पैक किए गए ज़ाज पानी का वितरण।
- असम के जिलों और अन्य पूर्वोत्तरी राज्यों में ज़ाज का वितरण।
- परियोजना ने सितंबर 2022 से वाणिज्यिक उत्पादन शुरू किया और वैश्विक स्तर पर सराहना प्राप्त की।
- यह परियोजना सितंबर 2022 से अपना व्यावसायिक उत्पादन शुरू करने में सक्षम थी और तब से इसे दुनिया भर से प्रशंसा मिल रही है। यह राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में अपनी जगह बनाने में सक्षम है।

प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष लाभार्थी: कुल 25 व्यक्ति विभिन्न श्रेणियों से लाभान्वित हुए, जिसमें अनुसूचित जनजाति (ST) (8), अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC) (23), और सामान्य (11) शामिल हैं। 80 से अधिक लोग पास के गांवों से कच्चे माल की आपूर्ति के माध्यम से अप्रत्यक्ष लाभान्वित हुए हैं।





11. परियोजना का नाम: असम में मशरूम की खेती के माध्यम से पोषण और स्थायी आजीविका

कार्यान्वयन एजेंसी: मेसर्स मशरूम डेवलपमेंट फाउंडेशन

कार्यान्वयन स्थल: डिमोरिया ब्लॉक, कामरूप, असम

उद्देश्य:

- यह परियोजना सामाजिक और आर्थिक स्तर पर मशरूम की खेती करनेवालों किसानों के जीवन को बेहतर बनाने का प्रयास करती है। परियोजना का संचालन छोटे और सीमांत किसानों के लिए समाधान प्रदान करने और पूरे देश में पोषणयुक्त खाद्य सुरक्षा को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखता है। छोटे और सीमांत किसानों के लिए समाधान प्रदान करना और पूरे देश में पोषण सुरक्षा को बढ़ावा देना।
- 100 सदस्यों के साथ एक स्थायी मॉडल का डिजाइन और कार्यान्वयन करना।
- एक सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण का आयोजन करें ताकि सबसे उपयुक्त व्यक्ति का पता लगाया जा सके जो एक मशरूम डेमोंस्ट्रेशन यूनिट की स्थापना और प्रबंधन कर सके, जिससे सतत आजीविका सृजन हो सके। इसके बाद, इसके चारों ओर कार्यक्रम के कार्यान्वयन की योजना बनाएं।
- समुदाय के लिए मशरूम खेती पर एक प्रमाण स्थापित करने के उद्देश्य से, खेत में मशरूम डेमोंस्ट्रेशन यूनिट्स (MDUs) स्थापित करें और प्रतिभागियों के लिए मशरूम उद्योग की सतत वृद्धि के लिए प्रभावी समर्थन प्रदान करें।

उपलब्धियाँ और परिणाम:

परियोजना के अंतर्गत निम्नलिखित गतिविधियाँ पूरी की गई हैं: -

- 20 संवेदनशीलता कार्यक्रम,
- 750 घरेलू सर्वेक्षण,
- 20 गांवों में कार्यक्रम आयोजित किए गए।
- 100 घरों/व्यक्तियों को लाभ हुआ, जिसमें 470 लोग अप्रत्यक्ष लाभार्थी हैं।
- 100 महिलाओं को कम लागत में मशरूम उगाने के घर और किट प्रदान की गई।
- प्रशिक्षण: 100 प्रतिभागियों में से प्रत्येक को निम्नलिखित विषयों पर प्रशिक्षित किया गया- मशरूम उत्पादन प्रक्रिया, रोग और कीट प्रबंधन, कटाई के बाद प्रबंधन, मूल्य वर्धित उत्पाद, व्यवसाय योजना विकास, मूल्य श्रृंखला विकास, 100 प्रतिभागियों के बीच 4 क्षेत्र स्तरीय संघ (ALF) का गठन, विपणन और बैंक खाता खोलना: 4 संख्या (प्रत्येक AL में 25 प्रतिभागी)
- परियोजना के कार्यान्वयन के दौरान प्रति प्रतिभागी द्वारा औसतन आय: ₹18,522/-; कुल राजस्व: ₹18,52,200/-। मशरूम का कुल उत्पादन: 12,336 किलोग्राम (जनवरी - मार्च में, 7,744 किलोग्राम पीक सीजन में, अप्रैल - जून में 4,592 किलोग्राम बिना सीजन में)।



12. परियोजना का नाम: असम में मशरूम स्पॉन उत्पादन इकाई की स्थापना

कार्यान्वयन एजेंसी: मैसर्स डायमंड मशरूम फर्म

कार्यान्वयन स्थल: खगपुर गांव, बोंगाईगांव, असम

उपलब्धियाँ और परिणाम:

- बोंगाई गाँव और आसपास के जिलों के लिए गुणवत्ता वाले मशरूम स्पॉन का उत्पादन।

- एक स्पॉन उत्पादन प्रयोगशाला के साथ सभी आवश्यक आधुनिक मशीनरी/उपकरण।
- परियोजना की शुरुआत नवंबर 2023 में की गई।
- यूनिट वर्तमान में प्रति माह 800 किलोग्राम स्पॉन का उत्पादन कर रही है।
- प्रमोटर ने प्रयोगशाला इकाई में 2 लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार प्रदान किया है।
- नजदीकी गांवों से 150 से अधिक लोग अप्रत्यक्ष रूप से लाभान्वित हुए हैं, जिन्हें प्रमोटर द्वारा राज्य और केंद्रीय सरकारी एजेंसियों के सहयोग से प्रदान किए गए व्यावहारिक प्रशिक्षण की मदद मिली है।

प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष लाभार्थी: इस पहल के माध्यम से विभिन्न श्रेणियों जैसे अनुसूचित जन जाति (6), अन्य पिछड़ा वर्ग (131) और सामान्य (4) से संबंधित कुल 143 व्यक्ति लाभान्वित हुए, जिनमें पुरुष और महिलाएं शामिल हैं।



अध्याय 3: बाह्य वित्तपोषित परियोजनाएँ

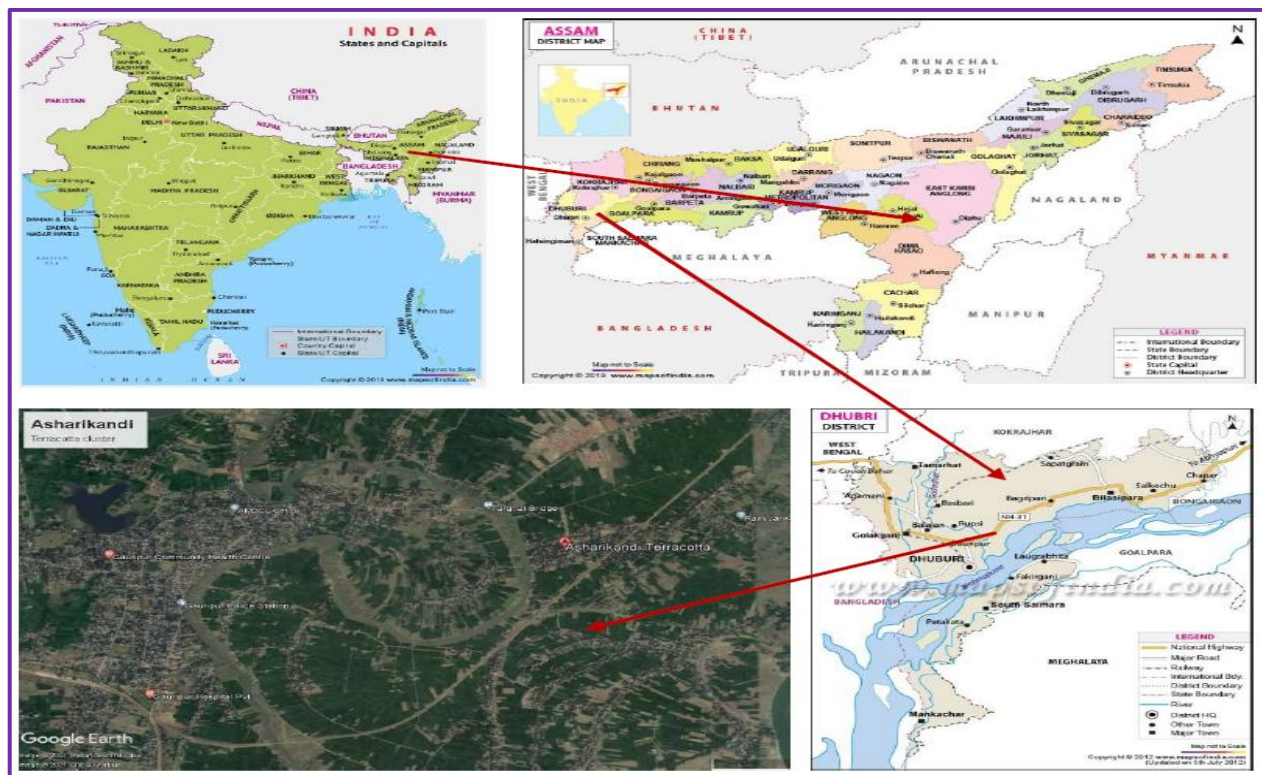
आशारीकंडी गांव में पारंपरिक टेराकोटा और मिट्टी के बर्तन व्यवसाय की स्थिरता में अनुसूचित जाति उप-योजना, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार की योजना के अन्तर्गत सुधार

गदाधर नदी का तट वह स्थान है जहाँ पारंपरिक टेराकोटा और मिट्टी के बर्तनों का सबसे बड़ा केंद्र फल-फूल रहा है। इस स्थल को आशारीकंडी के नाम से जाना जाता है, जो असम के धुबरी जिले में डेबिटोला विकास खंड के अंतर्गत आता है। आशारीकंडी अपनी विशिष्ट टेराकोटा शैली के लिए प्रसिद्ध है, जिसे समय के साथ बनाए रखा गया है। इसकी प्रसिद्धि सदियों पुरानी टेराकोटा और मिट्टी के बर्तन बनाने की तकनीक से उत्पन्न होती है। इस शिल्प का सार 'हिरामाटी' नामक मिट्टी में है। गांव के समृद्ध इतिहास और नदी किनारे मिट्टी की प्रचुरता के बावजूद, आशारीकंडी शैली की टेराकोटा कला तेजी से लुप्त हो रही है। इसका मुख्य कारण पारंपरिक मिट्टी के बर्तन बनाने की प्रक्रिया का श्रमसाध्य और स्वास्थ्य के लिए जोखिम भरा होना है, जिसे अपर्याप्त मुआवजे ने और भी बदतर बना दिया है। पारंपरिक मिट्टी प्रसंस्करण की कठिनाई और खुले तरीके से जलाने की विधियों के प्रतिकूल प्रभाव ने नई पीढ़ी को इस काम से दूर कर दिया है। जलाने की प्रक्रिया में हानिकारक पदार्थ निकलते हैं, जिससे युवा इस प्राचीन परंपरा को अपनाने से हिचकिचाते हैं और अधिक लाभदायक विकल्पों की ओर बढ़ रहे हैं।

इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए, "आशारीकंडी में पारंपरिक टेराकोटा और मिट्टी के बर्तन व्यवसाय की स्थिरता में सुधार" शीर्षक वाली एक पायलट परियोजना की शुरुआत नेक्टर द्वारा विकास वैकल्पिक समूह (DAG) और नॉर्थ-ईस्ट क्राफ्ट और ग्रामीण विकास संगठन (NECARD), धुबरी, असम के एक एनजीओ के सहयोग से की गई। इस परियोजना का उद्देश्य पारंपरिक शिल्प को आधुनिक बनाना और उसका सहायता करना था। कई तकनीकी हस्तक्षेपों को पेश किया गया:

1. मिट्टी की कठिन तैयारी प्रक्रिया को डी-एयरिंग पग मिल का उपयोग करके सरल बनाया गया, जिससे समय को दिनों से घटाकर कुछ घंटों में कर दिया गया।
2. पारंपरिक लकड़ी से जलने वाले भट्टी की प्रक्रिया का समय 72 घंटे से घटाकर 24 घंटे कर दिया गया, जिसमें अस्वीकृति दर 1% से कम रही, जिससे उत्पाद की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार हुआ।
3. जिगर जॉली और सांचे जैसी नई तकनीकों से कुल्हड़ उत्पादन में तेजी आई, जिससे उत्पादकता में वृद्धि हुई।
4. कुल उत्पादन दक्षता लगभग आठ गुना बढ़ गई, साथ ही उत्पाद की गुणवत्ता में सुधार, कारीगरों के स्वास्थ्य में सुधार और श्रम की कठोरता में कमी आई।

- मिट्टी के खर्चों में कमी आई, जिससे लागत की बचत में योगदान मिला। उन्नत तकनीकों के कारण जलाने की प्रक्रिया पूरे वर्ष चलाई गई, जिससे चाय के कपों के उत्पादन में वृद्धि हुई।



चित्र: असम में आशारीकंडी टेराकोटा क्लस्टर का स्थान

गांव में एक सामुदायिक सुविधा केंद्र (CFC) की स्थापना की गई, जहां कारीगरों के उपयोग के लिए नई मशीनरी उपलब्ध कराई गई। इस पायलट परियोजना की सफलता ने अधिक ग्रामीणवासियों, विशेष रूप से युवाओं, को नए तरीकों को अपनाने और इस शिल्प में अपनी रुचि को पुनर्जीवित करने के लिए प्रेरित किया।

इस प्रारंभिक सफलता को आगे बढ़ाते हुए, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार की SEED प्रभाग से "आशारीकंडी में पारंपरिक टेराकोटा और मिट्टी के बर्तन व्यवसाय की स्थिरता में सुधार" परियोजना के लिए नेक्टर को दो वर्षों की अवधि के लिए 2.81 करोड़ रुपये का अतिरिक्त बजट प्रदान किया गया। निम्नलिखित गतिविधियाँ अपनाई गईं:

सामुदायिक सुविधा केंद्र (सीएफसी) और मशीनरी:

- तीन (3) सामुदायिक सुविधा केंद्र (सीएफसी) आधुनिक मशीनरी से सुसज्जित किए गए, ताकि श्रम-प्रधान कार्य को मशीनों से बदला जा सके।

2. डी-एयरिंग पग मिल, लकड़ी से चलने वाली भट्टी, हाइड्रोलिक प्रेस टाइल बनाने की मशीन, डिसइंटीग्रेटर, यू-शाफ्ट मिक्सर जैसी अनुकूलित मशीनरी को पेश किया गया, जिससे मिट्टी के बर्तन बनाने की तकनीकों में सुधार हुआ।
3. कुम्हारों की स्वास्थ्य और पर्यावरण की दृष्टि से बेहतर परिणामों के लिए गलत मुद्राओं और हानिकारक जलाने के तरीकों को पग मिल और भट्टियों से बदल दिया गया।



चित्र: सामुदायिक सुविधा केंद्र, ओंकारेश्वर एसएचजी, टेराकोटा सोसायटी और शांति एसएचजीसीएफसी



चित्र: सामुदायिक सुविधा केंद्र (सीएफसी) पर डी-एयरिंग पगमिल और लकड़ी से चलने वाले भट्टे की स्थापना और संचालन

2. कौशल विकास: TARA- प्रौद्योगिकी और ग्रामीण उन्नति (TARA), जो विकास वैकल्पिक समूह का हिस्सा है और नेक्टर का तकनीकी साझेदार है, द्वारा बुनियादी और उन्नत प्रशिक्षण प्रदान किया गया, जिससे शिल्पकारों को आधुनिक मशीनरी के अनुकूल बनाने में सहायता मिली। अशारीकंडी में 59 लाभार्थियों को मोटराइज्ड पगमिल, लकड़ी से चलने वाले भट्टे और जिगर जॉली के संचालन, प्रक्रिया

और गुणवत्ता नियंत्रण पर प्रशिक्षित किया गया। CGCRI, खुर्जा में 10 लाभार्थियों को सिरेमिक प्रोसेसिंग, स्लिप कास्टिंग, प्लास्टर मोल्ड्स बनाना, भट्टों में रिडक्शन फायरिंग और विशेष उत्पाद निर्माण आदि विषयों पर प्रशिक्षित किया गया।



चित्र: CFC और CGRI खुर्जा में TARA द्वारा प्रदान किया गया प्रशिक्षण

3. विपणन:

1. अशारीकंडी मिट्टी के बर्तन उत्पादों की कैटलॉग का निर्माण।
2. Market Mirchi के माध्यम से ई-मार्केटिंग प्रशिक्षण की सुविधा, जिससे शिल्पकार ऑनलाइन बिक्री कर सकें।
3. प्रदर्शन के लिए सांस्कृतिक प्रदर्शनी में भागीदारी।
4. बाजार संबंधों का विकास, जिसमें असम राज्य कार्यालयों में कुल्हड़ों का वितरण शामिल है।
5. आशारीकंडी में शिल्प को बढ़ावा देने के लिए एक शिल्प मेला आयोजित किया गया।
6. बाजार की मांग के आधार पर उत्पाद लाइनों का विस्तार

4. मिट्टी परीक्षण: अशारीकंडी से मिट्टी के नमूनों की तकनीकी जांच, ताकि बर्तन बनाने के लिए उपयुक्तता निर्धारित की जा सके।

5. इको-टूरिज्म और शैक्षिक भ्रमण:

1. अशारीकंडी को एक परिस्थितिकी पर्यटन इको-टूरिज्म केंद्र के रूप में विकसित करने की संभावनाएँ।
2. पर्यटकों के लिए गाइडेड टूर, ताकि वे पारंपरिक शिल्पकला का अनुभव कर सकें और शिल्पकारों के साथ बातचीत कर सकें।
3. छात्रों के लिए शिल्प मेला, जिसमें वे मिट्टी के बर्तन बनाने की कला सीख सकें और इसमें भाग ले सकें।

6. शिल्प मेला:

अशारीकंडी में पारंपरिक टेराकोटा और बर्तन व्यवसाय की स्थिरता में सुधार" परियोजना प्रस्ताव के अन्तर्गत, जिसे SEED द्वारा अनुमोदित किया गया है, लाभार्थियों की भागीदारी के लिए (राज्य और केंद्रीय स्तर दोनों पर) विभिन्न विपणन कार्यक्रमों, हस्तशिल्प, खादी और शिल्प मेलों के आयोजन की व्यवस्था की गई है। इस संदर्भ में, नेक्टर ने 2 नवंबर 2023 को अशारीकंडी गांव, धुबरी में एक शिल्प मेला आयोजित किया। इस आयोजन ने बदलते हुए टेराकोटा और बर्तन व्यवसाय को प्रदर्शित किया और पारंपरिक शिल्प तकनीकी एकीकरण के सकारात्मक प्रभाव को प्रदर्शित किया। इस आयोजन ने स्थानीय समुदाय को अपनी पारंपरिक जानकारी साझा करने का अवसर प्रदान किया, जो उनके सांस्कृतिक प्रथाओं के साथ जुड़ी हुई है, जिसमें 11 स्वयं सहायता समूह और धुबरी जिले के 12 स्कूलों से 46 छात्र शामिल हुए।



7. विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा समीक्षा बैठक:

2 नवंबर 2023 को, SEED विभाग, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग की परियोजना निगरानी समिति (PMC) ने अशारीकंडी गांव, धुबरी, असम का दौरा किया। इस समिति में शामिल थे: (i) प्रोफेसर एन.सी. तालुकदार, उपकुलपति, असम डाउनटाउन यूनिवर्सिटी; (ii) डॉ. पी.एल.एन. राजू, असम सरकार के विशेष सचिव, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और जलवायु परिवर्तन विभाग/पूर्व निदेशक NESAC DOS; (iii) डॉ. राजनी रावत, वैज्ञानिक-डी, SEED-DST। समिति ने नेक्टर द्वारा लागू "अशारीकंडी में पारंपरिक टेराकोटा और बर्तन व्यवसाय की स्थिरता में सुधार" परियोजना का आकलन किया। PMC ने नई स्थापित मशीनरी के कारण दक्षता और उत्पाद की समानता में महत्वपूर्ण सुधारों को देखा और सिफारिशें प्रदान की गईं और PMC ने परियोजना को अतिरिक्त उपायों के साथ अनुमोदित किया ताकि परियोजना के परिणामों में और सुधार किया जा सके।





8. मशीनरी के एकीकरण से टेराकोटा समुदाय को अभूतपूर्व लाभ प्राप्त हुआ, जिससे उत्पादकता में वृद्धि हुई और आर्थिक विकास हुआ। इस सफलता की कहानी ने पड़ोसी गांवों को इन उन्न विधियों को अपनाने के लिए प्रेरित किया है। शिल्पकारों की जीवन गुणवत्ता में सुधार और उनके उत्पादों की वैश्विक मांग टेराकोटा और बर्तन की निरंतर महत्वता को प्रदर्शित करती है।



चित्र: अशारीकंडी शिल्प मेले में प्रदर्शित उत्पाद

2. पीएम डिवाइन परियोजना: पूर्वोत्तर में केले के छद्म तने का उपयोग करके मूल्यवर्धित उत्पादों के लिए एक मूल्य श्रृंखला स्थापित करना समीक्षा:

पीएम-डीवाइन (प्रधानमंत्री विकास पहल पूर्वोत्तर) पहल के अन्तर्गत , नेक्टर को पूर्वोत्तर में केले के छद्म तने का उपयोग करके मूल्यवर्धित उत्पादों के लिए एक मूल्य श्रृंखला स्थापित करने के लिए एक परियोजना प्रदान की गई है, जिसका कुल बजट 67 करोड़ रुपये है। यह परियोजना दो चरणों में विभिन्न स्थानों पर लागू की जाएगी। इस महत्वाकांक्षी परियोजना का लक्ष्य केले के छद्म तनों की अनछुई संभावनाओं का दोहन करना है ताकि मूल्यवान उत्पाद उत्पन्न किए जा सकें, और एक मजबूत मूल्य श्रृंखला तैयार करना है जो कृषि उपोत्पादों को मूल्य प्रदान करता है और स्थानीय अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाता है। परियोजना के प्राथमिक उद्देश्यों में विभिन्न स्थानों पर सामान्य सुविधा केंद्र (CFCs) की स्थापना, स्थानीय उद्यमियों और किसानों को तकनीकी ज्ञान, प्रशिक्षण और सहायता प्रदान करना शामिल है।

परियोजना के विभिन्न स्थानों में शामिल हैं:

- चरण I में 6 क्षेत्र (जिले): ईस्ट सियांग (अरुणाचल प्रदेश); बोको (असम); री-भोई (मेघालय); Serchhip (मिजोरम); चुमौकेदिमा (नागालैंड) और अगरतला(त्रिपुरा)
- चरण II में 6 क्षेत्र (जिले): कोकराझार, कामरूप और नलबाड़ी (असम); चुराचांदपुर (मणिपुर); वोखा (नागालैंड); खोवाई (त्रिपुरा)

उद्देश्य:

परियोजना का उद्देश्य उत्तर पूर्व क्षेत्र के 12 स्थानों पर सामान्य सुविधा केंद्र (CFCs) स्थापित करना है ताकि केले के छद्म तनों का उत्पादन और प्रसंस्करण सहायता प्राप्त हो सके। उद्देश्यों में शामिल हैं: गैर-बुने हुए कपड़ों और हस्तशिल्प के लिए फाइबर निकालना, गूदा से जैविक तरल पोषक तत्व विकसित करना, केंद्रीय कोर से खाद्य पदार्थों का उत्पादन करना, फाइबर से विभिन्न प्रकार के कागज का निर्माण करना, यह पहल ग्रामीण रोजगार सृजन, विभिन्न उद्योगों को पर्यावरण-मित्र कच्चे माल प्रदान करने, विभिन्न केले के तने के उपोत्पादों की बिक्री के माध्यम से किसानों की आय बढ़ाने, और क्षेत्र की प्राकृतिक क्षमताओं का उपयोग करके आर्थिक अवसर उत्पन्न करने का प्रयास करती है।

मुख्य विकास:

हाल के महीनों में, उत्तर-पूर्वी भारत के विभिन्न क्षेत्रों में परियोजनाओं के विकास और कार्यान्वयन में कई महत्वपूर्ण मील के पत्थर प्राप्त हुए हैं। इनमें से प्रमुख उपलब्धियों में विभिन्न स्थानों पर सामान्य सुविधा केंद्र (CFCs) के निर्माण कार्य की शुरुआत शामिल है, जिसमें असम के बोको में जवाहरलाल नेहरू कॉलेज और मिजोरम के सरछिप और त्रिपुरा के उत्तर देबेंद्रनगर में CFCs के लिए भूमि और प्रारंभिक गतिविधियों की अंतिमता शामिल है। इसके अतिरिक्त, अरुणाचल प्रदेश के लेकू गांव और नागालैंड के कुकिडोलोंग गांव में भविष्य के CFCs के लिए आधारशिला रखी गई है, कार्य आदेश जारी किए गए हैं और ब्लूप्रिंट को अंतिम रूप दिया गया है। परियोजना डिजाइन के साथ संरेखण सुनिश्चित करने के लिए कई स्थानों पर स्थल मूल्यांकन और निरीक्षण किए गए हैं, जो परियोजना प्रबंधन और कार्यान्वयन के प्रति एक कठोर दृष्टिकोण को दर्शाते हैं।

संरचनात्मक विकास के साथ-साथ, क्षमता निर्माण और तकनीकी सहायता के लिए कई पहलों लक्ष्य तक पहुंचना इसमें ग्रामीण स्तर पर उन्मुखीकरण कार्यक्रम, कार्यशालाएँ और प्रशिक्षण सत्र शामिल हैं, जैसे कि अमजोंग किसानों को केले के छद्म तने परियोजना की परिचय और मुंबई में भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (BARC) में जैविक कार्बन पहचान प्रशिक्षण। शैक्षणिक और अनुसंधान संस्थानों के साथ सहयोग, जिसमें नवसारी कृषि विश्वविद्यालय के साथ समझौतों और NIRD&PR, हैदराबाद से तकनीकी सहायता शामिल है, परियोजनाओं को और मजबूत करता है। विशेषज्ञ समूह का गठन और प्रस्तावित CFC स्थलों का बुनियादी सर्वेक्षण, योजनाबद्ध और मूल्यांकन के प्रति प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है, जो उत्तर-पूर्व में जीवनयापन को बढ़ाने के लिए इन पहलों की सफल कार्यान्वयन और स्थिरता को सुनिश्चित करता है।



चित्र: परियोजना कार्यान्वयन के लिए गांव स्तर पर उन्मुखीकरण



चित्र: प्रोजेक्ट डायरेक्टर DRDA और नोडल अधिकारी जिला मिशन प्रबंधन इकाई, MSRLS, Ri-Bhoi जिला, मेघालय के साथ बैठक और HPDCAPL टीम के साथ पूर्व सियांग जिला, अरुणाचल प्रदेश का स्थल दौरा

चित्र: नेक्टर विशेषज्ञों की टीम का NIRD & PR, हैदराबाद का दौरा



चित्र: विशेषज्ञों की नेक्टर टीम ने NIRD और PR, हैदराबाद का दौरा किया



चित्र: ICSSR संक्षिप्तकालिक अनुभवात्मक अनुसंधान के परिणामों पर एक दिवसीय कार्यशाला –पीएम-डिवाइन योजना और नेक्टर और उत्तर-पूर्व में युवाओं और महिलाओं के जीवनयापन गतिविधियों को सक्षम बनाने पर प्रभाव । : मणिपुर का एक केस अध्ययन



चित्र: नेक्टर टीम का BARC का 2-दिवसीय दौरा, जिसमें पीएम डिवाइन केले के छद्म तने और जैविक कृषि परियोजना के लिए प्रारंभिक विश्लेषण के लिए मृदा जैविक कार्बन पहचान किट का प्रौद्योगिकी हस्तांतरण शामिल है।



चित्र: असम के बोको में बुनियादी सर्वेक्षण और स्थल मूल्यांकन के लिए नेक्टर और MSRLS द्वारा अमजोंग गांव, री-भोई जिला, मेघालय का संयुक्त दौरा



चित्र: विकास मंत्रालय के वरिष्ठ आर्थिक सलाहकार का Boko में CFC स्थल पर दौरा

चित्र: हैदराबाद में NIRD & PR अधिकारियों के साथ बैठक



चित्र: विशेषज्ञ समूह का गठन और पहली बैठक 17 जुलाई 2023 को आयोजित की गई

चित्र: ICAR- NRC फॉर बाना, त्रिची में केले के फाइबर का निष्कर्षण



चित्र – नेक्टर और NAU, नवसारी के बीच समझौता ज्ञापन (MOA) पर हस्ताक्षर



चित्र – असम के गोलपारा जिले में नवसारी विश्वविद्यालय गुजरात के विशेषज्ञों के साथ आधारभूत सवेक्षण काय



चित्र – पीएम Devine केला परियोजना पर चर्चा के लिए नवसारी विश्वविद्यालय, नवसारी के दो वैज्ञानिकों और मिजोरम सरकार के बागवानी विभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ. पाउचाउ की कार्यालय में बैठक



चित्र – पीएम Devine के परियोजना के लिए नेक्टर की आधिकारिक टीम ने अरुणाचल प्रदेश के जीरो, लोअर सुबनसिरी का दौरा किया, जहाँ बागवानी विभाग के डीएचओ श्री डांटे ओर उनके एसडीएचओ मौजूद थे।

3. पीएम डिवाइन परियोजना: उत्तर-पूर्वी भारत में वैज्ञानिक जैविक कृषि को बढ़ावा देना (मल्टी-स्टेट)

नेक्टर "उत्तर-पूर्वी भारत में वैज्ञानिक जैविक कृषि को बढ़ावा देने" परियोजना को पीएम-डिवाइन योजना के अन्तर्गत 250 विभिन्न क्लस्टरों में लागू कर रहा है। इसमें असम (75 क्लस्टर), मेघालय (55 क्लस्टर), त्रिपुरा (50 क्लस्टर), अरुणाचल प्रदेश (15 क्लस्टर), मिजोरम (20 क्लस्टर), नागालैंड (20 क्लस्टर) और मणिपुर (15 क्लस्टर) शामिल हैं। इसके अनुसार, हम इस परियोजना के अन्तर्गत उत्तर-पूर्व के सभी क्षेत्रों में 250 मास्टर ट्रेनर्स और 25,000 प्रशिक्षु किसानों को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य रख रहे हैं, जिसमें विभिन्न कार्यान्वयन एजेंसियों को शामिल किया जाएगा।

परियोजना के उद्देश्य:

- 250 जैविक प्रमाणित क्लस्टर बनाना जिनकी वाणिज्यिक और लॉजिस्टिक संभावनाएँ हों, जैसे कि एक जैविक आउटलेट की स्थापना या उपज प्रबंधन और उत्पादों की मूल्य वृद्धि के लिए भविष्य की हस्तक्षेप योजनाएँ।
- 250 मास्टर ट्रेनर्स (प्रत्येक क्लस्टर में 1 मास्टर ट्रेनर) को तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान करके अपने भौगोलिक क्षेत्रों में फार्म लैब्स में प्रदर्शात्मक जैविक खेती करने में सक्षम बनाना।
- प्रत्येक क्लस्टर में 250 प्रदर्शात्मक फार्म लैब्स की स्थापना करना। ये लैब्स मास्टर ट्रेनर की निगरानी में होंगे, जहाँ जैविक खेती से संबंधित सभी प्रशिक्षण, सैद्धांतिक और व्यावहारिक, किए जाएंगे।
- 25,000 प्रशिक्षित किसानों (प्रत्येक क्लस्टर में 100 प्रशिक्षु किसान) का एक समूह तैयार करना, जिनके पास जैविक खेती के बारे में बेहतर जानकारी, ज्ञान, और कौशल होगा और उचित बाजार लिंक के साथ होगा।
- चयनित क्लस्टरों में एक सामुदायिक बीज बैंक स्थापित करना, जो जैविक बीज और रोपण सामग्री की आवश्यकता को पूरा करेगा और प्रत्येक क्लस्टर को प्रशिक्षण और बाजार लिंक के माध्यम से बनाए रखने में मदद करेगा।
- एक डिजिटल कृषि डेटा प्रबंधन सुविधा बनाना, जो वेब-आधारित पोर्टल के रूप में निगरानी, प्रबंधन और बाजार लिंक के लिए होगी। पोर्टल में सही दृश्यता और बेहतर निर्णय लेने के लिए अस्थायी ड्रोन डेटा अधिग्रहण और एकीकरण होगा।
- गुणवत्ता आश्वासन, मिट्टी विशेष सुझावों के लिए मिट्टी परीक्षण और कीटनाशक परीक्षण सुविधा की स्थापना करना, ताकि बेहतर फसल कटाई और मूल्य वृद्धि हो सके।
- संभावित स्थानों/पर्यटन स्थलों पर जैविक आउटलेट की स्थापना करना ताकि स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाया जा सके।
- परियोजना क्षेत्र में एक कार्बन वित्तपोषण प्रणाली को लागू करने की संभावनाओं की खोज करना, जिससे किसानों को अतिरिक्त आय मिल सके।

भाग लेने वाली एजेंसियाँ द्वारा कार्यान्वयन

मेघालय में 55 क्लस्टरों के कार्यान्वयन के लिए, नेक्टर और मेघालय राज्य ग्रामीण जीवनयापन सोसाइटी (MSRLS) के बीच 20.07.2023 को एक समझौता ज्ञापन (MoA) पर हस्ताक्षर किए गए, जिसमें आधारभूत सर्वेक्षण, लाभार्थियों का एकीकरण, फार्म लैब की स्थापना और किसानों को प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए जिम्मेदारी दी गई। अन्य चयनित कार्यान्वयन एजेंसियाँ हैं: मार्क एग्री जेनेटिक्स प्रा. लिमिटेड, यूसुफ मेहरअली सेंटर, इंटरनेशनल कॉम्पिटेंस सेंटर फॉर ऑर्गेनिक एग्रीकल्चर, क्लोवर ऑर्गेनिक प्राइवेट। लिमिटेड, एक्सेस डेवलपमेंट सर्विसेज, सिक्किम स्टेट कोऑपरेटिव सप्लाय एंड मार्केटिंग फेडरेशन लिमिटेड, कृषि विकास सहकारी लिमिटेड, और शील बायोटेक लिमिटेड, जो असम, त्रिपुरा, मिजोरम, मणिपुर और नागालैंड में कार्यान्वित करेंगी। इसके अलावा, नेक्टर और जैव संसाधन विकास केंद्र (BRDC) के बीच 17/08/2023 को एक और MoA पर हस्ताक्षर किए गए, जिसमें मेघालय राज्य के मास्टर ट्रेनर्स के प्रशिक्षण और किसानों के प्रशिक्षण मॉड्यूल की तैयारी के लिए जिम्मेदारी दी गई। BRDC मेघालय में अंतिम PGS जैविक प्रमाणन प्रदान करेगा।



चित्र - 20-07-2023 को शिलांग में नेक्टर और मेघालय राज्य ग्रामीण आजीविका समाज के बीच समझौता ज्ञापन (MOA) पर हस्ताक्षर



चित्र - 12 अक्टूबर 2023 को नेक्टर और राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो के (National Bureau of Plant Genetic Resources) के बीच समझौता ज्ञापन (MOA) पर हस्ताक्षर



चित्र: वसुंधरा-मोबाइल मट्टी कार्बन पहचान किट जिसे BARC ने बकसित किया और नेक्टर को सौंपा गया



चित्र: दूसरी विशेषज्ञ समिति की बैठक 28 मार्च 2024 को गुवाहाटी में आयोजित की गई



चित्र: पहले चरण के मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षण का आयोजन 14 मई 2024 से 17 मई 2024 तक असम कृषि विश्वविद्यालय (AAU), काहिकुची, गुवाहाटी स्थित उद्धानिकी अनुसंधान



चित्र: मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षण के दौरान बायो रिसोर्स डेवलपमेंट सेंटर (BRDC), अपर शिलांग, मेघालय में 06 मई 2024 से 11 मई 2024 तक आयोजित व्यावहारिक सत्र



चित्र: दिसंबर 2023 में नेक्टर अधिकारियों द्वारा मेघालय के पश्चिम गारो हिल्स जिले के जेंगजल गांव का क्षेत्रीय दौरा, जिसमें कार्य की प्रगति की जांच की गई और विभिन्न हितधारकों के साथ बातचीत की गई।



चित्र :-असम ट्रिब्यून में महनिदेशक , नेक्टर द्वारा पीएम डेवाइन जीवनयापन परियोजनाओं पर प्रकाशित लेख"

नेक्टर और नेशनल ब्यूरो ऑफ प्लांट जेनेटिक रिसोर्सेज (NBPGR) ने 12 अक्टूबर 2023 को पूर्वोत्तर भारत की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को सुधारने के उद्देश्य से पहल करने के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। इस समझौते का मुख्य उद्देश्य पीएम डिवाइन जैविक परियोजना के अन्तर्गत पूर्वोत्तर में पारंपरिक बीजों का सामुदायिक बीज बैंक बनाना है।

नेक्टर और भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (BARC) के बीच मिट्टी के कार्बनिक तत्वों का पता लगाने वाले किट के लिए एक प्रौद्योगिकी हस्तांतरण समझौता भी किया गया। इस समझौते के अन्तर्गत, नेक्टर के कर्मचारियों को फरवरी 2024 में BARC, मुंबई में मिट्टी के नमूनों के कुछ विशेष मानकों का पता लगाने के लिए प्रशिक्षित किया गया। मिट्टी के कार्बनिक तत्वों का पता लगाने वाले किट का प्रदर्शन भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र के न्यूक्लियर एग्रीकल्चर और बायोटेक्नोलॉजी विभाग में वैज्ञानिक अधिकारी डॉ. मेहेत्रे के मार्गदर्शन में किया गया। इस प्रदर्शन में तीन नमूनों - खाद, खाद-मिश्रित मिट्टी, और सामान्य मिट्टी के नमूनों का उपयोग करके किट की कार्यप्रणाली का प्रदर्शन किया गया।

इस प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के साथ, नेक्टर ने "वसुंधरा" नामक एक मिट्टी के कार्बनिक तत्व और pH पता लगाने वाले मिनी किट का निर्माण किया और इसे 27 मार्च, 2024 को गुवाहाटी में आयोजित पूर्वोत्तर स्टार्टअप सम्मेलन के दौरान लॉन्च किया। लगभग 27,500 किट तैयार की जाएंगी और 25,000 किसानों को निःशुल्क वितरित की जाएंगी।

वैज्ञानिक जैविक कृषि को बढ़ावा देने वाली इस परियोजना के अन्तर्गत 28 मार्च 2024 को गुवाहाटी के श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र में दूसरी विशेषज्ञ समूह की बैठक आयोजित की गई, जिसमें परियोजना की हालिया प्रगति की समीक्षा की गई और भविष्य की कार्य योजनाओं पर चर्चा की गई।

4. प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY) के अन्तर्गत कौशल विकास

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY) कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय (MSDE) की प्रमुख योजना है, जिसे नेशनल स्किल डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (NSDC) द्वारा लागू किया जाता है। इस कौशल प्रमाणन योजना का उद्देश्य भारतीय युवाओं को उद्योग से संबंधित कौशल प्रशिक्षण प्रदान करना है, जिससे उन्हें बेहतर आजीविका सुरक्षित करने में सहायता मिल सके।

कौशल विकास आजीविका की चुनौती को संबोधित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। व्यक्तियों के कौशल को बढ़ाने से उनकी रोजगार क्षमता, आय उत्पन्न करने की क्षमता और समग्र भलाई में सुधार हो सकता है। उच्च स्तर की बेरोजगारी और अधेरोजगारी आजीविका की चुनौती को और बढ़ाती है। इसके अलावा, लोगों के पास स्थिर और अच्छी वेतन वाली नौकरियों को सुरक्षित करने के लिए आवश्यक कौशल की कमी हो सकती है, और सीमित उद्यमिता के अवसर भी उनकी अपनी आजीविका बनाने में बाधा डालते हैं। विशेष रूप से कुछ क्षेत्रों या उद्योगों में सीमित आर्थिक अवसर, आजीविका को प्रभावित कर सकते हैं।

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY) के अन्तर्गत तीन प्रकार के प्रशिक्षण प्रदान किए जाते हैं: शॉर्ट टर्म ट्रेनिंग (STT), पूर्व कौशल मान्यता (RPL), और विशेष परियोजनाएं (SP)। नेक्टर ने नेशनल स्किल डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (NSDC) के माध्यम से पूर्व कौशल मान्यता (RPL) और भारतीय उद्यमिता संस्थान (IIE) के माध्यम से शॉर्ट टर्म ट्रेनिंग (STT) को विभिन्न सरकारी विभागों और एजेंसियों के साथ मिलकर विभिन्न नौकरी भूमिकाओं के लिए लागू किया है। NSDC द्वारा "पूर्व कौशल मान्यता (RPL)" के अन्तर्गत 240

लक्ष्यों का आवंटन किया गया था, जिसमें से पहले बैच के 14 उम्मीदवारों, जो "विकलांग व्यक्तियों" की श्रेणी में आते हैं, ने "डोमेस्टिक डाटा एंट्री ऑपरेटर" की नौकरी भूमिका के लिए प्रशिक्षण पूरा कर लिया है, और दूसरे बैच के 10 प्रशिक्षुओं ने जुलाई 2024 के अंतिम सप्ताह में शिलांग में प्रशिक्षण पूरा किया। इसके अलावा, SDCGL-नेक्टर खानापारा, असम में, "ड्रोन सेवा तकनीशियन" कार्यक्रम में 14 उम्मीदवारों ने प्रशिक्षण पूरा किया है, और "ड्रोन निर्माण और असेंबली तकनीशियन" कार्यक्रम में 17 उम्मीदवारों ने प्रशिक्षण पूरा किया है। किसान ड्रोन ऑपरेटर और बांस कार्य कारीगर क्षेत्रों में प्रशिक्षण पूरा करने के प्रयास जारी हैं।

इसके अतिरिक्त IIE द्वारा विभिन्न नौकरी भूमिकाओं के लिए, जिनमें खाद्य प्रसंस्करण, वस्त्र, और गैर-काष्ठ वन उपज शामिल हैं, 573 लक्ष्यों का आवंटन किया गया था। यह कार्यक्रम विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को सशक्त बनाने और आजीविका एवं आय सृजन सुनिश्चित करने के विभिन्न पहलुओं पर जोर दे रहा है। प्रशिक्षण प्रक्रिया पूरी तरह से सिस्टम-आधारित और कम्प्यूटरीकृत है, जिसे विभिन्न पोर्टल्स के माध्यम से संचालित किया जाता है। पंजीकरण, नामांकन, सत्यापन, और कॉन्फिगरेशन से लेकर कार्यक्रम की पूर्णता तक की पूरी प्रक्रिया स्वचालित है, जिससे कार्यप्रवाह को सुव्यवस्थित और कुशल बनाया गया है। प्रशिक्षण घंटे नौकरी भूमिका की आवश्यकताओं के आधार पर NCVET द्वारा निर्धारित किए जाते हैं। उम्मीदवारों और प्रशिक्षकों दोनों की दैनिक उपस्थिति आधार सक्षम बायोमेट्रिक उपस्थिति प्रणाली (AEBAS) का उपयोग करके प्रवेश और निकास पर दर्ज की जाती है। कुछ नौकरी भूमिकाओं में ऑन-जॉब प्रशिक्षण (OJT) भी शामिल होता है, जिसका उद्देश्य उम्मीदवारों को व्यावहारिक अनुभव प्रदान करना है, ताकि वे एक वास्तविक कार्य वातावरण का अनुभव कर सकें, जिससे उनकी रोजगार क्षमता में सुधार हो सके। प्रशिक्षण और (यदि आवश्यक हो) ऑन-जॉब प्रशिक्षण पूरा होने के बाद उम्मीदवारों का अंतिम मूल्यांकन किया जाएगा। सभी उम्मीदवार जो कम से कम 70% उपस्थिति के साथ प्रशिक्षण को सफलतापूर्वक पूरा कर लेते हैं, वे मूल्यांकन के लिए पात्र हो जाते हैं। मूल्यांकन और प्रमाणन का कार्य NCVET द्वारा स्वीकृत अवार्डिंग बॉडीज और सेक्टर स्किल काउंसिल (SSC) द्वारा सूचीबद्ध मूल्यांकन एजेंसियों की जिम्मेदारी होगी, जो समय पर निष्पक्ष और विश्वसनीय सेवाएं प्रदान करेंगे। सभी उम्मीदवार जो मूल्यांकन को सफलतापूर्वक पास कर लेते हैं, उन्हें ग्रेडेड प्रमाणपत्र प्रदान किया जाएगा। उम्मीदवारों को उनके संबंधित प्रशिक्षण केंद्र या प्रशिक्षण भागीदार से प्रमाणपत्र की हार्ड कॉपी प्राप्त होगी, जब SSC द्वारा परिणाम स्वीकृत हो जाएगा और प्रशिक्षण केंद्र या भागीदार द्वारा प्रमाणपत्र डाउनलोड किए जाएंगे। पहले मूल्यांकन एजेंसी द्वारा परिणाम को स्वीकृत किया जाता है, और अंतिम स्वीकृत सेक्टर स्किल काउंसिल (SSC) द्वारा दी जाती है, जिसके 24 घंटे बाद प्रमाणपत्र को डाउनलोड किया जा सकता है।

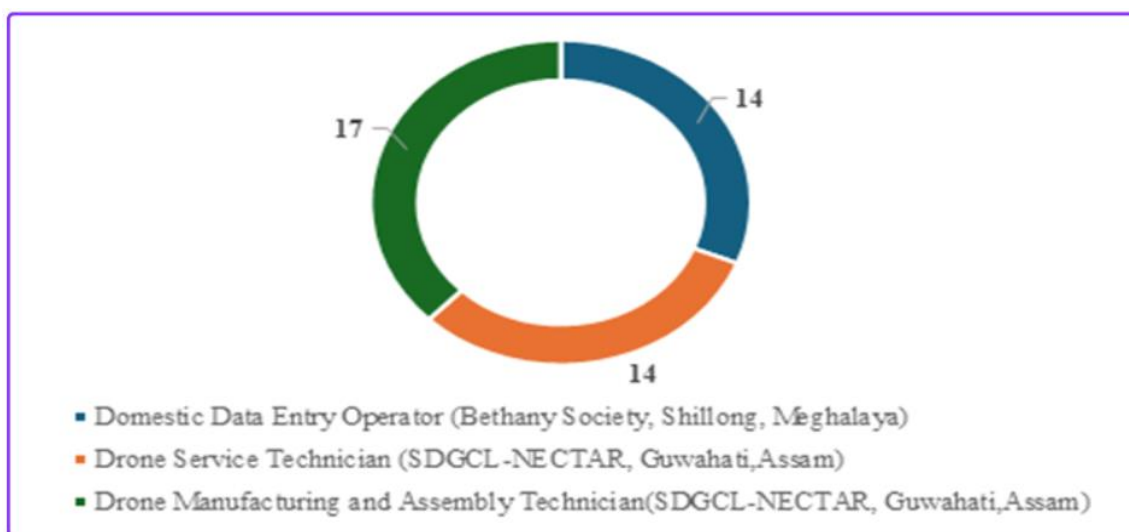
प्रमाणन और मूल्यांकन PMKVY 4.0 प्रशिक्षण का एक महत्वपूर्ण घटक है, जो यह सुनिश्चित करते हैं कि उम्मीदवार उद्योग से संबंधित कौशल और ज्ञान प्राप्त करें। मूल्यांकन प्रक्रिया के माध्यम से, उम्मीदवार अपनी विशिष्ट नौकरी भूमिकाओं में दक्षता प्रदर्शित करते हैं, जिससे उनकी रोजगार क्षमता और करियर की संभावनाएं बेहतर होती हैं। प्रमाणपत्र और स्किल इंडिया कार्ड उम्मीदवारों को नौकरी के लिए आवेदन करने और आजीविका अर्जित करने में सक्षम बनाते हैं। प्रमाणपत्र उनकी क्षमताओं को संभावित नियोक्ताओं के समक्ष मान्यता प्रदान करते हैं और उद्योग मानकों के अनुरूप उनकी तैयारी को दर्शाते हैं, जिससे उम्मीदवारों को पेशेवर भूमिकाओं के लिए तैयार होने का आत्मविश्वास मिलता है। विकलांग व्यक्तियों (PwDs) के लिए, यह प्रक्रिया उनके कौशल को प्रदर्शित करने और उन्हें रोजगार के अवसरों के लिए तैयार करने में सहायता करती है, जिससे उनकी आत्मविश्वास और प्रतिस्पर्धात्मक बाजार में नौकरी की संभावनाएं बढ़ती हैं। PMKVY 4.0 के अन्तर्गत प्रमाणन उनके कौशल की औपचारिक मान्यता प्रदान करता है, जिससे उन्हें कार्यबल में प्रवेश करने और करियर विकास के नए रास्ते खोलने में आसानी होती है। इसके अलावा, PMKVY 4.0 के अन्तर्गत सरकार द्वारा इन प्रमाणपत्रों की मान्यता, इनके मूल्य को और भी मजबूत करती है, जिससे कुशल कार्यबल के भीतर करियर उन्नति के लिए अतिरिक्त सहायता और अवसर मिल सकते हैं।

नियमित निरीक्षण

नेक्टर और सहयोगी सरकारी विभागों व एजेंसियों द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रमों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए नियमित अंतराल पर निरीक्षण किए गए। इन निरीक्षणों का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि प्रशिक्षण कार्यक्रम मानकों के अनुरूप हों, प्रशिक्षण की गुणवत्ता की जांच करना, प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का आकलन करना, सुधार के क्षेत्रों की पहचान करना और जवाबदेही बनाए रखना था।



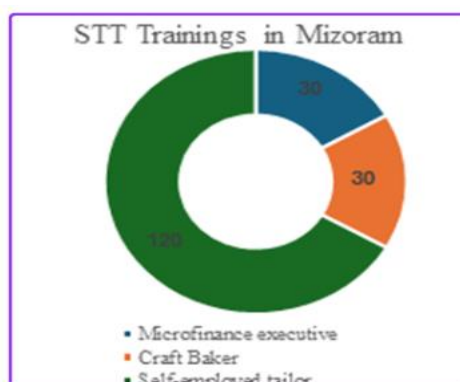
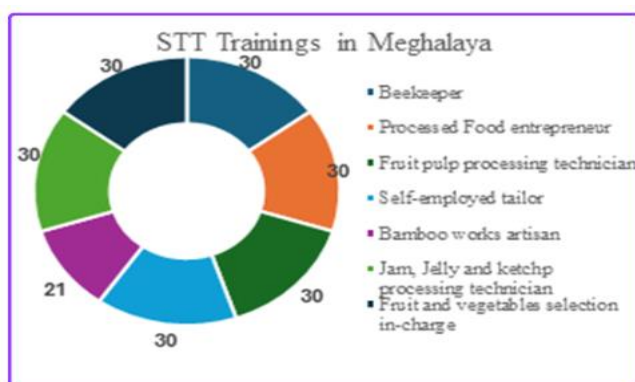
चित्र : प्रशिक्षण जीवन-चक्र



चित्र: मेघालय और असम में RPL प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रशिक्षित उम्मीदवार



चित्र: "पूर्व शिक्षण की मान्यता (आरपीएल)" प्रशिक्षण कार्यक्रम विभिन्न स्थानों पर



चित्र: मेघालय और मिजोरम में एसटीटी प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रशिक्षित उम्मीदवार



चित्र: "अल्पकालिक प्रशिक्षण (एसटीटी)" कार्यक्रम विभिन्न स्थानों पर

5. केंद्रीय क्षेत्र योजना: 10,000 किसान उत्पादक संगठनों (FPOs) का गठन और प्रोत्साहन

परिचय

केंद्रीय क्षेत्र योजना (CSS) "10,000 किसान उत्पादक संगठनों (FPOs) का गठन और प्रोत्साहन" के अन्तर्गत, नेक्टर को NERAMAC, कार्यान्वयन एजेंसी के अन्तर्गत क्लस्टर आधारित व्यवसाय संगठन (CBBO) के रूप में पैनल में शामिल किया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य छोटे, सीमांत और भूमिहीन किसानों को एक साथ लाना है ताकि उनकी आर्थिक ताकत और बाजार कनेक्शन को बढ़ाया जा सके, और अंततः उनकी आय में सुधार किया जा सके। नेक्टर महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिसमें सक्रिय सहभागिता को

बढ़ाने के लिए किसानों को एकत्रीकरण, पंजीकरण, व्यवसाय योजना और संचालन मार्गदर्शन में आवश्यक सहायता प्रदान करता है। वित्तीय वर्ष FY 2022-23 में, अरुणाचल प्रदेश के 7 जिलों में 21 ब्लॉक्स में 21 FPOs की स्थापना की गई। ये FPOs मुख्य रूप से कृषि और बागवानी वस्तुओं को बढ़ावा देने और किसानों की भलाई और क्षेत्रीय समृद्धि को ऊंचा उठाने के लिए विपणन अवसरों की पहचान पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

पूरी की गई गतिविधियाँ

एक व्यापक आधारभूत सर्वेक्षण ने प्राथमिक और द्वितीयक फसलों की पहचान की, सामाजिक-सांस्कृतिक समानताओं का मूल्यांकन किया, और कृषि और बागवानी मूल्य श्रृंखलाओं में अंतरालों का विश्लेषण किया। इस सर्वेक्षण ने छोटे, सीमांत और भूमिहीन किसानों की खेती की स्थिति का मूल्यांकन किया ताकि हस्तक्षेप क्षेत्रों की पहचान की जा सके। किसान एकत्रीकरण और सामुदायिक भागीदारी पर जोर दिया गया, और नेक्टर योजनाओं और अन्य कृषि पहलों के बारे में जागरूकता अभियान चलाए गए ताकि सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित किया जा सके। FPOs की स्थापना की गई, और निदेशक मंडल (BODs) को उनके भूमिकाओं, जिम्मेदारियों, प्रबंधन और पूंजी/इक्विटी एकत्रीकरण पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया। प्रत्येक FPO में दैनिक गतिविधियों को प्रबंधित करने और आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए CEOs और लेखाकारों की नियुक्ति की गई, जो योजना के अनुसार आवश्यकताओं के अनुरूप है।



FPO समूहों के लिए प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण कार्यशालाएँ भी आयोजित की गईं। FPO कार्यालयों की स्थापना उचित बुनियादी ढाँचा और सुविधाओं जैसे कंप्यूटर, फर्नीचर और उपकरणों के साथ की गई और उन्हें उनकी स्थिरता और आर्थिक संभावनाओं को सहायता देने के लिए प्रबंधन फंड प्राप्त हुए। इसके अतिरिक्त, नेक्टर इन FPOs को योजना दिशानिर्देशों के अन्तर्गत अनुमेय FPO प्रबंधन लागत का लाभ उठाने के लिए मार्गदर्शन सहायता प्रदान कर रहा है और उनकी वित्तीय आधार को मजबूत करने के लिए सरकारी इक्विटी अनुदान प्राप्त करने के लिए आवेदन भी कर रहा है। ऐसे वित्तीय संस्थानों से परियोजनाओं और कार्यशील पूंजी की आवश्यकताओं के लिए क्रेडिट प्राप्त करना उनके व्यापार विकास को सशक्त बनाएगा।



उनके उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए, FPOs ने अपने बोर्ड के सदस्य और किसान रुचि समूह (FIG) नेताओं के साथ समय-समय पर बैठकें की हैं ताकि मूल्यवान अंतर्दृष्टियाँ साझा की जा सकें और संगठन की प्रगति के लिए रणनीतिक योजनाएँ विकसित की जा सकें। इन चर्चाओं ने FPOs को उनके लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में प्रभावी रणनीतियाँ तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके अतिरिक्त, FPOs ने जिला कृषि अधिकारी, जिला बागवानी अधिकारी और उपयुक्त आयुक्त कार्यालय के साथ आवश्यक बैठकें की हैं। इन परस्पर क्रिया का उद्देश्य उपलब्ध योजनाओं की जानकारी, आवश्यक लाइसेंस प्राप्त करना, प्रशिक्षण अवसरों को उपलब्ध करने और FPCs (किसान उत्पादक कंपनियों) के लिए अन्य लाभकारी संसाधनों को प्रदर्शित करना है।



ई-कॉमर्स प्लेटफार्मों और लेखांकन सॉफ्टवेयर पर प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए गए हैं ताकि सदस्यों को आधुनिक व्यापार संचालन के लिए आवश्यक कौशल से लैस किया जा सके। जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किए जाएंगे ताकि शेयरधारकों को सूचित किया जा सके और किसानों की किसी भी शंका को संबोधित किया जा सके। इसके अतिरिक्त, FPOs जिला प्रशासन के साथ सहयोग करने की योजना बना रहे हैं ताकि कृषि संबंधित अतिरिक्त प्रशिक्षण प्राप्त किया जा सके, जिससे बोर्ड के सदस्य और FIG नेता इस ज्ञान को व्यापक कृषि समुदाय तक पहुंचा सकें।



FPOs ने हाल ही में अपनी Matching Equity Grant प्राप्त की है, जो उनके विकास में एक महत्वपूर्ण कदम है। इसमें अगले 18 महीनों के लिए एक व्यवसाय योजना और बजट तैयार करना शामिल है, जो समय-समय पर निर्धारित की जाने वाली एक स्थायी, राजस्व मॉडल पर आधारित है। नेक्टर के साथ CBBO के रूप में सहयोग में, ये FPOs अब अपने सामान को विपणन पर ध्यान केंद्रित करेंगे ताकि पर्याप्त और लाभकारी आय उत्पन्न की जा सके। वे विभिन्न सरकारी योजनाओं का सक्रिय रूप से पालन कर रहे हैं ताकि कृषि मशीनरी उपकरण, स्टोरेज यूनिट्स और सब्सिडी जैसी महत्वपूर्ण संसाधन प्राप्त की जा सकें। इसके अतिरिक्त, वे अपने परिचालन क्षमताओं को बढ़ाने के लिए क्रेडिट लिंक और अन्य कृषि उपकरण भी प्राप्त करने की कोशिश कर रहे हैं।



आगे की दिशा

किसान उत्पादक कंपनियों (FPCs) के संचालन को बेहतर बनाने के लिए कई रणनीतिक पहलों को अपनाया जाएगा। क्लस्टर के बाहर व्यापक बाजार सर्वेक्षण मूल्य निर्धारण, मांग, आपूर्ति, और उभरते रुझानों पर वास्तविक समय का डेटा प्रदान करेंगे, जो FPCs को बाजार गतिशीलता को समझने और प्रतिस्पर्धात्मक रूप से स्थिति बनाने में मदद करेंगे। प्रमुख व्यावसायिक केंद्रों पर नियमित यात्राएँ की जाएंगी ताकि व्यापारियों के साथ संबंधों को मजबूत किया जा सके और नए बाजार के अवसरों की खोज की जा सके। प्रशिक्षण, शिखर सम्मेलनों, और मेलों में भागीदारी संभावित निवेशकों और बाजार के खिलाड़ियों के साथ मूल्यवान कनेक्शन खोल देगी, जबकि अन्य FPOs के साथ साझेदारी करने से विपणन प्रयासों और बाजार पहुंच का विस्तार होगा। जिला प्रशासन के साथ सहयोग की कोशिश की जाएगी ताकि आवश्यक कृषि संबंधित प्रशिक्षण प्रदान किया जा सके, सुनिश्चित करते हुए कि बोर्ड के सदस्य, वित्तीय संस्थान समूह के नेता, और व्यापक कृषि समुदाय इस ज्ञान से लाभान्वित हो सकें।

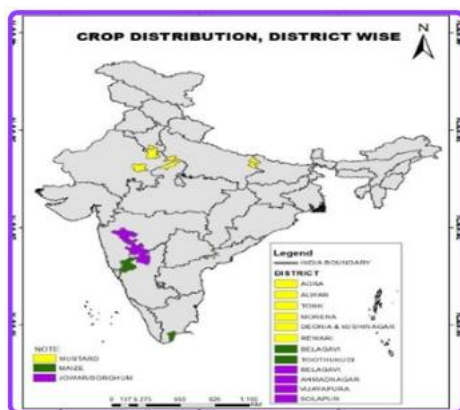
शेयरधारकों को शेयर प्रमाणपत्र वितरित करने की प्रक्रिया पूरी की जाएगी, और बीजों की खरीद और परीक्षण के साथ-साथ आवश्यक बीज लाइसेंस प्राप्त करने के लिए कदम उठाए जाएंगे। कृषि गतिविधियों, निवेश रणनीतियों, और अन्य व्यावसायिक योजनाओं के लिए विस्तृत योजनाओं को तैयार करने के लिए रणनीतिक बैठकें आयोजित की जाएंगी, जो आय बढ़ाने के उद्देश्य से होंगी। इसके अतिरिक्त, FPCs मूल्य वृद्धि, फसल संरक्षण उपायों, पूर्व और पश्चात-फसल प्रबंधन, एकीकृत कृषि, और मिट्टी और जल प्रबंधन के लिए अच्छे कृषि

प्रथाओं पर प्रशिक्षण पर जोर देंगे। इसके अलावा, व्यावहारिक अंतर्दृष्टि और सीखने के अनुभवों को बढ़ाने के लिए एक्सपोजर ट्रिप आयोजित की जाएगी।

6. पायलट अध्ययन: - गैर-अनाज फसलों के लिए रबी-2022-23 के लिए उन्नत प्रौद्योगिकी का उपयोग

ग्राम पंचायत (ग्राम पंचायत) स्तर की उपज का अनुमान हेतु पायलट अध्ययन।

नेक्टर को महालनोबिस नेशनल क्रॉप फोरकास्ट सेंटर (MNCFC), कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा भारत के 13 जिलों के लिए ग्रामपंचायत स्तर पर फसल उपज पूर्वानुमान मॉडल विकसित करने का कार्य सौंपा गया। यह मॉडल रिमोट सेंसिंग और GIS तकनीक का उपयोग करके विकसित किया जाएगा और इसमें 3 प्रमुख फसलों - सरसों, ज्वार और मक्का - को शामिल किया जाएगा।



जिला नाम	फसलें	ग्राम पंचायतों की संख्या
बीजापुर (विजापुर)	ज्वार	43
अहमदनगर	ज्वार	50
सोलापुर	ज्वार	50
बेलागवी	मक्का, ज्वार	50
देवरिया और कुशीनगर	सरसों	61

ग्रामपंचायत स्तर पर फसल वर्गीकरण उच्च संकल्प 3 मीटर प्लैनेट लैब डेटा का उपयोग करके ज्वार और मक्का जिलों के लिए और 10 मीटर सेंटिनल 2 डेटा का उपयोग करके सरसों जिलों के लिए किया गया, जिसमें वर्गीकरण की सटीकता 90% से 94% के बीच रही। फसल वर्गीकरण ग्राउंड ट्रुथ डेटा का उपयोग करके किया गया, जिसे उत्तरी पूर्वी क्षेत्र के प्रशिक्षित इंटरन और छात्रों द्वारा एकत्रित किया गया। रिमोट सेंसिंग पैरामीटर्स जैसे NDVI, NDWI, FAPAR, LAI और मौसम पैरामीटर्स जैसे वर्षा, तापमान और मिट्टी की नमी नेक्टर GIS लैब में प्रोसेस किए गए। इन पैरामीटर्स का उपयोग करके AI/ML आधारित मॉडल विकसित किया गया, जो ग्रामपंचायत स्तर पर फसल

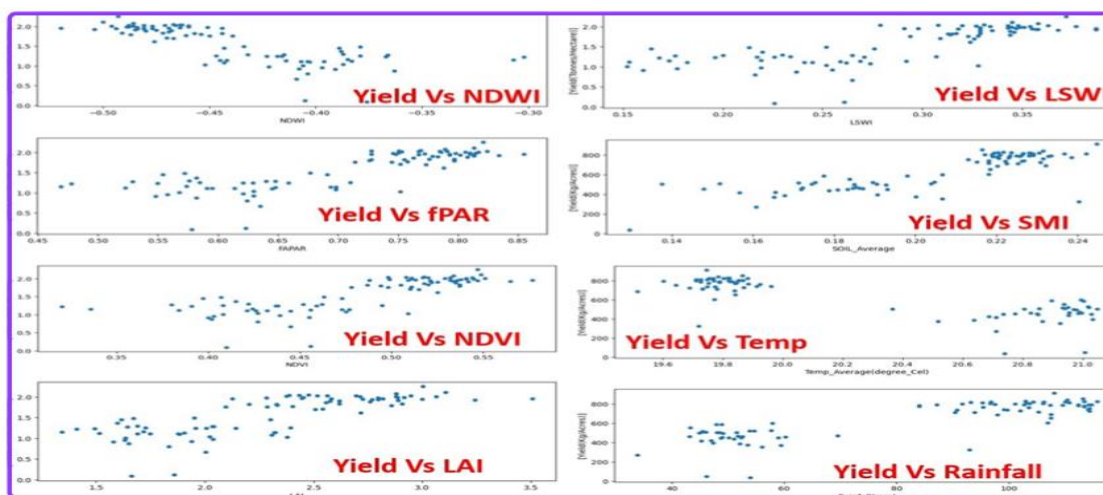
उपज पूर्वानुमान मॉडल जनरेट करने के लिए उपयोग किया गया। फसल उपज पूर्वानुमान मॉडल के निर्माण के लिए निम्नलिखित विधि का उपयोग किया गया:

क) रिमोट सेंसिंग और अन्य पैरामीटर्स का अनुमान

फसल मास्क क्षेत्र को वर्गीकरण के बाद उपलब्ध इमेज सेट्स (प्लैनेट-स्कोप और सेंटिनल) से वर्गों के गुणसूत्र से निकाला गया। इसके बाद, प्लैनेट-स्कोप फसल मास्क को सेंटिनल पर सुपरइमपोज किया गया और सेंटिनल का संबंधित रास्टर फसल मास्क पॉलीगॉन में परिवर्तित किया गया। इसके बाद, हमने फसल क्षेत्र पॉलीगॉन का उपयोग करके जीपी और सीसीई के अनुसार औसत पैरामीट्रिक मान की गणना की। निकाले गए वेरिबल्स में सामान्यीकृत अंतर वेजिटेशन इंडेक्स (NDVI), सामान्यीकृत अंतर जल इंडेक्स (NDWI), पत्तियों का क्षेत्र इंडेक्स (LAI), FAPAR, और भूमि सतह जल इंडेक्स (LSWI) शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, तापमान (मैक्स/मिन), वर्षा, मृदा आर्द्रता आदि उपलब्ध ग्रिडेड डेटा से निकाले गए।

ख) फसल उपज मॉडलिंग

सीसीई डेटा एजेंसियों से सभी जिलों में लघु फसल क्षेत्र कॉवरेज 5mx5m के लिए छोटे फसल क्षेत्र की कवरेज के एजेंसियों से सीसीई डेटा प्राप्त किया गया। इसे उपग्रह डेटा में व्याख्यायित किया गया ताकि इसे प्लॉट और जीपी स्तर पर विस्तारित किया जा सके, और रिमोट सेंसिंग, मौसम विज्ञान, और जैव-भौतिक वेरिबल्स को इन डेटा सेट्स के प्रारंभिक विश्लेषण के लिए निकाला गया। इन पैरामीटर्स के बीच आपसी निर्भरता का मूल्यांकन करने के लिए सहसंबंध विश्लेषण किया गया। **स्कैटर प्लॉट** के निम्नलिखित रुझानों का विश्लेषण किया गया-



चित्र: सहसंबंधात्मक विश्लेषण के लिए सभी रिमोट सेंसिंग पैरामीटर्स के लिए उत्पन्न स्कैटर प्लॉट

(ग) सहसंबंध विश्लेषण

ऊपर दिए गए स्कैटर प्लॉट में लगभग 86 CCE डेटा पॉइंट्स का उपयोग किया गया, जो अलवर और टोंक में सरसों की फसल से संबंधित हैं। जमीन पर अवलोकित उपज (निर्भर वेरिएबल) और अन्य पैरामीटर्स (स्वतंत्र) के बीच प्राप्त सामान्य सहसंबंध प्रवृत्ति रेखीय रूप से निर्भर पाई गई, सिवाय वर्षा और तापमान के। तापमान और वर्षा डेटा बहुत कम रिजॉल्यूशन वाले ग्रीडेड डेटा से निकाले गए थे, जिससे ग्रामपंचायत स्तर पर संबंध अप्रभावी रहा। हालांकि, जब इन डेटा सेट्स को महत्वपूर्णता की परीक्षण के लिए प्रस्तुत किया गया, तो सहसंबंध गुणांक हमें निर्भर और स्वतंत्र वेरिएबल्स के बीच रेखीय संबंध की ताकत और दिशा के बारे में बताता है। हालांकि, रेखीय मॉडल की विश्वसनीयता यह भी निर्भर करती है कि सैंपल में कितने अवलोकित डेटा पॉइंट्स हैं। हमें सहसंबंध गुणांक के मूल्य और सैंपल साइज दोनों को एक साथ देखना होता है। हम "सहसंबंध गुणांक की महत्वपूर्णता" पर एक परिकल्पना परीक्षण करते हैं ताकि यह निर्णय लिया जा सके कि सैंपल डेटा में रेखीय संबंध कितना मजबूत है जिससे इसे जनसंख्या में संबंध को मॉडल करने के लिए उपयोग किया जा सके। इन पॉइंट्स के लिए प्राप्त उच्च RMSE, MAE, MSE, RMSE और कम R^2 मूल्य के कारण, संभावित महत्वपूर्ण मॉडलिंग परिणाम प्राप्त करने के लिए AI/ML दृष्टिकोण मॉडलिंग अपनाई गई।

(घ) सीसीई डेटा से फसल उपज के प्लॉट स्तर के अनुमान का उपयोग करके AI/ML दृष्टिकोण पर परिणाम

इस विधि के अन्तर्गत लिया गया डेटा जिलों से एकत्रित किया गया: 13 (रेवाड़ी, टोंक, आगरा, अहमदनगर, अलवर, बेलगावी (ज्वार और मक्का), एलुरु, कुशीनगर, देवरिया, मोरेना, सोलापुर, थूथुक्डी, विजयपुरा), फसल: सरसों, मक्का, और ज्वार। डेटा में कुछ आउटलेयर्स थे जिन्हें मॉडलिंग से पहले Z-स्कोर विश्लेषणात्मक उन्मूलन विधि का उपयोग करके हटा दिया गया। इस चरण के बाद, विभिन्न जिलों के डेटा पॉइंट्स का उपयोग मॉडलिंग के लिए किया गया।

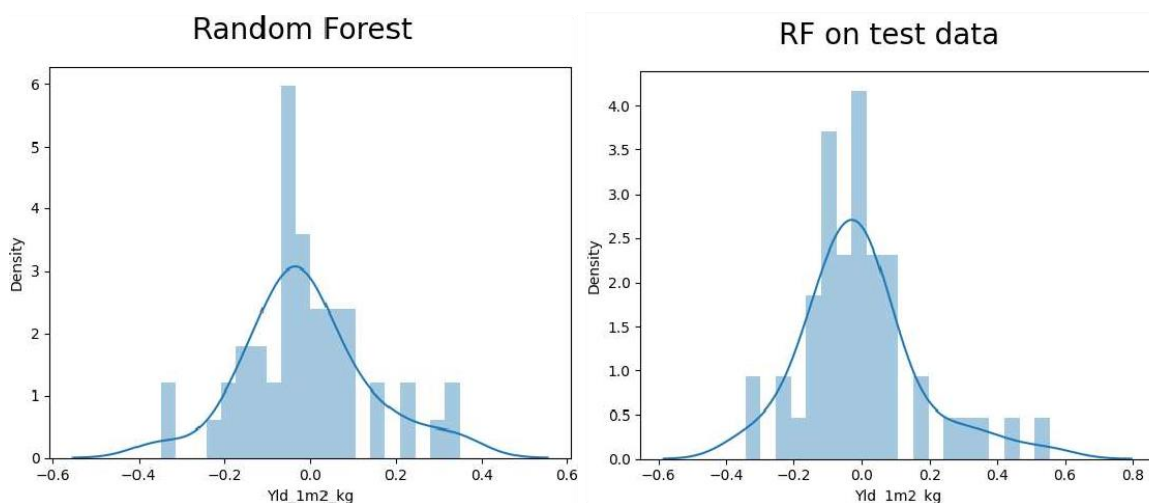
प्राप्त डेटा को प्रशिक्षण और परीक्षण डेटा में 80:20 के अनुपात में यादृच्छिक रूप से विभाजित किया गया। AI/ML के अन्तर्गत कई विधियों का प्रयास किया गया। निम्नलिखित कन्फ्यूजन मैट्रिक्स प्राप्त किया गया:



चित्र: कन्फ्यूजन मैट्रिक्स सभी निर्भर और स्वतंत्र वेरिएबल्स के बीच सहसंबंध को दर्शाता है

1. **रैंडम फ़ॉरेस्ट:** रैंडम फ़ॉरेस्ट एक एन्सेम्बल तकनीक है जो कई निर्णय वृक्षों का उपयोग करके रिग्रेशन और वर्गीकरण दोनों कार्यों को करने में सक्षम है, और एक तकनीक जिसे बूटस्ट्रैप और एग्रीगेशन कहा जाता है, जिसे आमतौर पर बैगिंग के रूप में जाना जाता है। इसके पीछे का मूल विचार यह है कि अंतिम आउटपुट निर्धारित करने में कई निर्णय वृक्षों को एक साथ मिलाया जाए, बजाय इसके कि एकल निर्णय वृक्षों पर निर्भर रहा जाए। डेटा को मॉडलिंग से पहले सामान्यीकृत किया गया।

- दो प्रयोग किए गए - (क) LAI, FAPAR, NDVI, NDWI, और LSWI के साथ; और (ख) LSWI और NDVI के साथ। दोनों विधियों में निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए:



2. रैंडम फ़ॉरेस्ट ने उपज के साथ अधिकांश निर्भर वेरिएबल्स पर प्रशिक्षित किए जाने पर कुछ हद तक संतोषजनक प्रदर्शन दिखाया। हालांकि, प्राप्त RMSE स्वीकार्य सीमा में नहीं है। इसलिए, वेरिएबल्स के बीच उपज के साथ निर्भरता का आगे अध्ययन और विश्लेषण आवश्यक है।
3. इन मॉडलों के अपेक्षित प्रदर्शन न करने के कई कारण हो सकते हैं: (क) प्रशिक्षण डेटा की कमी। (ख) डेटा में उच्च विविधता।

(क) सीसीई डेटा से फसल उपज के प्लॉट स्तर के अनुमान का उपयोग करके AI/ML दृष्टिकोण पर परिणाम

- अध्ययन में सभी जिलों का सीसीई स्तर डेटा लिया गया है।
- ग्रामपंचायत स्तर की उपज सीसीई स्तर की उपज को ग्रामपंचायत स्तर पर विस्तारित करके गणना की गई।
- कच्चे डेटा में विभिन्न रिमोट सेंसिंग पैरामीटर्स जैसे NDVI, NDWI, FAPAR, LAI, LSWI और सीसीई स्तर पर उपज शामिल हैं।
- स्वतंत्र वेरिएबल्स: NDVI, NDWI, FAPAR, LAI, LST
- निर्भर वेरिएबल: सीसीई स्तर की औसत उपज

- डेटा को 70:30 के अनुपात में यादृच्छिक रूप से प्रशिक्षण और परीक्षण डेटा में विभाजित किया गया। निम्नलिखित मॉडलिंग एल्गोरिदम का उपयोग किया गया –
 - रैंडम फ़ॉरेस्ट रिग्रेशन
 - रैंडम फ़ॉरेस्ट ने बेहतर प्रदर्शन दिखाया। सभी जिलों के लिए R^2 मान और MAPE मान निम्नलिखित तालिका में दिए गए हैं:

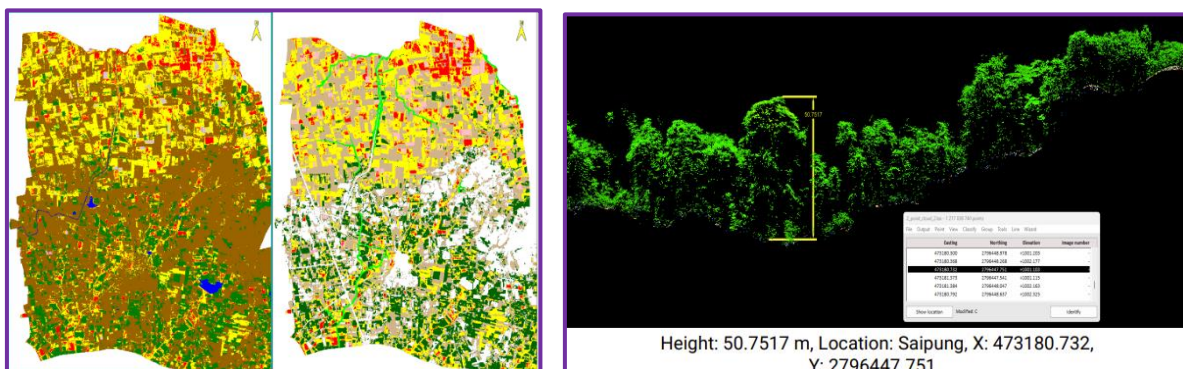
जिला (फसल)	R^2	मानचित्र मूल्य (%)
आगरा (सरसों)	0.87	4.91
अहमदनगर (ज्वार)	0.82	23.55
अलवर (सरसों)	0.85	19.81
बेलगावी (मक्का)	0.87	14.47
बेलगावी (ज्वार)	0.86	57.31
एलुरु (मक्का)	0.84	17.01
कुशीनगर देवरिया (सरसों)	0.88	4.93
मोरेना (सरसों)	0.86	10.67
रेवाड़ी (सरसों)	0.84	19.72
सोलापुर (ज्वार)	0.87	18.93
थूथुकुड़ी (मक्का)	0.87	12.73
टोंक (सरसों)	0.85	52.37
विजयपुरा (ज्वार)	0.87	1.67

7. मेघालय के लिए वन सर्वेक्षण और मानचित्रण: हाइब्रिड दृष्टिकोण (एयरबोर्न सेंसिंग/हेलीकॉप्टर/UAV) का उपयोग करके कार्बन वित्तपोषण और फाइटो-डायवर्सिटी हीट मैप का विश्लेषण

नेक्टर को मेघालय जैव विविधता बोर्ड (MBB), मेघालय सरकार द्वारा इस परियोजना का कार्य सौंपा गया है। इस परियोजना का उद्देश्य है: मेघालय राज्य में प्रस्तावित आरक्षित वन क्षेत्र का एयरबोर्न सेंसिंग/हेलीकॉप्टर/UAV आधारित वन सर्वेक्षण और निरीक्षण करना। अत्यधिक उच्च-रिज़ॉल्यूशन LiDAR सर्वेक्षण और हाइपरस्पेक्ट्रल मानचित्रण और विश्लेषण के माध्यम से कार्बन स्टोकेशन और वनस्पति विविधता का विश्लेषण करना। फाइटो-डायवर्सिटी हीट मैपिंग करना और वन क्षेत्रों का कार्बन वित्तपोषण विश्लेषण करना। राज्य के पूरे वन क्षेत्र के लिए एक वन डेटाबेस बनाना। वन क्षेत्र की उचित सीमांकन, पेड़ की प्रजातियों का स्पेक्ट्रल लाइब्रेरी और वन स्वास्थ्य मूल्यांकन करना।

परियोजना को सफलतापूर्वक लागू किया गया, जिसमें लगभग 600 वर्ग किमी क्षेत्र को LiDAR, हाइपरस्पेक्ट्रल और RGB सेंसर के माध्यम से UAV और हेलीकॉप्टर प्लेटफॉर्म पर एकत्रित किया गया। एयरियल सेंसिंग डेटा को मेघालय के विभिन्न क्षेत्रों में 32 आरक्षित वन क्षेत्रों पर एकत्रित किया गया और डेटा सेट्स को बहुत उच्च रिज़ॉल्यूशन (10 सेमी से 1 मीटर) में कई उत्पादों के लिए प्रोसेस और

विश्लेषित किया गया। वितरित उत्पादों में पेड़ की ऊँचाई, पेड़ की प्रजातियाँ, कैनोपी घनत्व, डिजिटल ऊँचाई डेटा और अन्य भूमि उपयोग और भूमि कवर जानकारी शामिल है। डेटा को नेक्टर की तकनीकी टीम और विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थानों (NESAC, JNU, NEHU) से नियुक्त बाहरी विशेषज्ञों की करीबी निगरानी के साथ मान्यता दी गई।



परिणामः

• ऊपर की ओर जैव द्रव्यमान (AGB) और कार्बन संधारण (CS) क्षमता को विभिन्न मौसमों (मानसून से पहले और बाद में) के लिए गणना की गई, और पाया गया कि मानसून के बाद दोनों AGB और CS में वृद्धि हुई है, जो मेघालय के जंगलों में मौसमी परिवर्तनों का संकेत देती है। सबसे अधिक ऊपर की ओर जैव द्रव्यमान तुरा पीक (5696 किलोग्राम), बाघमारा और गिट्टिंगिरी में पाया गया। अन्य उच्च रेंज AGB वन हैं: दिलमा, इमंगरे, नार्पुह 1, नार्पुह 2, नोंगखिलेम, राजशिमला, रेवाक, रियात खवान, रोंगेनगेरे, सैपुंग और सोंगसाक। इसके अतिरिक्त, कार्बन संधारण बाघमारा (15122 टन/हेक्टेयर), तुरा पीक, गिट्टिंगिरी, नार्पुह 1, नार्पुह 2, अंगरातोली, दारुगिरी, दिलमा, इल्डेक, इमंगरे, नोंगखिलेम, राजशिमला, रेवाक, रियात खवान, रोंगेनगेरे, सैपुंग और सोंगसाक के जंगलों में उच्च रेंज में है।

• वन संरचना के अनुसार, LiDAR डेटा से यह पाया गया कि सबसे ऊँचे पेड़ तुरा पीक (67 मीटर), अंगरातोली, बाघमारा, डाम्ब्रू, दारुगिरी, चिमाबांशी, धिमा, दिलमा, गिट्टिंगिरी, नार्पुह 2, नोंगखिलेम, रेवाक, सैपुंग, उन्मुक्ति, उमसॉ, रियात लाबान में हैं। वन छत कवर के अनुसार, हम बाघमारा, डाम्ब्रू, अंगरातोली, दिलमा-राजशिमला, गिट्टिंगिरी, इमंगरे, नार्पुह 1 और 2, नोंगखिलेम, रियात लाबान, सैपुंग और तुरा पीक को छत के सबसे विस्तृत कवर और घनत्व के साथ विभाजित कर सकते हैं।

- हाइपरस्पेक्ट्रल डेटा का उपयोग संरक्षित जंगल के प्रजातियों को मानचित्रित करने के लिए किया गया और हमने 400 से अधिक प्रजातियों को मानचित्रित किया है (इनकी सूची प्रजाति डेटाबेस में दी गई है)। हमने पाया है कि संरक्षित वन (RFs) असमान और समान हैं। असमान: उन्मुक्ति, उमसाँ, तुरा पीक, अपर शिलॉन्ग, लतिकोर, रियात लाबान, रियात खवान, ग्रीन ब्लॉक। समान: अंगरातोली, बाघमारा, नोंगखिलेम, डाम्बू, दारुगिरी, धिमा-चिमाबांशी, डिब्रूहिल्स, गिट्टिंगिरी, राजशिमला, सोंगसाक, इल्डेक आदि। इसके अलावा, हमने देखा है कि संरक्षित वन के किनारों से स्पष्ट अतिक्रमण हो रहा है (यह भूमि उपयोग और भूमि कवर में परिवर्तन के दौरान देखा गया है)। अधिकतम क्षेत्रों में 3-परत पत्तियों का आवरण है और उनमें से कुछ 4-परत पत्तियों के आवरण में हैं। इसके अलावा, हमने यह भी पाया कि शोरिया रोबस्टा, टेक्टोना ग्रैंडिस, केरीया अबोरीया, मैगनोलिया होडगसोनी, आर्टोकार्पस एसएसपी, एक्सबकलैंडिया पॉपलनिया, बाउहिनिया वेरिगेट, शिमा

वालिची और लिक्सिया मोनोपेटाला जैस कार्यशालाएं उच्च कार्बन संधारण क्षमता रखती हैं। इन जानवरों का उपयोग वनीकरण के लिए किया जा सकता है।

- वन के स्वास्थ्य का मानचित्रण किया गया है और यह देखा गया है कि समग्र वन स्वस्थ पक्ष पर है। इन सभी में, सबसे स्वस्थ जंगल बाघमारा, डाम्ब्रू, रोंगेनगोरे, सैपुंग, सोंगसाक, तुरा पीक, उमसाँ, अपर शिलॉन्ग, रियात लाबान, ग्रीन ब्लॉक, लैतकोर, डिब्रू हिल, उन्मुक्ति हैं। अन्य जंगलों में कुछ समस्याएँ हैं जैसे झूमिंग, वन अग्नि, मौसमी परिवर्तन तत्व, जलवायु परिवर्तन, पत्ते का अल्बेडो, और मानव हस्तक्षेप।

8. मेघालय में कृषि भूमि पर NEST फाउंडेशन के साथ एरियल ड्रोन सर्वेक्षण परियोजना

नॉर्थ ईस्ट सोशल ट्रांसफॉर्मेशन फाउंडेशन (NESTF) एक गैर-लाभकारी संगठन है जो गुवाहाटी में स्थित है, और यह विभिन्न विकास क्षेत्रों में, विशेष रूप से कृषि और संबंधित क्षेत्रों में, उत्तर-पूर्व समुदाय की सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए काम करता है। संगठन ने नेक्टर से UAV/ड्रोन आधारित उच्च-संवेदनशीलता मानचित्रण सेवा/गतिविधि की आवश्यकता जताई है, जो केंद्र की क्षमताओं पर आधारित है। नेक्टर ने मेघालय राज्य के विभिन्न चार जिलों - वेस्ट खासी हिल्स, ईस्ट खासी हिल्स, वेस्ट जयंतिया हिल्स और ईस्ट जयंतिया हिल्स में सफलतापूर्वक एरियल ड्रोन सर्वे पूरा किया और लगभग 4500 हेक्टेयर की विघटित भूमि को कैप्चर किया, जिसका उपयोग आर्थोरेक्टिफाइड छवियों, DSM और DTM के निर्माण के लिए किया गया, ताकि भूमि तैयारी और कांटूर ट्रेचेस के लिए वैज्ञानिक और इंजीनियर्ड वृक्षारोपण प्रबंधन प्रक्रिया के माध्यम से मूल वन विकसित किए जा सकें।

विशिष्ट क्षेत्रों में आवश्यकतानुसार ग्राउंड कंट्रोल प्वाइंट्स की सर्वे ग्रामपंचायत S विधि के माध्यम से की गई। डेटा सेट को 20 सेंटीमीटर से कम की ऊर्ध्वाधर सटीकता के साथ DSM और DTM के निर्माण के लिए प्रोसेस किया गया। प्रत्येक साइट के लिए 1 मीटर अंतराल में कंटूर मानचित्र तैयार किए गए और ग्राहक को सौंपे गए। स्थानीय संसाधनों और समुदाय के लोगों को मानचित्रण प्रक्रिया में शामिल किया गया। इस प्रक्रिया के दौरान, ड्रोन प्रौद्योगिकी और इसके प्रति जागरूकता को समुदाय के हिस्सेदारों को प्रदान किया गया, जिन्होंने सक्रिय रूप से भाग लिया और ऐसे वृक्षारोपण अभियान को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

नेक्टर ने इस नवाचारी कार्यक्रम का सहायता सभी प्रकार की सहायता प्रदान करके किया, जिसमें LULC मानचित्र, साइट उपयुक्तता और स्थानीयता में स्वदेशी पौधों की प्रजातियों के माध्यम से वृक्षारोपण कार्यक्रम की योजना शामिल है। उच्च-संवेदनशीलता ड्रोन डेटा को कई आउटपुट के लिए प्रोसेस किया गया और इसे नेस्ट फाउंडेशन को प्रस्तुत किया गया।



चित्र: मेघालय के विभिन्न स्थानों पर फील्ड ड्रोन सर्वे और स्थानीय समुदायों के लिए जागरूकता कार्यक्रम

9. ओडिशा में महानदी कोलफील्ड्स खनन क्षेत्र का एरियल ड्रोन सर्वे:

महानदी कोलफील्ड्स लिमिटेड (MCL) भारत की प्रमुख कोल उत्पादन कंपनियों में से एक है। MCL योजना के अनुसार कोयला और कोयला उत्पादों का उत्पादन और विपणन कुशलतापूर्वक और आर्थिक रूप से, पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता के साथ, सुरक्षा, संरक्षण और गुणवत्ता का ध्यान रखते हुए करता है। कोल खनन क्षेत्रों में ड्रोन सर्वे एक व्यापक पहल का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य डेटा संग्रहण और प्रबंधन की सटीकता और दक्षता को बढ़ाना है।

यह परियोजना नेक्टर, जो एक प्रमुख ड्रोन सेवा प्रदाता है द्वारा की गई, और इसके औद्योगिक साझेदार और महानदी कोलफील्ड्स लिमिटेड के सहयोग से ओडिशा के सुंदरगढ़ और झारसुगुड़ा जिले में कार्यान्वित की गई। नेक्टर ने 9000 हेक्टेयर (वृहद मानचित्रण) खनन क्षेत्रों का RGB सेंसर के साथ एरियल ड्रोन सर्वे सफलतापूर्वक पूरा किया। इस परियोजना में मास्टर कंट्रोल पॉइंट (MCPs), स्थायी बेंचमार्क (PBMs), और ग्राउंड कंट्रोल पॉइंट्स (GCPs) की स्थापना एक महत्वपूर्ण घटक है। इसने Dग्रामपंचायत S सर्वे कार्य पूरा किया, जो मुख्य रूप से उच्च सटीकता वाली स्थानिक स्थिति पर केंद्रित है, जो कोयला खदान क्षेत्र के विकास और आयतन अनुमान के लिए सहायक है। Dग्रामपंचायत S के साथ-साथ पूरे क्षेत्र का एरियल ड्रोन सर्वे भी किया गया, जिसका उपयोग विभिन्न साइट पहचान और कोयला क्षेत्र की खनन गतिविधियों के लिए किया जाएगा। सर्वेक्षण के परिणामस्वरूप 519 RTK आधारित ग्राउंड कंट्रोल पॉइंट्स, 29 स्थायी बेंचमार्क, और 12 मास्टर कंट्रोल पॉइंट्स प्राप्त हुए।



चित्र: ड्रोन तकनीक के माध्यम से सर्वेक्षण कार्य के मूल्यांकन के लिए MCL अधिकारियों के साथ ड्रोन टीम

10 . खासी मंदारिन ऑरेंज की गुणवत्ता मूल्यांकन वारमावसों और मावसकेइलम गांव, मेघालय में ड्रोन छवियों के माध्यम से:

जापान आधारित कंपनी (कैस्ले इंडिया प्रा. लिमिटेड), जो विभिन्न अनुप्रयोगों के लिए ड्रोन तकनीक का उपयोग करने में अपनी नवोन्मेषी विधियों के लिए जानी जाती है, ने मेघालय में एक पायलट प्रोजेक्ट के अन्तर्गत समय श्रृंखला ड्रोन छवियों का उपयोग किया। इस परियोजना का संचालन नेक्टर के साथ साझेदारी में और स्थानीय समुदाय के किसानों को शामिल करते हुए किया गया। नेक्टर ने ड्रोन उड़ान के संचालन में सहायता प्रदान किया, जिसका उद्देश्य खासी मंदारिन फल फलों की फसल की स्वास्थ्य निगरानी और विकास पहलों को सक्षम करना था। इस परियोजना में ड्रोन तकनीक के माध्यम से उच्च-रिज़ॉल्यूशन वायवीय डेटा कैप्चर करने के लिए AI/ML और ब्लॉकचेन जैसी उन्नत तकनीक का उपयोग किया गया, जिसमें फसल की मात्रा और गुणवत्ता के मूल्यांकन के लिए विभिन्न समय श्रृंखलाओं की छवियों का संग्रह किया गया।



चित्र: खासी मंदारिन संतरे की फसलों पर ड्रोन द्वारा कैप्चर की गई उच्च रिज़ॉल्यूशन छवियाँ

11 . ग्राउंड कंट्रोल सर्वेक्षण DGPS अवलोकन के माध्यम से: DGPS सर्वेक्षण कार्य पर दो परियोजनाएँ पूर्वोत्तर संसाधन व्यक्ति को संलग्न करके शुरू की गईं:

डीजेपीएस (डिफरेंशियल ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम) तकनीक के माध्यम से किए गए दो प्रोजेक्ट्स में कर्नाटका और केरल में अत्यधिक सटीक स्थान माप सर्वेक्षण किए गए। इन सर्वेक्षणों ने अत्यधिक सटीकता के साथ स्थानिक डेटा प्रदान किया, जो शहरी योजना, अवसंरचना विकास और विभिन्न विकासात्मक परियोजनाओं के लिए महत्वपूर्ण था। डीजेडीपीएस तकनीक का उपयोग करके इन सर्वेक्षणों ने अद्वितीय सटीकता प्राप्त की, जिससे निर्णय-निर्माण और रणनीतिक योजना में मूल्यवान डेटा प्राप्त हुआ।

इन उच्च-सटीकता स्थान माप सर्वेक्षणों का मुख्य उद्देश्य कर्नाटका और केरल में शहरी योजना पहलों, अवसंरचना विकास परियोजनाओं और अन्य विकासात्मक प्रयासों की सहायता करना था। डीजेडीपीएस तकनीक की क्षमताओं का उपयोग करके, हितधारकों को स्थानिक डेटा पर व्यापक जानकारी प्राप्त करने की क्षमता मिली, जिससे सूचित निर्णय-निर्माण प्रक्रियाओं में सुधार हुआ और विकासात्मक हस्तक्षेपों की प्रभावशीलता बढ़ी। इन सर्वेक्षणों की सफलतापूर्वक पूर्णता ने यह भी दर्शाया कि उन्नत तकनीकों का उपयोग जटिल चुनौतियों को

संबोधित करने और स्थायी वृद्धि और प्रगति को प्रोत्साहित करने में कितना महत्वपूर्ण है। इन सर्वेक्षणों से उत्पन्न राजस्व न केवल उनकी आर्थिक संभावनाओं को दर्शाता है बल्कि सटीकता और प्रभावशीलता के साथ विकासात्मक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए अत्याधुनिक तकनीकों में निवेश की महत्वपूर्णता को भी उजागर करता है।



12. मेघालय के वन मानचित्रण परियोजना में क्वाड्रंट सर्वेक्षण

एक व्यापक वन सर्वेक्षण पहल के अन्तर्गत, क्वाड्रंट विधि का उपयोग करते हुए, शोधकर्ताओं ने मेघालय के वन क्षेत्रों में विस्तृत फील्डवर्क किया, जिसमें विभिन्न घने वन क्षेत्रों में 32 से अधिक प्लॉट कवर किए गए। इस अध्ययन ने क्वाड्रंट सैंपलिंग विधि को अपनाया, जो पारिस्थितिकीय अनुसंधान में एक व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त तकनीक है, ताकि वनस्पति विशेषताओं जैसे कि पेड़ की प्रजातियों की संरचना, व्यास और ऊंचाई पर व्यवस्थित रूप से डेटा एकत्र किया जा सके। रिजर्व वन क्षेत्रों के भीतर किए गए फील्ड सर्वेक्षणों का उद्देश्य वन पारिस्थितिकी तंत्र की गतिशीलता और जैव विविधता पर विस्तृत जानकारी प्राप्त करना था, जो सूचना-आधारित संरक्षण और प्रबंधन रणनीतियों के लिए महत्वपूर्ण है। डेटा संग्रहण फरवरी के दौरान किया गया, जिसे मौसम की अनुकूल परिस्थितियों और न्यूनतम विघ्नों के लिए चुना गया, जिससे सटीक और विश्वसनीय डेटा प्राप्त किया जा सका।

मेघालय में वन सर्वेक्षण केवल बुनियादी वनस्पति डेटा संग्रहण तक सीमित नहीं था, बल्कि अतिरिक्त सैंपलिंग प्रयासों को भी शामिल किया गया ताकि पत्तियों के नमूनों के माध्यम से पेड़ की प्रजातियों की पहचान की जा सके। यह सूक्ष्म दृष्टिकोण सर्वेक्षण के निष्कर्षों की सटीकता और व्यापकता को बढ़ाता है, और पारिस्थितिकी तंत्र की निगरानी और प्रबंधन के लिए मूल्यवान जानकारी प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, एकत्रित डेटा का उपयोग महत्वपूर्ण मापदंडों जैसे कि ऊपर की ओर की जैवमास, नीचे की ओर की जैवमास, और मिट्टी के कार्बन स्टॉक्स का अनुमान लगाने के लिए किया गया, स्थापित अलोमेट्रिक समीकरणों और रूपांतरण कारकों का उपयोग करके। ये अनुमान वन पारिस्थितिकी तंत्र के कार्बन सीक्वेस्ट्रेशन क्षमता का आकलन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और क्षेत्र में पारिस्थितिकीय निगरानी प्रयासों की सटीकता और विश्वसनीयता को बढ़ाते हैं।



अध्याय 4: आंतरिक परियोजनाएं

1. परियोजना का नाम: वर्ष 2023-2024 के दौरान पूर्वोत्तर भारत में केसर की खेती परियोजना

कार्यान्वयन स्थल: अरुणाचल प्रदेश (पश्चिम कामेंग, शि-योमी, पश्चिम कामेंग), मेघालय (पूर्वी खासी हिल्स जिला, पूर्वी-पश्चिमी खासी हिल्स जिला), सिक्किम (पूर्वी जिला, गेजिंग), मिजोरम (सेरछिप)।

कार्यान्वयन एजेंसी: नेक्टर और अरुणाचल राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन, बागवानी निदेशालय, अरुणाचल प्रदेश सरकार; बेथनी सोसाइटी, कृषि विज्ञान केंद्र, मेघालय बेसिन विकास प्राधिकरण, बागवानी निदेशालय, मेघालय सरकार; मिजोरम विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार परिषद (एमआईएसटीआईसी-MISTIC), मिजोरम और सिक्किम राज्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद (एसएससीएसटी-SSCST)।

उद्देश्य:

- पूर्वोत्तर भारत में कीमती फसल के रूप में वैज्ञानिक केसर की खेती को बढ़ावा देना, जिससे इसकी बढ़ती मांग को पूरा किया जा सके।
- पिछले अनुभव के आधार पर संभावित स्थलों पर बड़े पैमाने पर खेती करना।
- इसकी विशाल क्षमता के माध्यम से केसर की खेती करने वाले समुदाय के बीच आजीविका का सृजन करना।
- इसकी खेती के लिए मानक पद्धतियों का विकास करना जो बढ़ती परिस्थितियों के अनुकूल हों, ताकि समान परिस्थितियों वाले अन्य क्षेत्रों में भी ऐसी पद्धतियों का पालन किया जा सके।
- उचित ब्रांडिंग और पैकेजिंग के साथ पूर्वोत्तर केसर को उचित बाजार लिंकेज प्रदान करना।

उपलब्धियाँ और परिणाम:

केसर की खेती परियोजना का उद्देश्य पूर्वोत्तर की कृषि क्षमता का दोहन करना है, ताकि किसानों और उद्यमियों के लिए केसर की खेती को एक स्थायी और आकर्षक उद्यम के रूप में अपनाया जा सके। कश्मीर से मानक संदर्भ का उपयोग करके रिमोट सेंसिंग और जीआईएस तकनीकों के बाद ऊंचाई, मिट्टी, वर्षा आदि जैसे मापदंडों का विस्तृत सर्वेक्षण करने के बाद केसर की खेती के स्थलों की पहचान की गई। वर्ष 2022-2023 के लिए मिट्टी के विश्लेषण, फूलों की उपज, कॉर्म की उत्तरजीविता दर और गुणन से संबंधित पूर्ण मूल्यांकन किया गया।

पायलट खेती से सकारात्मक परिणाम ने वर्ष 2023-2024 के लिए परियोजना को बड़े पैमाने पर आगे बढ़ाने का मार्ग प्रशस्त किया।

पंपोर केसर फार्मर्स प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड, कश्मीर से कुल 27 क्वंटल केसर खरीदे गए और पूर्वोत्तर राज्यों अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, मेघालय और मिजोरम में विभिन्न खेती स्थलों पर वितरित किए गए। वर्तमान में, बड़े पैमाने पर खेती दो स्थानों पर चल रही है जो अरुणाचल प्रदेश में मेनचुखा और सिक्किम में युक्सोम हैं। दोनों साइट पर लगभग 10 क्वंटल केसर कॉर्म के साथ और साइट की उपयुक्तता को और अधिक मान्य करने के लिए मध्यम संभावित साइटों में पायलट खेती जारी रखी गई है, जैसे कि एसएससीएसटी (MISTIC), के सहयोग से सिक्किम में सजोंग और फेंगला के सहयोग से मिजोरम में उत्तरी वेनलीफेई; बागवानी निदेशालय, सरकार के सहयोग से अरुणाचल प्रदेश में दिरांग और शेरगांवा अरुणाचल प्रदेश और ASrLM की मेघालय में, पूर्वी और पश्चिमी खासी पहाड़ी जिलों में कुछ स्थानों ने संभावनाएँ दिखाई दी हैं। वर्तमान में, ऊपरी शिलांग में कृषि विज्ञान केंद्र और प्रायोगिक अनुसंधान केंद्र, उम्पलिंग में बेथनी सोसाइटी, मैरांग में वेलस्प्रींग्स सोशल सर्विस सोसाइटी और लैटकोर, नोंगशिलांग, जोंगशा, नोंगक्रेम और थांगशिंग के 5 व्यक्तिगत किसान नेक्टर के सहयोग से केसर की खेती में लगे हुए हैं। नेक्टर द्वारा कई अन्य गतिविधियाँ आयोजित की गईं, वास्तविक रोपण से पहले नेक्टर द्वारा एक जागरूकता सह किसान कार्यक्रम आयोजित किया गया और किसानों को केसर के महत्व और इसके पेकेजिंग के तरीके के बारे में बताया गया।

प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष लाभार्थी: अरुणाचल प्रदेश: 46, मेघालय: 15, सिक्किम: 22





चित्र: कार्यान्वयन के विभिन्न चरणों के दौरान पूर्वोत्तर में केसर की खेती परियोजना.

2. परियोजना का नाम: मावकिनरू, मेघालय में ग्रामीण सशक्तिकरण और विकास के लिए सामुदायिक रेडियो।

कार्यान्वयन स्थल: पूर्वी खासी हिल्स, मावकिन्ने, मेघालय।

उद्देश्य:

- सामुदायिक रेडियो कम दूरी का, गैर-लाभकारी रेडियो स्टेशन या चैनल है जो किसी विशेष स्थान में रहने वाले लोगों की सूचना संबंधी जरूरतों को स्थानीय संदर्भ के लिए सबसे ज्यादा अनुकूल भाषाओं और प्रारूपों में पूरा करता है।
- सामुदायिक रेडियो का उद्देश्य सामाजिक और आर्थिक विकास लाना है।
- इसका उद्देश्य प्रासंगिक सामाजिक मुद्दों को उजागर करना, समुदाय के साथ नवीनतम जानकारी साझा करना, समुदाय को अपनी राय और समस्याएँ व्यक्त करने के लिए एक मंच प्रदान करना और अपनी खुद की रचनात्मक क्षमताओं का पता लगाने के लिए एक मंच प्रदान करना है।
- सामुदायिक रेडियो पर कई तरह के कार्यक्रम विकसित और प्रसारित किए जा सकते हैं, जो निम्नलिखित पहलुओं को संबोधित करते हैं जैसे ग्रामीणों को सूचना तक पहुँच प्रदान करना, रेडियो सक्षम साक्षरता कार्यक्रम बनाना, छात्रों और समुदाय को इस

- रचनात्मक मीडिया की क्षमता का दोहन करने के लिए एक मंच प्रदान करना, प्रासंगिक सामाजिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करके क्षेत्र का सामाजिक विकास, स्वास्थ्य देखभाल, परामर्श, व्यावसायिक प्रशिक्षण पर कार्यक्रम बनाना।

उपलब्धियाँ और परिणाम :

- नेक्टर ने मेघालय के पूर्वी खासी हिल्स के मावकिनरू ब्लॉक के जोंगक्शा गांव में "मावकिनरू 89.60 FM सामुदायिक रेडियो" नामक एक सामुदायिक रेडियो स्टेशन (CRS) लॉन्च किया है।
- CRS कृषि, ग्रामीण आजीविका और सामुदायिक विकास को बढ़ावा देने में मदद करेगा, जिससे लगभग 35,000 लोगों की आबादी वाले 100 से अधिक अलग-थलग गांवों को लाभ होगा।
- यह मेघालय का पहला सामुदायिक रेडियो स्टेशन है। प्रस्तावित कार्यक्रम शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, कृषि, स्थानीय लोक, कला, संस्कृति, पारंपरिक ज्ञान, ग्रामीण और सामुदायिक विकास से संबंधित मुद्दों पर केंद्रित हैं।
- यह समस्याओं और सीमा, मुद्दों आदि से संबंधित कार्यक्रमों को प्रसारित करके वंचित समूह की आवाज़ को प्रोत्साहित करेगा, अल्पसंख्यक समूहों के सांस्कृतिक दृष्टिकोण और हितों को बढ़ावा देगा और बेहतर सामाजिक भागीदारी और बेहतर शिक्षा और स्वरोजगार के ज्ञान के साथ स्वदेशी ग्रामीण लोगों की परंपरा को लोकप्रिय बनाएगा।

प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष लाभार्थी: यह पहल वर्तमान में स्थानीय अनुसूचित जनजाति समुदाय के 3 व्यक्तियों को प्रत्यक्ष रोजगार लाभ के रूप में रोजगार प्रदान कर रही है और रेडियो आउटरीच सेवा के माध्यम से आसपास के क्षेत्रों के निवासियों को अप्रत्यक्ष लाभ भी प्रदान कर रही है।



चित्र: मावकिनरू 89.60 FM सामुदायिक रेडियो

3. परियोजना का नाम: स्टैंडअलोन सोलर डिहाइड्रेटर का संचालन और रखरखाव

कार्यान्वयन स्थल: मेघालय- पश्चिमी जैतिया हिल्स और री भोई, नागालैंड पेरेन और वोखा, मिजोरम ख्वाजावल

पूर्वोत्तर क्षेत्र में बागवानी और कृषि फसलों की एक विस्तृत श्रृंखला है, जो कि बहुत ही उच्च गुणवत्ता वाली है। सुखाने का क्षेत्र महत्वपूर्ण है, जहाँ सामान्य प्रक्रिया खुले में धूप में सुखाने का है, जो न केवल समय लेने वाला है, बल्कि खाद्य सुरक्षा, गुणवत्ता और स्वच्छता के लिए भी खतरा है। निर्जलीकरण धूप में सुखाने की तुलना में बहुत अधिक प्रभावी प्रक्रिया है। पिछले कुछ वर्षों में सुखाने की तकनीक में बहुत अधिक प्रगति हुई है, जो कि सामान्य पारंपरिक विधि का स्थान ले रही है। सौर निर्जलीकरणकर्ता, उपज को सुखाने का एक विश्वसनीय और ऊर्जा-कुशल साधन प्रदान करके कृषि उत्पादकता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सौर ऊर्जा का उपयोग न केवल पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों पर निर्भरता को कम करता है, बल्कि पारंपरिक सुखाने के तरीकों से जुड़े पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने में भी योगदान देता है। उपरोक्त मूल्यांकन के साथ, सबसे उपयुक्त तकनीक की खोज की गई और तदनुसार स्टैंडअलोन सौर निर्जलीकरणकर्ताओं की स्थापना के साथ निष्कर्ष निकाला गया, जो अतिरिक्त लाभ प्रदान करता है, जहाँ सामग्री को सौर ऊर्जा के माध्यम से सुखाया जाता है और पंखे और ब्लोअर भी सिस्टम पैनल, बैटरी और हाइब्रिड इन्वर्टर द्वारा खिलाए गए सौर ऊर्जा का लाभ उठाते हैं। ये इकाइयाँ बिजली से भी चल सकती हैं, खासकर उन मामलों में जहाँ सूरज की रोशनी की कमी हो या बारिश का मौसम में, जो कि उत्तर-पूर्व भारत में आम तौर पर मौसम की स्थिति होगी। नेकार अपने संचालन, रखरखाव और ज़रूरतमंद लाभार्थियों के लिए स्टैंडअलोन सोलर डिहाइड्रेटर की प्रयोज्यता के विस्तार को सुनिश्चित करता है।



चित्र: मेघालय के पश्चिमी जयंतिया हिल्स में हल्दी सुखाने का कार्य

उद्देश्य:

- निर्जलीकरण के लिए सौर ऊर्जा के उपयोग को अधिकतम करने के लिए प्रणाली को डिजाइन करना, जबकि ऊर्जा की हानि को न्यूनतम करना।
- एक ऐसी प्रणाली विकसित करना जो छोटे पैमाने के किसानों या घरेलू उपयोग के लिए सस्ती और सुलभ हो
- निर्जलीकरण के लिए सौर ऊर्जा के उपयोग को अधिकतम करने के लिए प्रणाली को डिजाइन करना, जबकि ऊर्जा की हानि को न्यूनतम करना।
- एक ऐसी प्रणाली विकसित करना जो छोटे पैमाने के किसानों या घरेलू उपयोग के लिए सस्ती और सुलभ हो।
- यह सुनिश्चित करना कि डिहाइड्रेटर विभिन्न प्रकार के खाद्य उत्पादों, जैसे कि फल, सब्जियाँ और मसालों के लिए लाभकारी हो सकता है।
- संदूषण को रोकने और निर्जलित उत्पादों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए सुरक्षा सुविधाओं को लागू करना

उपलब्धियाँ और परिणाम:

- सौर डिहाइड्रेटर उन व्यक्तियों या समुदायों के लिए एक उत्कृष्ट विकल्प हैं जो मौसमी उपज को संरक्षित करने और विभिन्न खाद्य पदार्थों के शेल्फ जीवन को बढ़ाने के लिए पर्यावरण के अनुकूल और लागत प्रभावी तरीका चाहते हैं।
- सूर्य की शक्ति का उपयोग करके, ये उपकरण खाद्य संरक्षण के लिए एक स्थायी समाधान प्रदान करते हैं। लाभ आर्थिक दृष्टि से परे हैं।
- 15 डिहाइड्रेटर मेघालय, नागालैंड और मिजोरम में विभिन्न स्थानों पर लगाए गए हैं, जिससे किसानों को सुरक्षा और गुणवत्ता सुनिश्चित करते हुए सूखे उत्पादों के उत्पादन में सहायता मिली है।
- इन डिहाइड्रेटर से अब तक निकलने वाले उत्पादों में लकड़ोंग हल्दी, अदरक, कटहल के बीज, मिर्च, बांस की टहनी और करौंदा शामिल हैं।
- प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष लाभार्थी: मिजोरम: 7, मेघालय: 253, नागालैंड: 800

4. परियोजना का नाम: नेक्टर, सरसों और शहद मिशन वर्ष 2023-2024

कार्यान्वयन स्थल: असम (उदलगुरी, दरांग, धेमाजी, लखीमपुर, डिब्रूगढ़, बक्सा), अरुणाचल प्रदेश: पापुमपारे जिला), नागालैंड (फेक जिला), मेघालय (री-भोई जिला), मणिपुर (सेनापति जिला)

उद्देश्य: नेक्टर ने 2022-2023 में पू. पूर्वोत्तर क्षेत्र में वैज्ञानिक मधुमक्खी पालन की विभिन्न गतिविधियों को लागू करने के लिए एक मिशन मोड परियोजना शुरू की है। मिशन मोड कार्यान्वयन नागालैंड और पूर्वोत्तर के अन्य हिस्सों में सफल पायलट परियोजनाओं और एनबीएचएम-NBHM के लिए निरंतर समर्थन के बाद शुरू किया गया है। नेक्टर ने दीमापुर में शहद परीक्षण प्रयोगशाला की स्थापना की है जिसका उद्घाटन 27 जून 2022 को माननीय केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर ने किया।

उपलब्धियाँ और परिणाम:

- वर्ष 2022-23 के दौरान, मधुमक्खी पालन की एक महत्वपूर्ण गतिविधि शुरू हुई, जिसमें सरसों की खेती वाले क्षेत्रों में चारा खोजने के लिए बड़े पैमाने पर मधुमक्खी कालोनियों की स्थापना की गई। उत्तर पूर्व भारत के कुछ संभावित जिलों में सीजन के दौरान समूहों में 2000 से अधिक मधुमक्खी कालोनियों को क्रियान्वित किया गया।
- मौसम में इन कॉलोनियों से लगभग 3 टन शहद का उत्पादन किया गया। परियोजना के सुचारू संचालन को सुनिश्चित करने के लिए, नेक्टर ने कार्यान्वयन एजेंसियों को सूचीबद्ध किया है, और साइटों की देखभाल कुशल और अर्ध-कुशल मधुमक्खी पालकों द्वारा की जा रही है। नियमित निगरानी और रिपोर्टिंग के लिए, नेक्टर द्वारा एक मोबाइल एप्लिकेशन विकसित की गई है जहाँ समय-समय पर वास्तविक समय की जानकारी एकत्र की जा रही है।
- वर्ष 2023-24 के दौरान, नेक्टर ने मुख्य रूप से क्षमता निर्माण पर ध्यान केंद्रित किया है और विभिन्न बीमारियों और लीन सीजन के दौरान मधुमक्खी प्रबंधन पर हितधारकों के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए कई ऑनलाइन दूरस्थ कोचिंग सत्र आयोजित किए।
- नेक्टर ने वर्ष 2023-24 के दौरान क्षेत्र के मधुमक्खी पालकों के लिए दो बैचों का व्यावहारिक प्रशिक्षण भी आयोजित किया है।
- नेक्टर द्वारा उत्तराखंड के राज्यपाल की मधुमक्खी पालन सलाहकार डॉ. लक्ष्मी राव के नेतृत्व में बिस्वनाथ चरियाली, असम में मधुमक्खी पालन और इसके मूल्य संवर्धन पर 4 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
- नेक्टर द्वारा आरआरटीसी उमरान, मेघालय में वैज्ञानिक मधुमक्खी पालन और मूल्य संवर्धन पर एक और 5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन नीदरलैंड के PUM से मधुमक्खी पालन पर सलाहकार श्री जान-एरी वैन बर्कुम के नेतृत्व में किया गया।
- नेक्टर ने शिलांग में स्थित अपने मुख्यालय में सभी आपूर्तिकर्ताओं और मधुमक्खी पालकों के साथ हितधारकों की एक बैठक भी आयोजित की है, जिसमें नेक्टर हनी मिशन के कार्यान्वयन के दौरान किसानों के सामने आने वाली समस्याओं पर चर्चा की गई और उनका समाधान किया गया।
- पूर्वोत्तर क्षेत्र से कुल 34 प्रशिक्षुओं ने उपरोक्त प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया है और उम्मीद है कि प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूरा करने वाले मधुमक्खी पालकों की उपज में भारी वृद्धि होगी।





5. असम के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का मानचित्रण: धुबरी और माजुली जिलों में एक पायलट अध्ययन

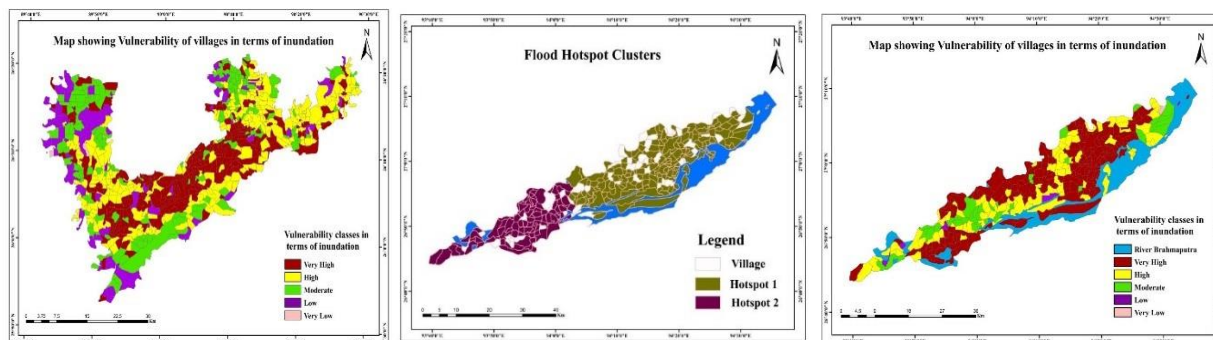
असम के जिलों में बार-बार बाढ़ आने के कारण जान-माल के नुकसान पर बढ़ती चिंता को ध्यान में रखते हुए सक्षम प्राधिकारी की मंजूरी से नेक्टर की आंतरिक टीम द्वारा मानचित्रण कार्य शुरू किया गया। यह गतिविधियाँ ओपन-सोर्स उपग्रह और उपलब्ध माध्यमिक जानकारी के आधार पर की जाती हैं और जिलों में बाढ़ से प्रभावित आबादी पर आपदा जोखिम में कमी और लचीलापन निर्माण जैसे समग्र उद्देश्यों के लिए भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जाता है।

उद्देश्य:

- रिमोट सेंसिंग-जीआईएस और यूएवी प्रौद्योगिकी का उपयोग करके बाढ़ प्रभावित और बाढ़ प्रवण क्षेत्रों का मानचित्रण।
- बाढ़ जोखिम मानचित्रण के माध्यम से बाढ़ प्रभाव आकलन और भेद्यता आकलन।
- जागरूकता, शिक्षा और कौशल विकास तथा क्षमता निर्माण के माध्यम से समुदायों की तन्यकता को बढ़ाना।
- बाढ़ प्रतिरोधी बुनियादी ढांचे को बढ़ाने के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देना।
- स्थायी बाढ़ और कटाव प्रबंधन के लिए नवीन इनपुट प्रदान करना।

उपलब्धियाँ और परिणाम:

- धुबरी जिले के 847 गांवों में से 291 गांव अत्यधिक संवेदनशील श्रेणी में हैं, 295 गांव अधिक संवेदनशील श्रेणी में, 161 गांव मध्यम संवेदनशील श्रेणी में, 97 गांव निम्न संवेदनशील श्रेणी में, और 3 गांव बहुत निम्न संवेदनशील श्रेणी में आते हैं।



चित्र: परियोजना के अंतर्गत असम में बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का मानचित्रण।

- माजुली जिले के 321 गांवों में से 168 गांव अत्यधिक संवेदनशील श्रेणी में हैं। 90 गांव आधिक संवेदनशील श्रेणी में हैं, 37 मध्यम रूप से संवेदनशील, 5 कम संवेदनशील और 1 बहुत कम संवेदनशील श्रेणी में पाया गया। अध्ययन में पिछले 50 वर्षों (1972 से) में जिलों में आर्द्रभूमि सीमाओं में हुए परिवर्तन पर भी प्रकाश डाला गया है और उच्च संवेदनशीलता से प्रभावित अनुमानित जनसंख्या (जनगणना 2011) क्रमशः माजुली और धुबरी में 1.36 लाख और 4.18 लाख है। उपरोक्त विश्लेषण का सत्यापन आगामी बाढ़ के मौसम में किया जाएगा।

6. नेक्टर, शिलांग कार्यालय और नेक्टर, बायो टेक पार्क, गुवाहाटी कार्यालय में आईटी अवसंरचना का उन्नयन।

हाल ही में नेक्टर शिलांग और बायो टेक पार्क, गुवाहाटी में बुनियादी ढांचे के उन्नयन के अंतर्गत नई इमारत में एक नए सर्वर रूम की सफलतापूर्वक स्थापना की गई है, जो नवीनतम स्विच और फाइबर केबल से युक्त है। इस परियोजना का उद्देश्य सभी डेस्कटॉप और लैपटॉप के लिए LAN कनेक्टिविटी को बढ़ाना है, साथ ही पूरे परिसर में अच्छा WiFi कनेक्शन भी उपलब्ध कराना है। नए सर्वर रूम को बेहतरीन प्रदर्शन और विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए अत्याधुनिक उपकरणों के साथ डिज़ाइन किया गया है।

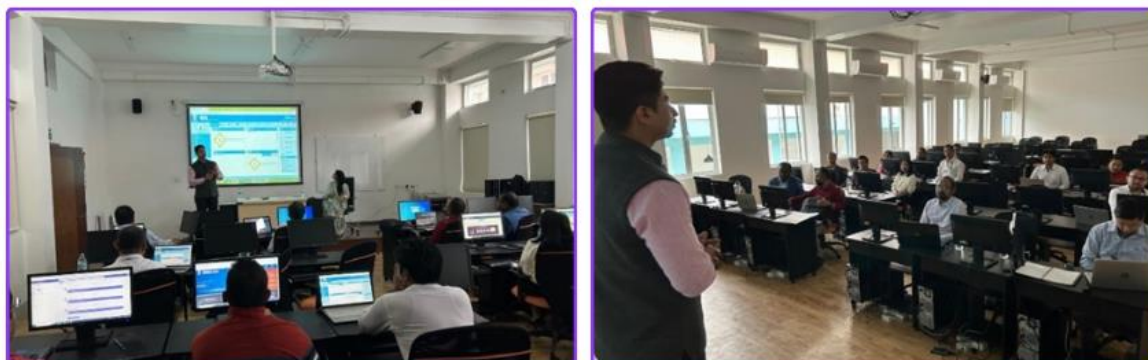




चित्र: नेक्टर कार्यालयों में प्रमुख आईटी प्रणालियाँ और सम्मेलन कक्ष की स्थापना।

7. नेक्टर कार्यालय हेतु ई-ऑफिस कार्यान्वयन।

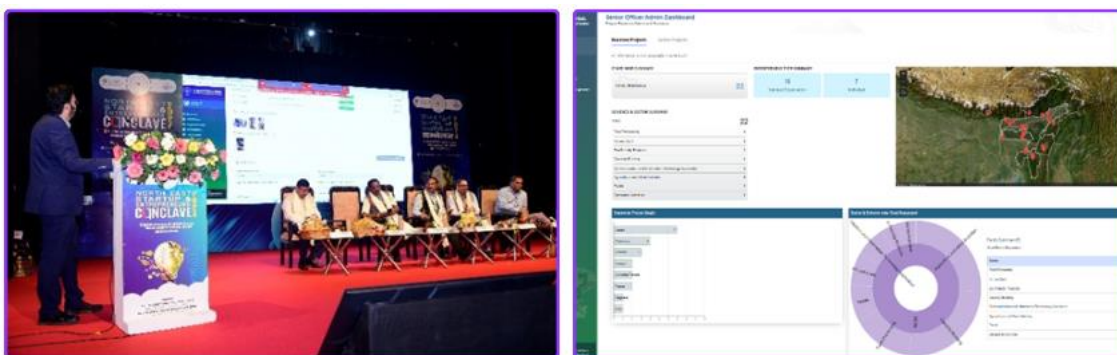
- नेक्टर ने शिलांग, दिल्ली, गुवाहाटी और अगरतला में अपने कार्यालयों में ई-ऑफिस शुरू किया है और उसे लागू किया है।
- 15 और 16 मई 2023 को नेक्टर के दिल्ली कार्यालय में और 24, 25 और 26 मई 2023 को शिलांग में ई-ऑफिस परियोजना प्रभाग NIC दिल्ली के संसाधन व्यक्ति द्वारा प्रशिक्षण दिया गया।
- जुलाई 2023 से, भौतिक फ़ाइल का उपयोग बंद कर दिया गया है और वर्तमान में सभी फ़ाइल मूवमेंट इलेक्ट्रॉनिक मोड के माध्यम से ई-ऑफिस के माध्यम से किए जा रहे हैं, जैसा कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार द्वारा निर्देशित है।
- तब से, यह देखा गया है कि वरिष्ठ अधिकारियों और सक्षम प्राधिकारी द्वारा निर्णय लेने में समय की कमी आई है, अधिकारियों को दूर से काम करने में सक्षम बनाया गया है, कागज़ के उपयोग को कम किया गया है, आधुनिक कार्यस्थलों में उत्पादकता और सहयोग को बढ़ाया गया है।
- अब तक ई-ऑफिस में 409 फाइलें बनाई जा चुकी हैं।



चित्र: नेक्टर के स्टाफ के लिए NIC दिल्ली के e-Office परियोजना प्रभाग द्वारा e-Office प्रशिक्षण आयोजित

8. परियोजना सूचना प्रबंधन प्रणाली (PIMS) का विकास

1. PIMS एक व्यापक वेब-आधारित एप्लिकेशन है जिसका उपयोग नेक्टर द्वारा समर्थित परियोजनाओं की निगरानी और मूल्यांकन के लिए किया जाता है, जिसे उत्तरी पूर्वी क्षेत्रों में विभिन्न हितधारकों द्वारा कार्यान्वित किया जाता है।
2. यह परियोजना अधिकारियों और टीमों को परियोजना कार्यान्वयनकर्ता के साथ परियोजना गतिविधियों, शेड्यूल, बजट और संचार को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने में मदद करेगा।
3. यह प्रणाली 27 और 28 मार्च 2024 को गुवाहाटी में आयोजित पूर्वोत्तर स्टार्टअप और उद्यमी सम्मेलन 2024 के दौरान लॉन्च की गई थी।



चित्र: गुवाहाटी में उत्तर पूर्वी स्टार्टअप और उद्यमी सम्मेलन के दौरान PIMS का शुभारंभ

अध्याय 5: नेक्टर अनुदान सहायता परियोजनाएं

वित्तीय वर्ष 2023-2024 के दौरान, नेक्टर ने अपने तीन प्राथमिक प्रभागों: आजीविका, संचार और भू-स्थानिक प्रभागों के तहत विभिन्न क्षेत्रों में फैली परियोजना मूल्यांकन समिति द्वारा सावधानीपूर्वक विचार करने के बाद अपनी टी. ओ. एस. एस. (TOSS) और बी. ए. ए. एन. एस. (BAANS) योजना के तहत विभिन्न एजेंसियों और लाभार्थियों को अनुदान-सहायता वित्तीय सहायता प्रदान की थी, जिनमें से कुछ को उनकी प्रगति के आधार पर निम्नलिखित खंडों में संक्षेप में वर्णित किया गया है।

- परियोजना का नाम-मिजोरम में एक चाय प्रसंस्करण इकाई की स्थापना।

मिजोरम के लेइसेंजो गांव के ग्रामीण पारंपरिक रूप से इसके सदियों पुराने जंगलों से चाय के पत्ते इकट्ठा करते हैं और चाय बनाने के लिए उन्हें सुखाते हैं। हालाँकि, आधुनिक मशीनरी और उपकरणों के बिना, ग्रामीण बहुत अधिक लाभ नहीं कमा सकते थे। इसके अलावा, ग्रामीणों के बीच ड्रायर की कमी के कारण बड़ी मात्रा में चाय की पत्तियां बर्बाद हो जाती हैं। लेइसेंजो के लोगों को एक समाधान प्रदान करने की कोशिश करते हुए, नेक्टर ने मिजोरम के चम्फाई जिले के लेइसेंजो गांव में एक चाय प्रसंस्करण इकाई स्थापित करने के लिए मैसर्स इको फार को सहयोग किया। चाय प्रसंस्करण इकाई सौर ड्रायर, इलेक्ट्रिक ड्रायर, चाय रोलर मशीन, चाय शाखा स्लाइसर और तौल तराजू जैसी सभी आधुनिक मशीनरी से लैस होगी। यह परियोजना भंडारण, पैकेजिंग और लेबलिंग जैसे कार्यों के लिए भारत सरकार के खाद्य प्रसंस्करण मंत्रालय से वित्त पोषित ज़ोरम मेगा फूड पार्क में लगभग 1500 वर्ग फुट की जगह प्राप्त करने में भी सक्षम रही है।



- परियोजना का नाम-अरुणाचल प्रदेश के दिबांग घाटी के अनिनी में दिबांग किसान उत्पादक सहकारी समिति लिमिटेड द्वारा उत्पादित बागवानी और औषधीय पौधों के लिए पूर्व-प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना।

25 लाख रुपये के अनुदान के साथ नेक्टर द्वारा समर्थित अनिनी में यह इकाई वर्तमान में कीवी और अन्य औषधीय पौधों के प्रसंस्करण के साथ पूरी तरह से काम कर रही है। इकाई ने इस मौसम के दौरान उपलब्ध कीवी से कीवी जैम, स्कवैश, सूखी कीवी के साथ-साथ वहां उपलब्ध औषधीय जड़ी-बूटियों के कई अन्य उत्पादों का उत्पादन किया है। उदाहरणों में डिहाइड्रेटेड वाटर ड्रॉपवॉर्ट लीफ पाउडर और ओएनन्थे जावानिका शामिल हैं जो पीलिया, उच्च रक्तचाप, पेट दर्द और हेपेटाइटिस को ठीक करने में मदद करते हैं। अन्य में थंबई पत्ती का पाउडर शामिल है जिसमें रोगाणुरोधी और एंटीफंगल गुण होते हैं और जो भूख बढ़ाने के लिए जाना जाता है, निर्जलित ऑक्सालिस्कोर्निकुलाटा (क्रिपिंग वुड्सरेल) पाउडर जिसका उपयोग आहार खाद्य पदार्थों के रूप में किया जा सकता है, निर्जलित सेंटेला एशियाटिका (गोटु कोला) पाउडर जो घावों को ठीक कर सकता है, त्वचा की बीमारियों, पेट की समस्याओं को ठीक कर सकता है और कई अन्य। वर्तमान में इलाके की महिलाओं सहित लगभग 9-10 लोग इकाई में सीधे कार्यरत हैं।



- परियोजना का नाम-आधारभूत संरचना वस्त्र और फैशन डिजाइनिंग का उन्नयन, रामकृष्ण मिशन आश्रम, सोहरा, मेघालय द्वारा प्रशिक्षण उत्पादन केंद्र

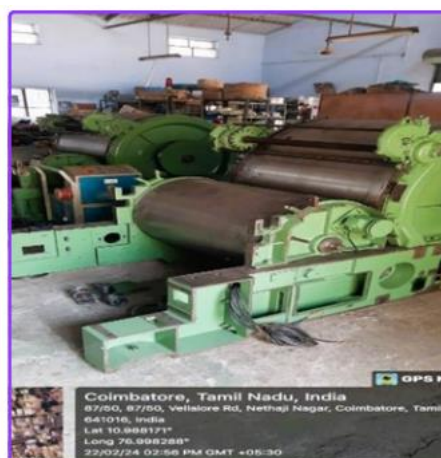
25 लाख रुपये के स्वीकृत अनुदान के साथ यह परियोजना केंद्र की गुणवत्ता में सुधार और उत्पादन क्षमता को बढ़ाने के लिए कमजोर वर्ग की महिलाओं को बुनाई और सिलाई में रोजगार योग्य कौशल प्रदान करने के उद्देश्य से शुरू की गई थी और नई औद्योगिक मशीनरी ने आश्रम के स्कूली छात्रों के लिए वर्दी बनाने का मार्ग प्रशस्त किया है। बुनाई/कपड़ा खंड के लिए, उत्पादन क्षमता को अनुकूलित करने के लिए मौजूदा करघों को चित्रित, चिकनाई और मरम्मत की गई थी। पेशानी मुक्त बुनाई के लिए आवश्यक सहायक उपकरण बदल दिए गए। हथकरघा की गति और गुणवत्ता में बेहतर परिणाम के लिए करघों के गियर की तकनीकी रूप से जांच और पॉलिश किया गया था और इस केंद्र ने रेशम और सूती साड़ियों, ईरी स्टोल, मिश्रित स्टोल आदि के साथ ऐक्रेलिक ऊन के माल बुनने वाले 16 बुनकरों के लिए रोजगार पैदा किया है जो आरकेएम के परिसर में शोरूम में प्रदर्शित किए जाते हैं जो पर्यटकों के लिए आकर्षण का स्रोत हैं और मेघालय के स्मृति चिन्ह के रूप में प्रदर्शित किए जाते हैं। सिलाई खंड के विस्तारित बुनियादी ढांचे ने खरीदी गई नई मशीनरी के विशेष सेट में 25-27 महिलाओं को नियुक्त किया है। इनके साथ-साथ, जनरेटर और आई. टी. समर्थन ने कपड़ा और फैशन डिजाइनिंग केंद्रों की लगातार उत्पादन गतिविधि और लॉजिस्टिक डेटा को बनाए रखने में महत्वपूर्ण सहायता की है।



● **परियोजना का नाम-मेघालय के भोइरिम्बोंग में एरी स्पन मिल की स्थापना**

मेघालय के भोइरिम्बोंग में स्थित, 25 लाख रुपये के अनुदान से समर्थित एक परियोजना रेशम उद्योग में क्रांति लाने के लिए तैयार है, विशेष रूप से पूर्वोत्तर के अहिंसा एरी रेशम पर ध्यान केंद्रित करने के लिए यह पहल इस क्षेत्र की समृद्ध विरासत और सांस्कृतिक महत्व के लिए एक प्रकाशस्तंभ के रूप में खड़ी है, जिसका उद्देश्य वैश्विक मंच पर अहिंसा एरी रेशम को पेश करना है। कोकून, सूत और कपड़े सहित उद्योग के विभिन्न क्षेत्रों के बीच की खाई को पाटने के लिए एक रणनीतिक दृष्टि के साथ, यह परियोजना स्थिरता स्थापित करने और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने का प्रयास करती है।

इसके मूल में, इस परियोजना का लक्ष्य 108 करोड़ रुपये के कच्चे कोकून उत्पादन का दोहन करना है, साथ ही साथ 123.5 मीट्रिक टन यार्न की स्थानीय मांग को पूरा करना है। उद्योग के सभी क्षेत्रों में उत्पादन बढ़ाकर, इसका उद्देश्य घरेलू जरूरतों को पूरा करना और वैश्विक बाजारों में विस्तार करना है। इसके अलावा, परियोजना रोजगार के अवसरों के सृजन, स्थानीय समुदायों को आजीविका प्रदान करने और सामाजिक-आर्थिक विकास में योगदान देने पर जोर देती है। इन ठोस प्रयासों के माध्यम से, इस पहल का उद्देश्य न केवल रेशम उद्योग को बढ़ावा देना है, बल्कि पूर्वोत्तर की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करना और उसका जश्न मनाना भी है, जिससे अहिंसा एरी सिल्क को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर स्थायी विलासिता के प्रतीक के रूप में स्थापित किया जा सके।



● **परियोजना का नाम-असम में बेकरी उद्योग में गेहूं के आटे को जोहा चावल के आटे से बदलना।**

25 लाख रुपये के स्वीकृत अनुदान के साथ, गेहूं के आटे को जोहा चावल के आटे से बदलकर बेकरी उद्योग में क्रांति लाने के लिए एक अग्रणी परियोजना शुरू की गई है। वित्तीय वर्ष के उत्तरार्ध में शुरू की गई यह परियोजना जोहा चावल आधारित कुकीज़ के उत्पादन पर केंद्रित है, जिसका उद्देश्य उपभोक्ताओं के लिए स्वास्थ्य लाभ को बढ़ाना है। जोहा चावल, जो अपने पोषण मूल्य और सुगंधित गुणों के लिए प्रसिद्ध है, पारंपरिक गेहूं के आटे का एक स्वस्थ विकल्प प्रदान करता है। जोहा चावल के आटे को बेकरी उत्पादों में शामिल करके, यह परियोजना न केवल स्वस्थ आहार विकल्पों को बढ़ावा देती है, बल्कि स्थानीय कृषि, विशेष रूप से जोहा चावल की खेती का भी समर्थन करती है, जो इस क्षेत्र के लिए स्वदेशी है।

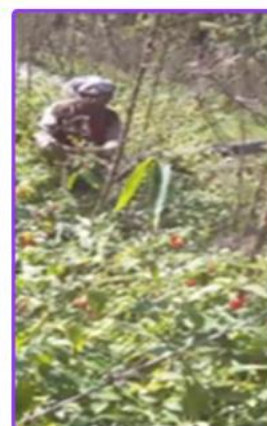
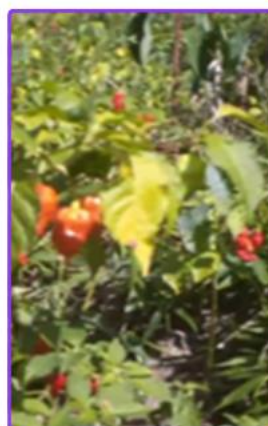


जोहा चावल आधारित कुकीज़ का उत्पादन आहार संबंधी चिंताओं को दूर करने और स्वस्थ जीवन शैली को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। ये कुकीज़ उपभोक्ताओं को एक स्वादिष्ट लेकिन पौष्टिक नाश्ते का विकल्प प्रदान करती हैं, जो जोहा चावल की अच्छाई से समृद्ध होती हैं। जोहा चावल के आटे के साथ गेहूं के आटे को बदलकर, यह परियोजना न केवल स्वास्थ्य के प्रति जागरूक उपभोक्ताओं की जरूरतों को पूरा करती है, बल्कि बेकरी उद्योग में उत्पादों के विविधीकरण में भी योगदान देती है। इसके अतिरिक्त, इस पहल में जोहा चावल की मांग पैदा करके स्थानीय अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहित करने की क्षमता है, जिससे किसानों का समर्थन होता है और टिकाऊ कृषि प्रथाओं को बढ़ावा मिलता है। कुल मिलाकर, यह परियोजना नवीन बेकरी उत्पादों के माध्यम से उपभोक्ता स्वास्थ्य को बढ़ाने और क्षेत्र की पाक विरासत को बढ़ावा देने का वादा करती है।

● **परियोजना का नाम-मणिपुर में एक किंग चिली प्रसंस्करण इकाई की स्थापना।**

नेक्टर द्वारा समर्थित और मैसर्स स्पिंग चैरिटेबल ट्रस्ट ऑफ मणिपुर द्वारा कार्यान्वित की जा रही इस परियोजना का उद्देश्य मणिपुर के नोनी जिले में उत्पादित किंग चिली के प्रसंस्करण के लिए एक इकाई स्थापित करना है। प्रवर्तक को नेक्टर द्वारा सौर ड्रायर, ट्रे ड्रायर, ग्राइंडर, स्लाइसर, हाइड्रो मशीन, डिजिटल वजन स्केल, फाइलिंग मशीन और पैकेजिंग मशीन जैसी सभी आवश्यक मशीनरी/उपकरण स्थापित करने के लिए सहायता प्रदान की गई है। प्रसंस्करण इकाई का निर्माण और मशीनरी की खरीद शुरू हो गई है। एक बार जब इकाई सभी मशीनों के साथ तैयार हो जाती है, तो इससे क्षेत्र के राजा मिर्च किसानों को भारी लाभ होने और

इसके बाजार मूल्य को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है। इस परियोजना से क्षेत्र के स्थानीय युवाओं को रोजगार मिलने की भी उम्मीद है।



● परियोजना का नाम-सुरक्षित और किफायती बांस आधारित जैव-मिश्रित नौकाओं का निर्माण

गुवाहाटी, असम में मेसर्स अकवोट्रानसिरो टेक प्राइवेट लिमिटेड द्वारा कार्यान्वित की जा रही इस परियोजना का उद्देश्य बांस आधारित जैव-मिश्रित सामग्री से नावों का निर्माण करना है। नेक्टर से प्राप्त गांट और बांस के मिश्रित बोर्डों के साथ, अकवोट्रानसिरो अब तक 6 विभिन्न प्रकार की नौकाओं का निर्माण करने में सक्षम रहा है, जो हैं-8-पी. ए. एक्स. क्षमता की 3 उथली पानी की नौकाएं, 2 और 4-पी. ए. एक्स. क्षमता की दो मछली पकड़ने की नौकाएं और 12-18 पी. ए. एक्स. क्षमता का एक ट्राइमरन। प्रवर्तक ने निर्मित नौकाओं के परीक्षण और सत्यापन के लिए आई. आई. टी. गुवाहाटी के साथ एक समझौता किया है। यह परियोजना दो स्थानीय युवाओं को प्रत्यक्ष रोजगार प्रदान करने में भी सक्षम है। इस परियोजना से असम और पूर्वोत्तर के अन्य हिस्सों में अन्य व्यावसायिक रूप से उपलब्ध नौकाओं की तुलना में इसके उपयोगकर्ताओं की सुरक्षा में वृद्धि होने की उम्मीद है।



● **परियोजना का नाम-विशिष्ट न्यास, इम्फाल द्वारा सरसों पर प्रौद्योगिकी हस्तक्षेप के माध्यम से ग्रामीण किसानों का सशक्तिकरण।**

यूनिक ट्रस्ट, इम्फाल द्वारा "सरसों पर प्रौद्योगिकी हस्तक्षेप के माध्यम से ग्रामीण किसानों का सशक्तिकरण" परियोजना, इम्फाल पूर्वी जिले, मणिपुर के क्यामगेई मायाई लेइकाई में कृषि में क्रांति लाने के लिए तैयार है। आवश्यक मशीनरी की खरीद और प्रतिदिन 250 लीटर सरसों तेल के उत्पादन के लक्ष्य के साथ, यह परियोजना लगभग 300 स्थानीय किसानों को कटाई के बाद की तकनीकों और विपणन रणनीतियों में प्रशिक्षित करने पर केंद्रित है। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य उपज की गुणवत्ता और दक्षता को बढ़ाना है, यह सुनिश्चित करना कि किसान अपनी उत्पादकता और आय को अधिकतम कर सकें। किसानों को बड़े बाजारों तक सीधी पहुंच प्रदान करने, बिचौलियों पर निर्भरता कम करने और स्थिर आर्थिक लाभ प्राप्त करने के लिए रणनीतिक विपणन संबंध स्थापित किए गए हैं।

यह परियोजना सतत कृषि प्रथाओं को बढ़ावा देते हुए उत्पादन क्षमता और गुणवत्ता को बढ़ावा देने के लिए अत्याधुनिक, ऊर्जा-कुशल मशीनरी के उपयोग पर जोर देती है। इस पहल से भाग लेने वाले किसानों की आर्थिक स्थिरता में काफी सुधार होने की उम्मीद है, जिससे बेहतर आजीविका, शिक्षा के अवसरों और स्वास्थ्य परिणामों के माध्यम से व्यापक समुदाय को लाभ होगा। यूनिक ट्रस्ट लगातार परियोजना की निगरानी और परिष्करण करेगा ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि यह किसानों की जरूरतों और बाजार

की गतिशीलता के प्रति उत्तरदायी रहे। कुल मिलाकर, इस परियोजना का उद्देश्य इस क्षेत्र में सरसों तेल उद्योग को बढ़ावा देना, एक मजबूत और अधिक लचीला ग्रामीण समुदाय को बढ़ावा देना है।



● **परियोजना का नाम-प्लास्टिक पैकेजिंग को कम करने के लिए पर्यावरण के अनुकूल पेपर कप का बड़े पैमाने पर उत्पादन।**

"प्लास्टिक पैकेजिंग को कम करने के लिए पर्यावरण के अनुकूल पेपर कप का बड़े पैमाने पर उत्पादन" परियोजना, 25 लाख रुपये की बजटीय सहायता द्वारा समर्थित, प्लास्टिक प्रदूषण के दबाव वाले मुद्दे को संबोधित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह पहल राज्य भर में पर्यावरण के अनुकूल पेपर कप के उत्पादन और वितरण के इर्द-गिर्द केंद्रित है, जिसका प्राथमिक उद्देश्य प्लास्टिक पैकेजिंग पर निर्भरता को कम करना है। पर्यावरण की दृष्टि से स्थायी विकल्पों के साथ प्लास्टिक कप को बदलकर, परियोजना का उद्देश्य प्लास्टिक कचरे से जुड़े प्रतिकूल पर्यावरणीय प्रभावों को कम करना है, जैसे कि प्रदूषण और वन्यजीवों को नुकसान। इसके अलावा, इन पर्यावरण के अनुकूल पेपर कपों के व्यापक वितरण से पर्यावरणीय जिम्मेदारी की संस्कृति को बढ़ावा मिलने और जनता के बीच स्थायी उपभोग की आदतों को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।

इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य न केवल पर्यावरण संरक्षण पर है, बल्कि सामाजिक-आर्थिक विकास पर भी है। पर्यावरण के अनुकूल पेपर कप के लिए बड़े पैमाने पर उत्पादन सुविधाओं की स्थापना करके, यह परियोजना आइजोल और उसके आसपास की बड़ी संख्या में व्यक्तियों के लिए आजीविका के महत्वपूर्ण अवसर पैदा करती है। विश्वसनीय व्यावसायीकरण और वितरण चेनलों के माध्यम से, यह पहल न केवल रोजगार प्रदान करती है बल्कि स्थानीय आर्थिक विकास को भी प्रोत्साहित करती है। इसके अतिरिक्त, पर्यावरण

के अनुकूल विकल्पों के उपयोग को बढ़ावा देकर, यह परियोजना जलवायु परिवर्तन से निपटने और सतत विकास को बढ़ावा देने के वैश्विक प्रयासों के साथ संरेखित होती है। कुल मिलाकर, "पर्यावरण के अनुकूल पेपर कप का बड़े पैमाने पर उत्पादन" परियोजना इस क्षेत्र में सामाजिक-आर्थिक प्रगति को बढ़ावा देने के साथ-साथ पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करती है।



● गुवाहाटी में रिमोट पायलट प्रशिक्षण संगठन (आर. पी. टी. ओ.) की स्थापना

गुवाहाटी के बोको में जे. एन. कॉलेज के परिसर के भीतर एक रिमोट पायलट प्रशिक्षण संगठन (आर. पी. टी. ओ.) स्थापित करने की नेक्टर की परियोजना पूर्वोत्तर क्षेत्र में ड्रोन प्रौद्योगिकी की प्रगति में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। लोक लेखा समिति (पी. ए. सी.) की सिफारिशों और 7वें वित्त आयोग (एफ. सी.) की मंजूरी के साथ-साथ कार्यकारी समिति (ई. सी.) और सामान्य परिषद (जी. सी.) से अनुमोदन के बाद, परियोजना को गति मिली। नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डी. जी. सी. ए.) द्वारा अनिवार्य प्रोटोकॉल का पालन करते हुए, नेक्टर ने आर. पी. टी. ओ. की स्थापना को सफलतापूर्वक पूरा किया, जिसमें ड्रोन उड़ान मैदान, अनुकरण सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर, कंप्यूटर और प्रशिक्षक ड्रोन जैसे आवश्यक बुनियादी ढांचे शामिल हैं।

सावधानीपूर्वक योजना और निष्पादन के बाद, 3 अप्रैल 2024 को डी. जी. सी. ए. अधिकारियों द्वारा आर. पी. टी. ओ. सुविधा का निरीक्षण किया गया, जिसके परिणामस्वरूप आर. पी. टी. ओ. संचालन को मंजूरी दी गई। यह उपलब्धि ड्रोन प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण और उपयोग के लिए क्षेत्र की क्षमता बढ़ाने की दिशा में एक बड़ा कदम है। आर. पी. टी. ओ. पूर्वोत्तर में महत्वाकांक्षी ड्रोन पायलटों के लिए एक व्यापक 5-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की पेशकश करने के लिए तैयार है, जिससे वे रिमोट पायलट सर्टिफिकेट (आर. पी. सी.) के रूप में जाने जाने वाले डी. जी. सी. ए. अधिकृत लाइसेंस प्राप्त कर सकते हैं। यह पहल न केवल इस क्षेत्र में छात्रों और बेरोजगार युवाओं के लिए नए रास्ते खोलती है, बल्कि ड्रोन प्रौद्योगिकी के उभरते क्षेत्र में कुशल पेशेवरों की बढ़ती मांग को भी संबोधित करती है।



आर. पी. टी. ओ. की स्थापना में पूर्वोत्तर में आर्थिक विकास और रोजगार सृजन की अपार संभावनाएं हैं। भूमि मानचित्रण, कृषि छिड़काव और अन्य ड्रोन अनुप्रयोगों जैसे विभिन्न क्षेत्रों में ड्रोन के बढ़ते उपयोग के साथ, प्रशिक्षित ड्रोन पायलटों की उच्च मांग है। कौशल विकास और पेशेवर प्रमाणन के अवसर प्रदान करके, आर. पी. टी. ओ. व्यक्तियों को ड्रोन पायलट के रूप में करियर बनाने के लिए सशक्त बनाता है, जिससे क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास में योगदान मिलता है और पूर्वोत्तर के युवाओं के लिए स्थायी आजीविका का मार्ग प्रदान करता है।

● परियोजना का नाम-स्किल पिल-असमिया में कौशल विकास पाठ्यक्रमों के लिए एक मोबाइल एप्लिकेशन

स्किल पिल ने असम में ग्रामीण युवाओं के बीच शिक्षा और कौशल की कमी को दूर करने के उद्देश्य से एक मोबाइल एप्लिकेशन लॉन्च किया है। गुवाहाटी, असम में स्थित, यह अभिनव परियोजना असमिया में डिजिटल मार्केटिंग, ग्राफिक डिजाइनिंग और कंप्यूटर प्रोग्रामिंग जैसे उच्च मूल्य वाले कौशल प्रदान करने पर केंद्रित है, जो ग्रेड 9-12 में छात्रों को लक्षित करती है। विस्तृत शिक्षण और पूर्व-अभिलिखित ऑनलाइन शिक्षण प्रदान करके, कौशल पिल का उद्देश्य ग्रामीण युवाओं को सशक्त बनाना, उनकी रोजगार क्षमता, उद्यमशीलता क्षमताओं और व्यक्तिगत विकास को बढ़ाना है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और आवश्यक सॉफ्ट स्किल्स तक पहुंचने में ग्रामीण युवाओं के सामने आने वाली चुनौतियों को पहचानते हुए, यह परियोजना स्थानीय भाषा, असमिया में पाठ्यक्रम प्रदान करके इन कमियों को दूर करने का प्रयास करती है, जिससे एक अधिक समावेशी और सशक्त समुदाय को बढ़ावा मिलता है।

अपने प्रयासों के माध्यम से, कौशल गोली ग्रामीण युवाओं को सफल होने के लिए आवश्यक उपकरणों और शिक्षा से लैस करके उनकी क्षमता को उजागर करने का प्रयास करती है। इस परियोजना का उद्देश्य न केवल व्यापक दर्शकों को लाभान्वित करना है, बल्कि दो पुरुषों और दो महिलाओं सहित विशिष्ट अप्रत्यक्ष लाभार्थियों की पहचान करना है, जो उन्नत कौशल और आर्थिक अवसरों से लाभान्वित होते हैं। मोबाइल प्रौद्योगिकी का लाभ उठाकर और असमिया में शिक्षा प्रदान करके, स्किल पिल न केवल शैक्षिक कमियों को दूर करता है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों के आर्थिक विकास और व्यक्तिगत उन्नति में भी योगदान देता है, जो सुलभ शिक्षा और कौशल विकास की परिवर्तनकारी शक्ति के प्रमाण के रूप में कार्य करता है।



चित्र: डैशबोर्ड स्किल पिल एप्लीकेशन का शुभारंभ

● **परियोजना का नाम वन निगरानी और वन्यजीव निगरानी के लिए एयरोस्टैटिक ड्रोन का विकास**

नेक्टर ने नेक्टर की अपनी प्रौद्योगिकी आउटरीच एंड सर्विसेज स्कीम (टी. ओ. एस. एस.) योजना के तहत परियोजना का समर्थन किया है। परियोजना का उद्देश्य पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील और संरक्षित क्षेत्रों में संरक्षण प्रयासों में सहायता के लिए एक कम शोर, मोबाइल हवाई अवलोकन मंच प्रदान करना है। ड्रोन हवा में तैरने के लिए तीन घंटे से अधिक की बहुत अधिक सहनशक्ति रखता है और डेटा का लाइव फीड देता है। ड्रोन का वजन बहुत कम होता है और अन्य ड्रोन के विपरीत इसे टेथर मोड में भी उड़ाया जा सकता है। हालाँकि, हवा से भारी पारंपरिक ड्रोन, जैसे कि मल्टीरोटर और फिक्स्ड-विंग यूएवी, की सीमाएँ हैं; मुख्य रूप से उनकी कम सहनशक्ति, वन्यजीवों को परेशान करने की क्षमता और उनकी सुरक्षा पर चिंताएँ। ऐसा इसलिए है क्योंकि पारंपरिक यूएवी लिफ्ट उत्पादन में अपनी जहाज पर ऊर्जा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा खर्च करते हैं। इसके विपरीत, एक एरोस्टैटिक यूएवी अपने लिफ्ट का एक महत्वपूर्ण हिस्सा उत्प्लावन से प्राप्त करता है और बाकी वायुगतिकी का उपयोग करके। इसके कारण, एयरोस्टैटिक यूएवी को हवा में तैरते रहने के लिए अपनी संग्रहीत ऊर्जा के केवल एक मिनट के हिस्से की आवश्यकता होती है। उनकी अधिकांश संग्रहीत ऊर्जा का उपयोग अभियान के उद्देश्यों को पूरा करने में किया जाता है। इसके अलावा, आवेदन के आधार पर, वे घंटों से लेकर दिनों तक कहीं भी ऊपर रह सकते हैं। यह एयरोस्टैटिक यूएवी को हवा से भारी यूएवी की तुलना में सहनशक्ति के मामले में बेहतर बनाता है। वर्तमान में दो प्रोटोटाइप क्षेत्र क्षेत्र में तैनात करने के लिए तैयार हैं और तैनाती के उद्देश्य के लिए वन अधिकारियों के साथ चर्चा चल रही है। एक बार वाणिज्यिक रूप से बनाया गया ड्रोन यूएवी और निगरानी के क्षेत्र में एक गेम चेंजर होगा। ड्रोन के दो प्रोटोटाइप तैनाती के लिए तैयार हैं और नेक्टर मेघालय या असम के वन क्षेत्रों में से एक में ड्रोन को तैनात करने की योजना बना रहा है। यह परियोजना पूर्वोत्तर भारत में वन और वन्यजीव निगरानी को बढ़ाने में मदद करेगी।



● **परियोजना का नाम-नागालैंड प्रादेशिक परिषद के मुख्य कार्यकारी सदस्य के लिए परियोजना निगरानी डैशबोर्ड**

नागालैंड प्रादेशिक परिषद (बी. टी. सी.) के मुख्य कार्यकारी सदस्य (सी. ई. एम.) ने एक परियोजना निगरानी डैशबोर्ड का शुभारंभ किया है, जिसे मैसर्स डिजिटलामा प्राइवेट लिमिटेड द्वारा विकसित किया गया है और नेक्टर द्वारा वित्त पोषित किया गया है ताकि पूरे नागालैंड, असम में परियोजना प्रबंधन में पारदर्शिता और दक्षता को बढ़ावा दिया जा सके। यह अभिनव डैशबोर्ड, जो <https://sopd.btrcmdashboard.co.in> पर सुलभ है, जनता और हितधारकों को वास्तविक समय का डेटा प्रदान करता है, जो एक महत्वपूर्ण तकनीकी प्रगति को चिह्नित करता है। एक प्रमुख परिणाम विभिन्न परियोजनाओं और योजनाओं को शामिल करते हुए, विश्लेषण के लिए आसानी से सुलभ और वर्तमान डेटा सुनिश्चित करते हुए, 2023-24 के लिए विस्तृत वार्षिक संचालन योजना (एओपी) रिपोर्टों का सफल अपलोड है। 40 बी. टी. सी. विभागों के साथ सहयोग महत्वपूर्ण रहा है, जिसमें प्रत्येक विभाग वास्तविक समय के डेटा को अद्यतन करने के लिए एक उपयोगकर्ता को नामित करता है, जिससे डैशबोर्ड पर परियोजना की जानकारी की सटीकता और समयबद्धता बढ़ जाती है।

मजबूत वास्तविक समय अद्यतन प्रक्रिया यह सुनिश्चित करती है कि सबसे हाल की जानकारी हमेशा उपलब्ध हो, जिससे परियोजनाओं की निगरानी करने और सूचित निर्णय लेने की परिषद की क्षमता में काफी सुधार होता है। विशेष रूप से विभागों के मुख्य प्रमुखों (सीएचडी) के साथ सफल उपयोगकर्ता प्रशिक्षण सत्रों ने यह सुनिश्चित किया है कि प्रमुख कर्मियों पोर्टल का उपयोग करने और सटीक डेटा अद्यतन बनाए रखने में निपुण हैं। कुल मिलाकर, बी. टी. आर. सी. ई. एम. डैशबोर्ड बी. टी. सी. के लिए परियोजना प्रबंधन और शासन में एक बड़े कदम का प्रतिनिधित्व करता है, जो इस क्षेत्र में लोक प्रशासन की दक्षता और पारदर्शिता बढ़ाने के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकी का लाभ उठाता है और अंतर-विभागीय सहयोग को बढ़ावा देता है।



चित्र: CEM डैशबोर्ड

अध्याय 6: प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण

1. भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान द्वारा पूर्वोत्तर क्षेत्र में तकनीकी-उद्यमिता को बढ़ावा देना।

उद्देश्य: भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान (ईडीआईआई), अहमदाबाद के सहयोग से तकनीकी-उद्यमिता (प्रौद्योगिकी आधारित उद्यम) को बढ़ावा देने पर एक परियोजना का कार्यान्वयन 3 नवंबर 2022 को असम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड और त्रिपुरा राज्यों में संचालन के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया गया है। ई. डी. आई. आई. से प्रशिक्षण के दूसरे चरण के लिए प्राप्त एक प्रस्ताव जिसमें 2 उद्यमिता जागरूकता कार्यक्रम (ई. ए. पी.) और 4 उद्यमिता विकास कार्यक्रम (ई. डी. पी.) शामिल हैं, को मणिपुर और मिजोरम में संचालन के साथ मंजूरी दी गई है। लाभार्थियों की कुल संख्या ईएपी-119, ईडीपी-103 है। ई. डी. पी. के तहत प्रशिक्षित 103 प्रशिक्षुओं में से मिजोरम के 5 प्रशिक्षुओं ने विभिन्न स्थानों पर आयोजित अपने प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दौरान प्राप्त सीख को लागू करना शुरू कर दिया है। कुल 220 प्रतिभागी थे, जिनमें महिलाओं की संख्या पुरुषों (170 बनाम 50) से अधिक थी, और अधिकांश 148 प्रतिभागियों के साथ अनुसूचित जनजाति (एसटी) श्रेणी से संबंधित थे।



2. पूर्वोत्तर बेंत और बांस विकास परिषद (एन.ई.सी.बी.डी.सी.) द्वारा बांस उत्पादों के उत्पादन का प्रशिक्षण

उद्देश्य: पूर्वोत्तर में सी. बी. टी. सी. के रूप में जाना जाने वाला एन. ई. सी. बी. डी. सी. को पूर्वोत्तर भारत के अब तक अप्रयुक्त बांस क्षेत्र को संगठित करने के उद्देश्य से शामिल किया गया था जो प्राचीन काल से अपनी स्थलाकृति, संस्कृति और प्रथागत प्रथाओं का एक महत्वपूर्ण अधिभोग है। एन. ई. सी. बी. डी. सी. में सदियों पुराने बांस क्षेत्र को नए युग में बढ़ावा देने के लिए प्रतिभा खोज, प्रशिक्षण, प्रौद्योगिकी स्रोत, बाजार संपर्क में अपनी रचनात्मकता और संसाधन शामिल हैं। प्रस्तावित प्रशिक्षण में उद्यमिता आधारित प्रशिक्षण और सर्विंग ट्रे, बेंत और

बांस के डिब्बे, कुंडल आधारित उत्पाद, पैकेजिंग आइटम जैसे बांस उत्पादों का उत्पादन शामिल होगा। 73 लाभार्थियों की भागीदारी के साथ तीन प्रशिक्षण कार्यक्रम पूरे किए गए हैं। बांस के उत्पाद जैसे पेन स्टैंड (229 नंबर), बेंत और बांस की टोकरी (100 नंबर), लैप शेड (27 नंबर), चाय और टिफिन बॉक्स (14 नंबर), ट्रे (29 नंबर), डस्टबिन (17 नंबर), बांस के चम्मच (20 नंबर), बोतल धारक (2 नंबर) और बेंत का स्टूल (1 नंबर) का उत्पादन किया गया है। कुल 73 प्रतिभागी दर्ज किए गए, जिनमें पुरुषों (59) की संख्या महिलाओं (14) से अधिक थी, और अधिकांश एसटी श्रेणी (54) से संबंधित थे।

स्थान: बैरनीहाट, असम



3. बायोडिग्रेडेबल योगा मैट उत्पादन में प्रौद्योगिकी हस्तक्षेप और उन्नयन

उद्देश्य: अप्रैल और मई की अवधि के दौरान, बिनंदा कालिता, जो पहले टाटा ट्रस्ट द्वारा समर्थित एक परियोजना अंतर्गत प्रशिक्षण प्रमुख के पद पर थे, के द्वारा 45 दिनों तक चलने वाला एक व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया गया था। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम नेक्टर भागीदार कार्यान्वयन एजेंसी सिमांग कलेक्टिव्स प्राइवेट लिमिटेड के सहयोग से आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम को 11 महिलाओं के समूह को कुशल लूम प्रशिक्षक बनने के लिए आवश्यक कौशल के साथ सशक्त बनाने के लिए बनाया गया था। इसके बाद, इन प्रशिक्षित महिलाओं ने नियमित कक्षाओं का आयोजन करने की पहल की है। इन कक्षाओं में, वे गाँव की महिलाओं को अपना नया अर्जित ज्ञान प्रदान कर रहे हैं, उन्हें प्रभावी रूप से परियोजना की गतिविधियों में एकीकृत कर रहे हैं। कुल 22 प्रतिभागी थे, जो सभी महिलाएँ थीं और अनुसूचित जाति श्रेणी से थीं।

स्थान: गुवाहाटी, असम



4. सिक्किम राज्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद, सिक्किम सरकार द्वारा कार्यान्वित सिक्किम में मधुमक्खी पालन और एकीकृत खेती

उद्देश्य: प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य सिक्किम के किसानों की स्थायी ग्रामीण आजीविका के लिए मधुमक्खी कालोनियों और शहद उत्पादन के लिए संभावित प्रशिक्षुओं की पहचान करना, मधुमक्खी पालन पर तकनीकी और व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करना, मधुमक्खी बॉक्स, मधुमक्खी कालोनियों और अन्य संबंधित उपकरणों का वितरण करना था। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान 25 किसानों ने भाग लिया। प्रशिक्षुओं में ऋषि, जी. पी. यू. ब्लॉक के ग्रामीण क्षेत्रों के पढ़ाई छोड़ने वाले छात्र, प्रगतिशील किसान और शिक्षित बेरोजगार युवा शामिल थे। कुल 25 प्रतिभागी थे, जो सभी एसटी श्रेणी के थे।

स्थान: सिक्किम



5. ड्रीम अलाइव फाउंडेशन, मिजोरम लुंगलेई द्वारा बांस बुनाई और हस्तशिल्प प्रशिक्षण का कार्यान्वयन

उद्देश्य: इस परियोजना का उद्देश्य युवाओं को पुराने कारीगरों द्वारा बांस बुनाई/हस्तशिल्प प्रशिक्षण प्रदान करना है ताकि युवा पीढ़ी को बेरोजगारी युवाओं के लिए आजीविका सृजन गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए कौशल प्रदान किया जा सके। दीमापुर नागालैंड के जोगम बैबू वर्क्स के रिसोर्स पर्सन द्वारा 50 प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षित किया गया था। प्रशिक्षण के बाद कुछ प्रशिक्षुओं ने इन हस्तशिल्प गतिविधियों को करना शुरू कर दिया है। कुल 25 प्रतिभागी थे, जो सभी महिलाएँ थीं जोकि र एसटी श्रेणी से थीं।

स्थान: लुंगलेई, मिजोरम; प्रतिभागी विवरण: पुरुष-15; महिला-10; अनुसूचित जनजाति-25



6. बी. सी. डी. आई. त्रिपुरा द्वारा बांस और संबद्ध क्षेत्रों के लिए प्रशिक्षण गतिविधियाँ

बांस और बेंत विकास संस्थान, त्रिपुरा में बांस के प्रसंस्करण और मूल्यवर्धन के विभिन्न क्षेत्रों में कारीगरों को कौशल और उत्पाद विकास प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए कई प्रशिक्षण गतिविधियाँ शुरू की गईं, जैसे कि बांस का प्रचार और नर्सरी प्रबंधन, बांस उपचार प्रसंस्करण, बांस की बोतल और टोकरी उत्पाद और विभिन्न अन्य बांस हस्तशिल्प, बांस के अंकुर प्रसंस्करण, कुकीज़ और अचार बनाना आदि। ओडिशा बांस विकास एजेंसी (ओ. बी. डी. ए.), मेघालय सरकार के वाणिज्य और उद्योग निदेशालय, त्रिपुरा सरकार के वन विभाग, नाबार्ड त्रिपुरा क्षेत्रीय कार्यालय और त्रिपुरा बांस मिशन जैसी विभिन्न एजेंसियों के सहयोग से कुल 19 अलग-अलग प्रशिक्षण और कौशल विकास कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें विभिन्न पृष्ठभूमि के लगभग 442 व्यक्ति, जिनमें से अधिकांश महिलाएँ थीं, सीधे लाभान्वित हुए।



7. गुवाहाटी, असम में भू-स्थानिक प्रभाग द्वारा भू-स्थानिक और संबद्ध क्षेत्रों में प्रशिक्षण गतिविधियाँ

- I. रिमोट सेंसिंग और जी. आई. एस. की बुनियादी बातों पर प्रशिक्षण-रिमोट सेंसिंग और जी. आई. एस. की बुनियादी बातों पर दस दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का एक बैच कौशल विकास केंद्र और भू-स्थानिक प्रयोगशाला, नेक्टर, खानपारा में कुल 17 कॉलेज के छात्रों और कामकाजी पेशेवरों के लिए आयोजित किया गया था। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य रिमोट सेंसिंग और जी. आई. एस. के सैद्धांतिक पहलुओं के बारे में बुनियादी ज्ञान देना और व्यावहारिक ज्ञान पर अधिक जोर देना था। प्रशिक्षण कार्यक्रम में भूनिधि, यूएसजीएस आदि जैसे इमेजरी के उपलब्ध निःशुल्क स्रोतों और सर्वे ऑफ इंडिया पोर्टल पर उपलब्ध निःशुल्क सीमाओं को शामिल किया गया। प्रतिभागियों ने क्यूजीआईएस, आर्कजीआईएस और एरडास इमेजिन सॉफ्टवेयर का

- II. उपयोग सीखा। प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंत में, प्रतिभागियों को परियोजना के सीखने के परिणाम प्राप्त करने के लिए तीन दिवसीय केस स्टडी दी गई।
- III. **ड्रोन डेटा अधिग्रहण और प्रसंस्करण (डी. डी. ए. पी.) पर प्रशिक्षण**-ड्रोन डेटा अधिग्रहण और प्रसंस्करण पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का एक बैच कौशल विकास केंद्र और भू-स्थानिक प्रयोगशाला, नेक्टर, खानपारा में कुल 13 कॉलेज के छात्रों और कामकाजी पेशेवरों के लिए आयोजित किया गया था। प्रशिक्षण कार्यक्रम ड्रोन डेटा अधिग्रहण, ड्रोन डेटा के प्रसंस्करण और ड्रोन उड़ान के प्रदर्शन की प्रक्रिया के बारे में अंतर्दृष्टि देने पर केंद्रित था। प्रतिभागियों ने ड्रोन नियमों, डिजिटल स्काई पोर्टल, ड्रोन उड़ाने से संबंधित नियमों और विनियमन तथा ड्रोन की विभिन्न श्रेणियों के बारे में जानकारी प्राप्त की। प्रतिभागियों को जवाहरलाल नेहरू कॉलेज, बोको ले जाया गया, जहाँ ड्रोन डेटा प्राप्त किया गया और प्रतिभागियों ने उस डेटा को प्रोसेस किया। इससे उन्हें नकली डेटा के बजाय वास्तविक डेटा पर काम करने का अनुभव मिला।



- IV. **ड्रोन जागरूकता प्रशिक्षण (डी. ए. टी.) पर प्रशिक्षण**-कुल 30 प्रतिभागियों के साथ महाविद्यालय के छात्रों और कार्यरत पेशेवरों के लिए कौशल विकास केंद्र और भू-स्थानिक प्रयोगशाला, एन. ई. सी. टी. ए. आर., खानपारा में ड्रोन जागरूकता प्रशिक्षण (डी. ए. टी.) पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दो बैच आयोजित किए गए। यह प्रशिक्षण आई. एच. एफ. सी.-आई. आई. टी. दिल्ली के सहयोग से आयोजित किया गया था। इसका उद्देश्य प्रतिभागियों को ड्रोन के हार्डवेयर और ड्रोन की असेंबली के बारे में जानकारी देना था। प्रशिक्षण कार्यक्रम ने प्रतिभागियों को उड़ान भरने का अनुभव देने के लिए सिमुलेटर पर उड़ान भरने का अनुभव भी दिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंत में प्रतिभागी ड्रोन को इकट्ठा करने और आर. सी. का उपयोग करके ड्रोन को नियंत्रित करने के लिए बुनियादी कोडिंग करने में सक्षम थे।





- V. **राष्ट्रीय कौशल विकास परिषद के सहयोग से ड्रोन निर्माण और असेंबली तकनीशियन पर प्रशिक्षण**-राष्ट्रीय कौशल विकास परिषद के सहयोग से कुल 40 छात्रों के साथ ड्रोन निर्माण और असेंबली तकनीशियन पर प्रशिक्षण के दो बैच आयोजित किए गए थे। प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रतिभागियों को ड्रोन और ड्रोन के हार्डवेयर को इकट्ठा करने के बारे में सिखाने पर केंद्रित था। प्रशिक्षण एक व्यापक प्रशिक्षण था जो ड्रोन हार्डवेयर और ड्रोन निर्माण पर पूर्ण प्रशिक्षण प्रदान करता था। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को ड्रोन निर्माण के क्षेत्र में स्टार्टअप खोलने के लिए प्रेरित करना भी था।
- VI. **पीएमकेवीवाई 4 के तहत राष्ट्रीय कौशल विकास परिषद के सहयोग से ड्रोन सेवा तकनीशियन पर प्रशिक्षण**-कुल 16 प्रतिभागियों के साथ राष्ट्रीय कौशल विकास परिषद के सहयोग से ड्रोन सेवा तकनीशियन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का एक बैच। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य बेरोजगार युवाओं को ड्रोन की मरम्मत के लिए कौशल प्रदान करना था। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम ने यह सुनिश्चित किया कि प्रतिभागियों को ड्रोन की मरम्मत के बारे में गहराई से जानकारी मिले। इसने ड्रोन क्षेत्र में युवाओं के कौशल को बढ़ाया और ड्रोन उद्योग के क्षेत्र में उनके लिए अधिक अवसर पैदा किए।

अध्याय 7: सम्मेलन और कार्यक्रम

1. नेक्टर और विभिन्न संगठनों के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान, नेक्टर ने पूर्वोत्तर क्षेत्र में विभिन्न पहलों और परियोजनाओं के सफल कार्यान्वयन की दिशा में अपनी गतिविधियों को आगे बढ़ाने के लिए विभिन्न संगठनों और संस्थानों के साथ समझौतों और समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं, जो निम्नानुसार सूचीबद्ध हैं:

- पूर्वोत्तर क्षेत्र में पीएम-डिवाइन केला स्यूडोस्टेम परियोजना कार्यान्वयन के रूप में 07.06.2023 को आईसीएआर-राष्ट्रीय केला अनुसंधान केंद्र और नेक्टर के बीच समझौता ज्ञापन (MoU)
- नेक्टर और राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थान, हैदराबाद के बीच समझौता ज्ञापन 01.07.2023
- पूर्वोत्तर क्षेत्र में पीएम डिवाइन ऑर्गेनिक परियोजना कार्यान्वयन के हिस्से के रूप में 13.10.2023 को नेक्टर और राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो (NBPGR) के बीच व्यापक समझौता ज्ञापन
- पीएमकेवीवाई (PMKVY) 4.0 के अंतर्गत विशेष परियोजनाओं के कार्यान्वयन के लिए एमएसडीई और नेक्टर के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए
- पीएमकेवीवाई (PMKVY) 4.0 के अंतर्गत विशेष परियोजनाओं के कार्यान्वयन के लिए नेक्टर और एमआरएलएस के बीच समझौता ज्ञापन
- पीएमकेवीवाई (PMKVY) 4.0 के अंतर्गत विशेष परियोजनाओं के कार्यान्वयन के लिए नेक्टर और एमएफईसी के बीच समझौता ज्ञापन
- जेएनसी बोको, असम में रिमोट पायलट प्रशिक्षण संगठन की स्थापना के लिए आरसी हॉबीटेक के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर समारोह
- पूर्वोत्तर क्षेत्र में पीएम डिवाइन ऑर्गेनिक परियोजना कार्यान्वयन के हिस्से के रूप में 21 अगस्त 2023 को नेक्टर और मेघालय राज्य ग्रामीण आजीविका सोसायटी, मेघालय सरकार के बीच समझौता ज्ञापन
- पूर्वोत्तर क्षेत्र में पीएम डिवाइन ऑर्गेनिक परियोजना कार्यान्वयन भागीदारी के रूप में 20 जुलाई 2023 को नेक्टर और जैव संसाधन विकास केंद्र, मेघालय सरकार के बीच समझौता ज्ञापन
- नेक्टर और जैव संसाधन एवं सतत विकास संस्थान, मेघालय के बीच समझौता ज्ञापन नेक्टर और अमृता विश्व विद्यापीठम, केरल के बीच अनुसंधान के लिए उत्पादों के अनुसंधान, विकास और सत्यापन, संयुक्त कार्यक्रम लेने, जागरूकता और तैयारियों को बढ़ाने के लिए संयुक्त पाठ्यक्रमों सहित अकादमिक सहयोग की संभावना और पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए प्रौद्योगिकी के विकास में संयुक्त अनुसंधान एवं विकास करने के लिए समझौता आईपी पोर्टफोलियो प्रबंधन, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और आईपी व्यावसायीकरण गतिविधियों,

संयुक्त औद्योगिक परियोजना गतिविधि, शोधकर्ताओं की गतिशीलता और स्पिनऑफ निर्माण, संकाय विकास कार्यक्रम और औद्योगिक समस्या विवरणों के लिए उद्योग द्वारा वित्त पोषित प्रायोजित अनुसंधान कार्यक्रम को सुविधाजनक बनाने के लिए नेक्टर और कलिंगा इंस्टीट्यूट ऑफ इंडस्ट्रियल टेक्नोलॉजी (केआईआईटी) विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर के बीच समझौता ज्ञापन।

- पूर्वोत्तर क्षेत्र में मधुमक्खी पालन को बढ़ावा देने के लिए 20 जुलाई 2023 को नेक्टर और मेघालय किसान सशक्तिकरण आयोग के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए





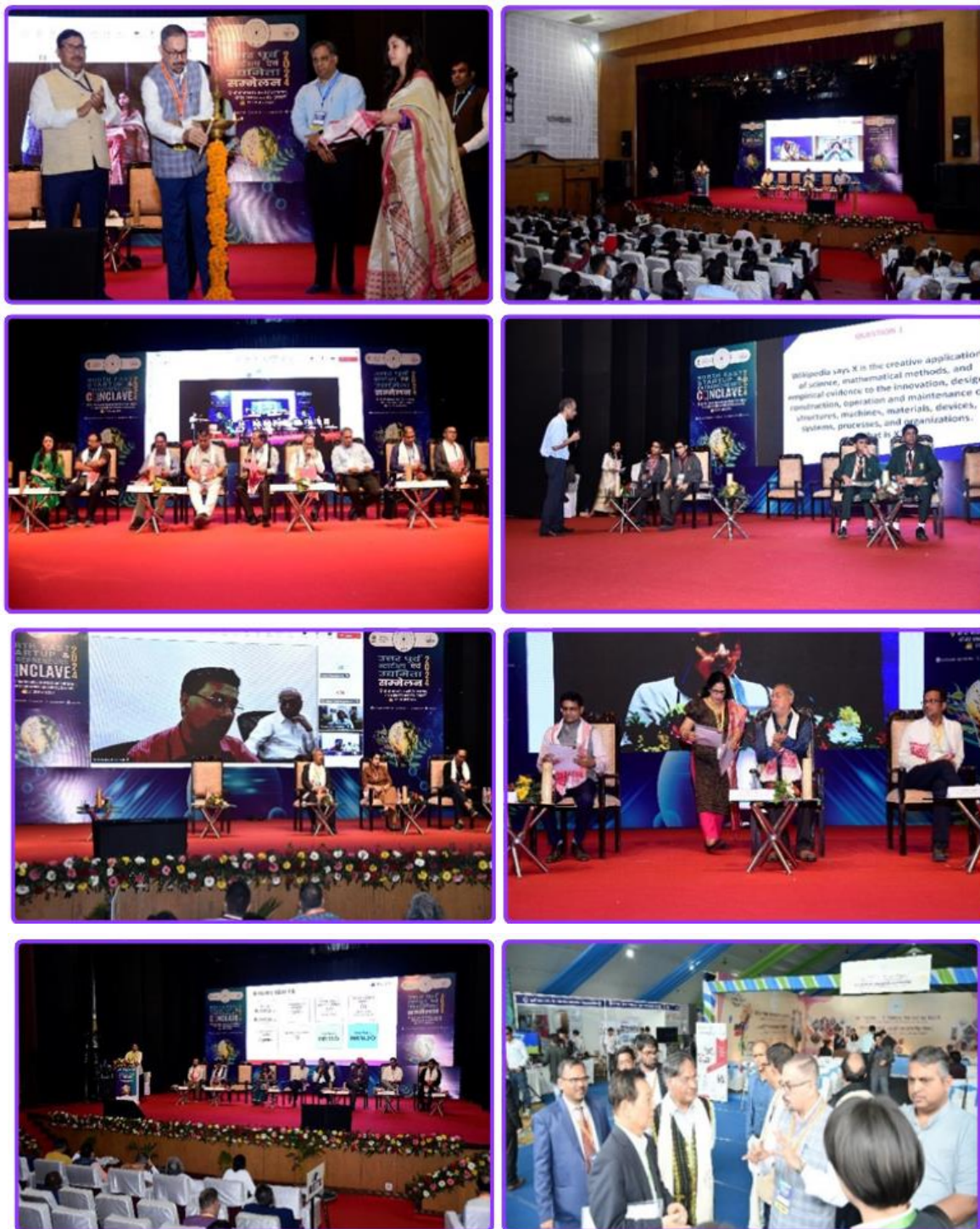
2. भारत-जापान संगोष्ठी: एआईएसटी-इंडिया दैलाब PIKNIKH सीरीज 55 दिनांक 27.02.2024 को

नेक्टर - जापान (AIST), 27 फरवरी 2024 को PIKNIKH (अंतर्राष्ट्रीय ज्ञान के लिए ज्ञान को नया करने के लिए मंच) श्रृंखला 55 के लिए "तनाव, उम्र बढ़ने और कैंसर के लिए न्यूट्रास्यूटिकल हस्तक्षेप: उत्पाद विकास के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी" विषय पर संयुक्त संगोष्ठी। यह एक गतिशील कार्यक्रम था, जिसमें विज्ञान और प्रौद्योगिकी परिदृश्य को आकार देने वाली नवीनतम जानकारी को प्रस्तुत करने के लिए प्रतिष्ठित जापानी शोधकर्ताओं, उत्तर पूर्व के संस्थानों और स्थानीय विशेषज्ञों को एक साथ लाया गया। यह सहयोगात्मक कार्यक्रम ज्ञान और विचारों के आदान-प्रदान का समृद्ध माध्यम साबित हुआ, तथा इससे अंतर-सांस्कृतिक संवाद और नवाचार को बढ़ावा मिला। कार्यक्रम में आकर्षक चर्चाओं, प्रस्तुतियों और इंटरैक्टिव सत्रों की एक श्रृंखला शामिल थी, जहां प्रतिभागियों ने अश्वगंधा, न्यूट्रास्यूटिकल्स के लिए बायोलाइट-आधारित स्क्रीनिंग प्रणाली, मानव न्यूरोजेनेसिस को प्रभावित करने वाले कारक - तंत्रिका स्टेम सेल संवर्धन अध्ययनों से सीखना, अल्जाइमर रोधी यौगिकों के लिए लघु और स्मार्ट लाइव स्क्रीनिंग प्रणाली, और कई अन्य संबंधित और प्रासंगिक विषयों जैसे विविध विषयों पर चर्चा की। जापान से आए प्रतिष्ठित वक्ताओं ने अपनी विशेषज्ञता साझा की तथा अपने गहन शोध से प्राप्त अद्वितीय गहन अंतर्दृष्टि, प्रथाओं और नवाचारों की पेशकश की।



3. नॉर्थ ईस्ट स्टार्ट अप और एंटरप्रेन्योर्स कॉन्क्लेव 2024

नेक्टर ने 27-28 मार्च, 2024 को श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र, गुवाहाटी में 'नॉर्थ ईस्ट स्टार्ट अप एंड एंटरप्रेन्योर्स कॉन्क्लेव 2024' की मेजबानी की। इस कार्यक्रम का उद्घाटन भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के सचिव प्रोफेसर अभय करंदीकर ने किया, जिसका उद्देश्य पूर्वोत्तर भारत में नवाचार और उद्यमशीलता को बढ़ावा देना, इसके स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र को प्रदर्शित करना और निवेश और कनेक्टिविटी को प्रोत्साहित करना था। उपस्थित लोगों में छात्र, उद्यमी, निवेशक और पेशेवर शामिल थे, जो क्षेत्रीय चुनौतियों का समाधान करने और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए अभिसरण करते हैं। विभिन्न उद्यमियों के लिए अपने विभिन्न उत्पादों को प्रदर्शित करने के लिए कई स्टॉल भी लगाए गए थे। तकनीकी सत्रों में प्रौद्योगिकी प्रसार, कृषि, बाढ़ शमन और आईसीटी, पूर्वोत्तर के लिए विशिष्ट प्रौद्योगिकी विकास और क्षेत्र में विज्ञान-प्रौद्योगिकी-विरासत गठजोड़ जैसे विभिन्न विषयों को शामिल किया गया।



चित्र: नॉर्थ ईस्ट स्टार्ट अप और उद्यमी सम्मेलन 2024



4. नेक्टर विभिन्न कार्यशालाओं के माध्यम से उत्तर पूर्व भारत में नवीन कृषि पद्धतियों और सामाजिक-आर्थिक विकास को सक्रिय रूप से बढ़ावा दे रहा है। ये प्रयास क्षेत्र में उत्पादकता और आजीविका के अवसरों को बढ़ाने के लिए उन्नत प्रौद्योगिकियों और टिकाऊ तरीकों के उपयोग पर केंद्रित हैं।

- नेक्टर ने कैस्ले इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के सहयोग से अपने शिलांग कार्यालय में एक कार्यशाला का आयोजन किया, जिसमें रिमोट सेंसिंग प्रौद्योगिकी के माध्यम से फलों की मात्रा और स्वाद पर ध्यान केंद्रित किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य रिमोट सेंसिंग तकनीकों के एकीकरण पर जोर देते हुए फलों के मूल्यांकन और स्वाद विश्लेषण के लिए नवीन दृष्टिकोणों का पता लगाना था।
- पीएमडिवाइन योजना और नेक्टर प्रभाव पर एक दिवसीय कार्यशाला: सिम्बायोसिस स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज ने नेक्टर और आईसीएसएसआर के सहयोग से " पीएमडिवाइन योजना और नेक्टर का सर्वेक्षण: पूर्वोत्तर में आजीविका पर प्रभाव" विषय पर कार्यशाला आयोजित की। डॉ. अरुण कुमार शर्मा ने ऑनलाइन कार्यक्रम का उद्घाटन किया, जिसमें ग्रामीण रोजगार में पीएमडिवाइन

की भूमिका पर प्रकाश डाला गया। डॉ. सुकल्पा चक्रवर्ती ने सर्वेक्षण के निष्कर्ष प्रस्तुत किए, जिसमें सामाजिक-आर्थिक लाभों पर जोर दिया गया।

- 20 जून, 2023 को उत्तर पूर्वी प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग एवं प्रसार केन्द्र (नेक्टर) ने शिलांग में "हनी मिशन मोड प्रोजेक्ट" पर केंद्रित एक महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन किया। इस सम्मेलन में पूर्वोत्तर भारत के विशेषज्ञ सदस्यों और मधुमक्खी पालन लाभार्थियों सहित विविध हितधारकों का समूह एकत्रित हुआ। बैठक का प्राथमिक उद्देश्य शहद मिशन की प्रगति, चुनौतियों और भविष्य की रणनीतियों पर चर्चा करना था, जिसे क्षेत्र में मधुमक्खी पालन गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इस पहल का उद्देश्य आजीविका को बढ़ाना, टिकाऊ कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देना और शहद उत्पादन को बढ़ाना है, जिससे क्षेत्र के आर्थिक विकास और पारिस्थितिक संतुलन में महत्वपूर्ण योगदान मिलेगा। इस कार्यक्रम ने उत्तर पूर्व भारत में मधुमक्खी पालन क्षेत्र को और मजबूत करने के लिए अंतर्दृष्टि, अनुभव और अभिनव दृष्टिकोण साझा करने के लिए एक सहयोगी मंच प्रदान किया।
- नेक्टर ने 20 जून, 2023 को शिलांग में एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की, जिसमें "पीएम-डिवाइन परियोजना - मूल्य वर्धित उत्पादों के लिए केले के छद्म तने के उपयोग पर मूल्य श्रृंखला" पर चर्चा की गई। इस बैठक का उद्देश्य परियोजना के सफल कार्यान्वयन के लिए चर्चा को सुविधाजनक बनाना था, जिसमें अक्सर फेंके जाने वाले केले के छद्म तने को मूल्यवान उत्पादों में बदलने पर ध्यान केंद्रित किया गया था। विशेषज्ञों, उद्योग प्रतिनिधियों और स्थानीय लाभार्थियों सहित प्रमुख हितधारकों ने मूल्य श्रृंखला को अनुकूलित करने, बाजारों की पहचान करने और प्रसंस्करण चुनौतियों का समाधान करने पर अंतर्दृष्टि साझा की। इस परियोजना का उद्देश्य स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना, आजीविका के अवसरों को बढ़ाना और पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देना है। यह बैठक सहयोगात्मक प्रयासों के माध्यम से इन लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।



5. महानिदेशक डॉ. अरुण कुमार शर्मा और तकनीकी सलाहकार डॉ. कोलिन जेड रेंथली ने मेघालय किसान सशक्तिकरण आयोग द्वारा राज्य सम्मेलन केंद्र, शिलांग में आयोजित पूर्वोत्तर क्षेत्र में मधुमक्खी पालन को बढ़ावा देने पर दो दिवसीय हितधारक सम्मेलन में भाग लिया।



6. 30 और 31 जनवरी 2024 से घाना में ग्लोबल सोर्सिंग एक्रा में भाग लिया। बहु-क्षेत्र व्यापार शो, ग्लोबल सोर्सिंग अकरा, अकरा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन केंद्र में शानदार सफलता के साथ समाप्त हुआ। इस आयोजन ने घाना और पश्चिम अफ्रीका में आपूर्तिकर्ताओं के साथ अंतर्राष्ट्रीय सोर्सिंग और सीधे जुड़ाव के लिए एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में कार्य किया। घाना में चल रहे व्यापार शो के बीच नेक्टर का मंडप नवाचार और सहयोग के प्रतीक के रूप में उभरा, जिसने विचारों के गतिशील आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान की और मूल्यवान साझेदारी को बढ़ावा दिया। भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री मनीष गुप्ता के सम्मानित मार्गदर्शन में, उद्घाटन समारोह ने एक आशाजनक युग की शुरुआत की, जिसकी विशेषता बढ़ी हुई वैश्विक संपर्क और भारत के विविध व्यापार प्रस्तावों का जीवंत प्रदर्शन है। कार्यक्रम की अवधि के दौरान, आगंतुकों, उद्यमियों और छात्रों की एक विविध श्रृंखला स्टालों पर उमड़ी, प्रदर्शित उत्पादों के साथ संलग्न हुई और उनके नवीन गुणों के लिए प्रशंसा व्यक्त की। उत्साहपूर्ण स्वागत ने विभिन्न सरकारी संगठनों और हितधारकों के बीच उपयोगी सहयोग और ज्ञान के आदान-प्रदान की संभावना को रेखांकित किया, जिसका उद्देश्य आजीविका क्षेत्र के विकास को बढ़ावा देना और सीमाओं के पार विकास को बढ़ावा देना है।



7. मेघालय के उप मुख्यमंत्री और श्रीमती ग्रेस मैरी खारपुरी द्वारा पिनर्सला मेघालय में स्थानीय एम. डी. सी. में नेक्टर द्वारा वित्तीय सहायता प्रदान की गई भाषा मल्टीमीडिया प्रयोगशाला का उद्घाटन।



8. नेक्टर ने SEED-DST द्वारा वित्त पोषित परियोजना, “अशारीकंडी में पारंपरिक टेराकोटा और मिट्टी के बर्तनों के व्यवसाय की स्थिरता में सुधार” के मद्देनजर 2 नवंबर 2023 को अशारीकंडी शिल्प मेला कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रोफेसर एनसी तालुकदार, कुलपति, एडीयू गुवाहाटी, कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ मनोरंजन मोहंती, प्रमुख एआई डिवाजन, डीएसटी, भारत सरकार और मुख्य अतिथि श्री दिवाकर नाथ, डीसी धुबरी जिला उपस्थित भी थे।



9. 14 दिसंबर, 2023 को राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल (NDRF) के सहयोग से आपदा प्रतिक्रिया और आपातकालीन उपायों पर केंद्रित एक व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। इस सत्र में 30 व्यक्तियों की सक्रिय भागीदारी देखी गई, जिसने तैयारी और प्रतिक्रिया रणनीतियों को बढ़ाने पर एक मूल्यवान और सूचित चर्चा में योगदान दिया। इस प्रशिक्षण के दौरान प्राप्त अंतर्दृष्टि संभावित आपात स्थितियों का सामना करने के लिए एक लचीले और अच्छी तरह से तैयार समुदाय को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है।



10. विभिन्न संस्थानों के विद्यार्थियों का औद्योगिक भ्रमण: एम. टेक. कंप्यूटर विज्ञान द्वितीय और चतुर्थ सेमेस्टर के 8 बैचों के 300 से अधिक छात्रों ने रिमोट सेंसिंग, जी. आई. एस. और ड्रोन प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में वर्तमान रुझानों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए कौशल विकास केंद्र और भू-स्थानिक प्रयोगशाला, खानपारा का दौरा किया। छात्रों को रिमोट सेंसिंग और जी. आई. एस. प्रौद्योगिकी के विभिन्न अनुप्रयोग क्षेत्रों जैसे कृषि, नगर योजना, जल संसाधन, बाढ़ मानचित्रण और अनुकरण, वानिकी आदि पर एक अवलोकन दिया गया। छात्रों को ड्रोन उड़ाने का अनुभव प्राप्त करने के लिए ड्रोन सिमुलेटर पर एक सत्र भी दिया गया। नेक्टर के ड्रोन पायलटों द्वारा छात्रों को वास्तविक ड्रोन उड़ान का प्रदर्शन भी किया गया। उन्हें विभिन्न प्रकार के ड्रोन और उनकी श्रेणियों के बारे में भी जानकारी दी गई।



11. विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (यू. एस. टी. एम.), मेघालय में छात्रों द्वारा इंटरनशिप: स्नातकोत्तर भूगोल, पृथ्वी विज्ञान विभाग, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मेघालय के पाँच छात्र एक महीने के इंटरनशिप कार्यक्रम के लिए नेक्टर में शामिल हुए। छात्रों को रिमोट सेंसिंग और जी. आई. एस. प्रौद्योगिकी का उपयोग करके उपग्रह डेटा पर फसल मानचित्रण से संबंधित वास्तविक समय परियोजनाओं में प्रशिक्षित किया गया था। छात्रों को रिमोट सेंसिंग और जी. आई. एस. प्रौद्योगिकी का उपयोग करके उपग्रह डेटा पर फसल मानचित्रण से

संबंधित वास्तविक समय परियोजनाओं में प्रशिक्षित किया गया था। छात्र 85 प्रतिशत की सटीकता के साथ एक-एक जिले के लिए ज्वार, सरसों और मक्का की फसलों के लिए जीपी स्तर का फसल मानचित्र सफलतापूर्वक तैयार करने में सक्षम थे।

12. पूर्वोत्तर के छात्रों के लिए रोजगार मेला : गरुड़ विश्वविद्यालय के सहयोग से कंप्यूटर विज्ञान, भू-सूचना विज्ञान, भूगोल और भूविज्ञान जैसी पृष्ठभूमि के पूर्वोत्तर के छात्रों के लिए दो दिवसीय रोजगार मेले का आयोजन किया गया। पूर्वोत्तर के सभी विश्वविद्यालयों और छात्रों, जिन्होंने नेक्टर और एनआईटी मेघालय से प्रशिक्षण लिया है, उन्हें नौकरी मेले में आमंत्रित किया गया था। कुल 36 छात्रों ने भाग लिया जिनका मूल योग्यता लिखित परीक्षा पर मूल्यांकन किया गया था, जिसके बाद साक्षात्कार का पहला दौर था। 22 छात्रों को विभिन्न नौकरी के पदों पर रोजगार के लिए साक्षात्कार के दूसरे दौर के लिए चुना गया था।

13. पूर्वोत्तर स्टार्ट-अप और उद्यमियों के सम्मेलन 2024 में एक ड्रोन अनुकरण प्रतियोगिता

नॉर्थ ईस्ट स्टार्ट-अप एंड एंटरप्रेन्योर कॉन्क्लेव में एक ड्रोन सिमुलेशन प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें सभी उम्र के 50 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। 28 मार्च, 2024 को श्रीमंत शंकर देव कलाक्षेत्र के नेक्टर पवेलियन में आयोजित इस प्रतियोगिता में एक यथार्थवादी उड़ान अनुभव प्रदान करने के लिए परिष्कृत ड्रोन सिमुलेशन सॉफ्टवेयर का उपयोग किया गया। प्रतिभागियों को उड़ान भरने, सटीक पैंतरेबाजी और लैंडिंग में अपने कौशल का प्रदर्शन करने से पहले सॉफ्टवेयर की विशेषताओं और डीजीसीए ड्रोन नियमों के बारे में जानकारी दी गई। प्रतियोगिता ने पूर्वोत्तर में ड्रोन संचालन के लिए प्रतिभा और उत्साह को उजागर किया, जिससे इस क्षेत्र में नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा मिला।



14. गरुड़ यूएवी के सहयोग से पूर्वोत्तर के छात्रों के लिए 6 और 7 दिसंबर 2023 को एक विशेष प्लेसमेंट अभियान का आयोजन किया गया था। मानव रहित हवाई वाहनों (यू. ए. वी.) के क्षेत्र में एक प्रमुख संगठन के साथ जुड़ने के इस अनूठे अवसर में कुल 36 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।



15. 3 अप्रैल 2023 को अंतर्राष्ट्रीय मेला मैदान, हपानिया, अगरतला में जी-20 प्रेसीडेंसी कार्यक्रम के तहत विज्ञान-20 के दौरान एक प्रदर्शनी में भागीदारी। आई. एन. एस. ए. के अध्यक्ष प्रो. आशुतोष शर्मा सहित त्रिपुरा के माननीय मुख्यमंत्री ने स्टॉल का दौरा किया।



16. डॉ. मजेल अम्परीन लिंगदोह द्वारा 16 मई 2023 को दृश्य विभाग वाले व्यक्तियों के लिए कंप्यूटर साक्षरता और रोजगार योग्यता में मौलिक पाठ्यक्रम का उद्घाटन किया गया था। बेथनी सोसायटी, शिलांग द्वारा इस परियोजना को कार्यान्वित किया जा रहा है।



17. आइजोल में 30 मई से 2 जून 2023 के दौरान मिजोरम राज्य "बागवानी मेला, 2023" के दौरान प्रदर्शनी में भाग लिया। उप मुख्यमंत्री, बागवानी उप निदेशक सहित मिजोरम सरकार ने स्टाल का दौरा किया।



18. नेक्टर ने डी. सी. (हस्तशिल्प) के सहयोग से 4 से 7 जुलाई 2023 तक बॉम्बे प्रदर्शनी केंद्र, मुंबई में एच. जी. एच. बी. 2बी में भाग लिया ताकि विभिन्न समूहों के कारीगरों को अपने उत्पादों का प्रदर्शन करने में सुविधा प्रदान की जा सके। पूर्वोत्तर राज्यों के 10 शिल्पकारों ने बांस और बेंत, कलात्मक वस्त्र, सूखे फूल, धातु के आभूषण, घास के उत्पाद और पूर्वोत्तर के हस्तशिल्प जैसे विभिन्न शिल्प उत्पादों को प्रदर्शित किया।



19. पूर्वोत्तर में बांस मूल्य श्रृंखला के विकास के लिए 30 जुलाई 2023 को बी. सी. डी. आई. में ए. बी. डी., एन. बी. एम. और टी. बी. एम. संसाधन व्यक्तियों की बैठक



20. आई. ई. सी. सी., प्रगति मैदान, नई दिल्ली में 1 सितंबर 2023 से जी-20 नेताओं के शिखर सम्मेलन से इतर भारतीय शिल्प बाजार में भाग लिया



21. पूर्वोत्तर भारत में स्वच्छ ऊर्जा की पहुंच को बढ़ावा देने पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया जिसमें डॉ. अरुण कुमार शर्मा, महानिदेशक और डॉ. कॉलिन जेड रेंथलेई, सलाहकार (तकनीकी) ने मैरियट होटल, शिलांग में भाग लिया



22. शिलांग के राज्य केंद्रीय पुस्तकालय में नेक्टर द्वारा वित्त पोषित समावेशी संगीत विद्यालय का उद्घाटन कला और संस्कृति आयुक्त और सचिव श्री एफ. खारकोंगोर और पूर्वोत्तर परिषद की सलाहकार श्रीमती आर. लालरोदिंगी द्वारा किया गया।



23. डॉ. अरुण कुमार शर्मा, महानिदेशक और डॉ. कॉलिन जेड रेंथलेई, तकनीकी सलाहकार 12-15 मई 2023 द्वारा मिजोरम सरकार के साथ विभिन्न सहयोगात्मक कार्यों पर चर्चा करने के लिए मिजोरम की यात्रा।



24. नेक्टर मुख्यालय शिलांग कार्यालय में आमंत्रित मुख्य अतिथि श्रीमती ट्रिनिटी सायू, पद्म श्री पुरस्कार विजेता के साथ लकादोंग हल्दी की खेती में उनके अमूल्य योगदान और मेघालय में जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया।



25. नेक्टर, मेघालय किसान (सशक्तिकरण) आयोग (एम.एफ.ई.सी.); कृषि निदेशालय, मेघालय सरकार और मेघालय कृषि प्रबंधन और विस्तार प्रशिक्षण संस्थान (एम.ए.एम.ई.टी.आई.) द्वारा 19 मार्च 2024 को संयुक्त रूप से आयोजित मेघालय बकव्हीट रणनीति दैनिक 2024 के दौरान भाग लेने के लिए नेक्टर को आमंत्रित किया गया था।





26. डॉ. कॉलिन जेड रेंथलेई तकनीकी सलाहकार 4-6 दिसंबर 2023 को नेक्टर के उद्यमियों से मिलने और 5वें नागालैंड शहद मक्खी दिवस और हॉर्नबिल महोत्सव में भाग लेने के लिए नागालैंड की यात्रा करेंगे।



27. नीति आयोग के प्रतिनिधिमंडल का 20 दिसंबर 2023 को बीसीडीआई त्रिपुरा का भ्रमण



28. 12 से 14 जनवरी, 2024 तक कोच्चि में केरल बांस महोत्सव के दौरान बांस क्षेत्र पर राष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान बांस कौशल, प्रौद्योगिकी और नवाचार पर व्याख्यान दिया।



29. क्रमशः 15 अगस्त 2023 और 26 जनवरी 2024 को नेक्टर के मुख्यालय में स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस का समारोह।



30. हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाने के अपने सतत प्रयास के तहत, नेक्टर कई हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन कर रहा है, जिनमें हर तीन माह में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित करना, 29 नवम्बर 2023 को नराकास बैठक में भाग लेना और सभी नेक्टर कार्यालयों में 14 से 28 सितम्बर 2023 तक हिंदी पखवाड़ा मनाना शामिल है।





अध्याय 8:

समाचार में नेक्टर

Cotton University And NECTAR Shillong Forge Partnership For Geospatial Technology Advancement

© India News (Jan 25, 2023)



GUWAHATI: Cotton University and the North East Center for Technology Application and Reach (NECTAR) Shillong have formalised a Memorandum of Understanding (MoU) to propel the advancement of Geospatial Application software in Northeast India on January 24. The signing ceremony, attended by key dignitaries including the Vice-Chancellor of Cotton University and the Director of the Centre for Clouds and Climate Change Research, marks a significant stride in integrating Geographic Information System (GIS) and Remote Sensing (RS) applications within the academic landscape of the region.

[Click here to join our WhatsApp channel](#)

Under this collaboration, cutting-edge Geospatial Application software will be procured, facilitating the implementation of GIS and RS application-based campus training programs across various institutes in Northeast India. The partnership aims to empower students and researchers by providing state-of-the-art tools and knowledge in geospatial technologies, thereby enhancing their skills and capabilities.

Prof. Ranesh Deka, Vice-Chancellor of Cotton University, commented, "Cotton University is dedicated to providing its students with cutting-edge educational opportunities. The integration of Geospatial Application software into our academic programs will not only enhance the learning experience but also opens up new avenues for research and innovation."

ALSO READ: ULFA Dissolves 44 Years After Formation Following Tripartite Agreement

Rajni Mahanta, Director of the Centre for Clouds and Climate Change Research at Cotton University, highlighted the transformative impact this initiative would have on the academic and research landscape of Northeast India. "The Centre for Clouds and Climate Change Research will play a pivotal role in coordinating and overseeing the successful execution of the GIS and RS application-based training programs."

Centre to expand saffron cultivation in Meghalaya

by HP News Service ~ December 30, 2023 in Meghalaya, Statewide



Mokokchung Times

6m ·

Shedding light on the 100 percent utilization of bananas, Dr Arun Kumar Sarma, Director General of the North East Centre for Technology Application and Reach (NECTAR), stated that India now possesses technology capable of converting banana fiber and whole stems into leather, commonly known as vegan leather.



mokokchungtimes.com

Banana fiber and whole stem can be converted into leather: Dr Arun Kumar

Govt aims at expansion of saffron cultivation in northeast: Official

PTI 29 December, 2023 04:46 pm IST



Shillong, Dec 29 (PTI) The Centre is eyeing at expansion of saffron cultivation in the northeastern states of Sikkim, Arunachal Pradesh and Meghalaya in collaboration with state governments to improve farm income, an official said.

Saffron is a costly spice fetching a minimum of Rs 3.5 lakh per kilogramme and is rich in bioactive compounds with therapeutic properties.

The North East Center for Technology Application and Reach (NECTAR), an autonomous body under the Department of Science and Technology, Government of India, brought good quantity of saffron seeds for the pilot project from producer groups in Kashmir in 2020.

The seeds were distributed to 64 farmers in Sikkim, Arunachal Pradesh, Meghalaya, and Mizoram as part of a trial and the yield in terms of Saffron seeds and flowers was above average in the pilot project, NECTAR director general Arun Sarma told PTI.

Embassy of Japan in India
18 January

The project report seminar will be held in Shillong on 23rd Jan, by Casley India Pvt.Ltd. and VFR (Drone Company in Japan) and NECTAR. They worked on a feasibility study for the fruit crop/taste monitoring. Please come and check!

Casley India Pvt.Ltd.
VFR

FRUIT QUANTIFICATION AND QUALITY VIA REMOTE SENSING

We Casley India Pvt.Ltd. and VFR (Drone Company in JAPAN) and NECTAR worked on Feasibility Study in Meghalaya in January 2024.

OBJECTIVE
Overview of the mobile application for the fruit taste and related parameters.
Overview of the AI/ML and Blockchain technology used in the app.
Role of drone technology for the fruit crop monitoring/taste monitoring.

OUR PROJECT KEYWORDS
Blockchain
Agri-Tech
Drone

RSVP By 19/01/2024

0124-4310651
www.casleyindia.com

Manipur | MSRLM planning to set up bamboo producer companies with technical support from NECTAR

3 minutes read | 20-01-2024

NECTAR will be providing technical support for all these future projects

Blowdip Gupta



Tweet Email Share Share Share Share

A awareness cum training program on "Natural packaging for agriculture and horticulture organic products from bamboo" was jointly organized by South Asia Bamboo Foundation (SABF) and Manipur State Rural Livelihood Mission (MSRLM), Department of Rural Development, Government of Manipur from 15th-20th January at Bamboo Complex here at Imphal.

The program was sponsored by the North East Centre for Technology Application and Reach (NECTAR), Government of India. The training program included both Technical & Practical sessions presented by experts from BCFI, NECTAR, I- "novation of bamboo treatment and processing was also shown during the training program by the experts. The trainees also performed all the various processes during this training.

Drone Awareness Training Held In Guwahati



The training modules will enable people of the region with better job opportunities in both Government and Private sectors.

GUWAHATI: NECTAR has launched four training modules on Geospatial Technology applications to train and build students and unemployed youths from the North East region into professional resource persons with the introduction to Drone awareness and certified Remote Pilot Training.

THE ASSAM TRIBUNE, GUWAHATI 5

Guwahati Biotech Park organises training prog on micro-propagation

STAFF REPORTER

GUWAHATI, April 19: Guwahati Biotech Park (GBP) organised a training programme on "micro-propagation" recently with the support of North East Centre for Technology Application and Reach (NECTAR), DST, GOI.

Dr Bala Choudhury, Senior Scientist, GBP & Programme Coordinator delivered the welcome address and stressed the need of skill development training programme on plant tissue culture for local youths of the Northeast to develop entrepreneurial ventures in the field of biotechnology and allied sectors.

Prof NS Chaudhary, Vice-Chancellor, Assam Science & Technology University (ASTU) interacted with the participants and discussed new innovations and others.

Dr Pankaj Bhattacharya, CSIR-NEST, Dr Pranita Hazarika, TRS, Dr Manab Gogoi, AAU, Dr Kalpana Barman, Dr Dorodi Priyom Duarah, GoA, Dr Aniruddha Sarma, Pandu College, Dr Mousumi Saikia, ADP College, Rahul Sarma, Simanta Das, Bharat Phukan, NECTAR, Dr Sanjeeb Mazumdar & Abinash Kumar, NRDC, Dr Rajib

Chandra Dev Goswami and Dr Prajaleendra Kumar Borooah, among others attended the event.

The programme concluded with the guidance of Keerthi Jalli, CEO, GBP & DC Kamrup and Dr Arun Sharma, Director General, NECTAR.

The programme witnessed participation of start-ups, entrepreneurs and students from Assam Royal Global University, Nagaland University, Cotton University, AIMT, Bodoland University, Gauhati University, Assam Don Bosco University, Darrang College, St Edmund's College, Shillong, Nagam College, Jagroad College, Kalabor College, JIST, NIPER, NEP College of Pharmacy, start-ups viz., Prasenjit Biotech Pvt Ltd., Himangshu Goswami & Co., Greenboys, Rudrez Agrofarm & Shergam Organic Farms of Arumachal Pradesh.

GBP has planned to organise similar programmes at regular intervals.

Companies/professionals/start-ups interested to associate with GBP may visit www.guwahatibiotechpark.com for EIO of micro propagation facility as well as for upcoming trainings.

North East StartUp & Entrepreneurs' Conclave 2024 begins at Sankaradeva Kalakshetra

Guwahati: The North East Centre for Technology Application and Reach (NECTAR), an autonomous body under the Department of Science and Technology (DST), Government of India is organizing "North East StartUp & Entrepreneurs' Conclave 2024" at Srimanta Sankaradeva Kalakshetra, Guwahati on 27th & 28th March 2024. The Conclave aims at fostering innovation and entrepreneurship in North East India. It will also display the vibrancy of the North East startup ecosystem, bringing together stakeholders to unite investment, innovation, and connectivity. This was stated by Dr. Arun Kumar Sharma, Director General of NECTAR in a press conference today. The Conclave was inaugurated by Prof. Abhay Karandikar, Secretary, Department of Science of Technology, Govt of India in online mode. This event will attract diverse audiences including school and university students, entrepreneurs, investors, industry professionals and business en-

thusiasts. The goal of this Conclave is to guide the youth energy into constructive innovation and to address regional challenges, which shall



ence and Technology (DST), Government of India is organizing "North East StartUp & Entrepreneurs' Conclave 2024" at Srimanta Sankaradeva Kalakshetra, Guwahati on 27th & 28th March 2024. The Conclave aims at fostering innovation and entrepreneurship in North East India. It will also display the vibrancy of the North East startup ecosystem, bringing together stakeholders to unite investment, innovation, and connectivity. This was stated by Dr. Arun Kumar Sharma, Director General of NECTAR in a press conference today. The Conclave was inaugurated by Prof. Abhay Karandikar, Secretary, Department of Science of Technology, Govt of India in online mode. This event will attract diverse audiences including school and university students, entrepreneurs, investors, industry professionals and business en-

foster economic development of the region. NECTAR has been working for the last 10 years to promote and implement appropriate science and technology solutions for improving lives, livelihoods and wellbeing of NE region and empowerment of communities through sustainable development. The techno-conclave is a flagship event of NECTAR organized since the year 2019. The conclave will provide a platform to bring together scientists, technologists, academicians, entrepreneurs, farmers and artisans and students to discuss various S&T applications for socioeconomic development of the NE region. The event featured multiple technical sessions on topics and issues like technology diffusion in the NE region; S&T innovation for generating livelihood in the agriculture, horticulture, food processing and bam-

boo sectors; mitigating flood and erosion hazard; application of geospatial technology; Information and communication technology (ICT); technology development specifically for the northeast; science-technology-heritage connect in the northeast etc. A large number of entrepreneurs, promoted and supported by NECTAR will gather to share their success stories. The event is supported by Technical Partners - Invest India, Startup India, S&T, NIF-India and IASST as well as Organizing Partners IHFC-IIT Delhi, INSA, NIF-India, VIBHA, UBA and IASST. A Technology Expo was also organized, which will provide an opportunity for technology developers and end-users to showcase their ideas, products and processes resulting from application of S&T in various development domains. The Technology Expo was inaugurated by Prof. Ashutosh Sharma, President of Indian National Science Academy and Shri Praveen Ramadas, National Joint Organising Secretary of Vijnana Bharati (VIBHA). More than 60 technology providers, innovators, entrepreneurs, and startups including about twenty-five technology institutions and R&D labs of Central and State Governments, NGOs, companies, co-operatives, and farmer-producers' organizations, have participated in the Technology Expo. A Quiz and Debate competition will also be held to encourage students at colleges and universities to explore the exciting world of emerging technologies for NE India. Another attraction of the event was a cultural function in the evening of 27th March with diverse forms of rich traditional music and dance of NE Region. Two days long North East StartUp & Entrepreneurs' Conclave 2024 will be concluded on 28th March at Srimanta Sankaradeva Kalakshetra, Guwahati

How smart agriculture can contribute to better production

Priyanka Chakrabarti, May 17, 2023



Assam Agriculture Top Stories Govt Schemes/Policies Editorial

Spread the love

Guwahati: How smart agriculture farming can contribute to better production in India. The topic was debated at the Indian Institute of Technology, Guwahati (IITG) conducted talk on Smart Agriculture Farming during the Research and Integration Conclave 2023.



The host of the talk Professor (Dr) Rakhi Chaturvedi, Head of the Department of Biosciences and Bioengineering enlightened the gathered audience that smartness of agriculture is linked to the infrastructure available. Smartness refers to the sustainability of the agriculture throughout the year as well as tracking and monitoring in all aspects including the environment.

Smart farming also helps and if agriculture is taken as a profession by adding smartness and automation into it that it will be very useful for India. It will not only increase the production the country but will also utilize unused agriculture land for production.

The main speaker were Dr Prakash Kumar, Professor of National University of Singapore, renowned Entrepreneur Dr Dhrubajyoti Sarma, Director of Deroi Tea Sutya Prakash Borthakur and a food technologist from North East Centre for Technology Application and Reach (NECTAR) Maradon Pathwa.



Home > India > Sikkim >

Purple blooms on Northeast hills spur hope of saffron cultivation outside Kashmir

At least 15 cultivation sites were identified in Arunachal Pradesh, Meghalaya, Mizoram and Sikkim following individual land surveys meticulously assessing the related parameters specific to saffron cultivation.

Sumir Karmakar | 0000

Last Updated: 20 December 2023, 02:07 IST

Follow Us:



Saffron cultivated in the Northeast hills. Credit: Special Arrangement

Guwahati: Parts of the hills in Mechuka in Arunachal Pradesh and Yuksom in Sikkim have literally turned purple as farmers have taken to cultivation of saffron, raising hope for commercial cultivation of the costliest spice outside Kashmir.

Jongksha on air: Community radio station launched

The formal airing of Mawkynew 89.60 FM Community Radio at Jongksha was held today, with local MLA Banteidor Lyngdoh inaugurating the service, a first for rural Meghalaya.

The North East Centre for Technology Application and Reach (NECTAR) set up this community radio station, which is like a normal FM station. Informative programmes on education, health, environment, agriculture and local music will be beamed directly to the people of the rural community.

The project is a unique initiative of the communication division of NECTAR, under the leadership and guidance of Arun Kumar Sarma, its Director General.

This community radio project is entirely funded by NECTAR amounting to Rs 60 lakh and will be operated by the village dorbar of Jongksha, which will help in promoting agriculture, rural livelihood and community development to more than 100 isolated villages with a population of approximately 35,000 people under Mawkynew block and adjacent rural areas.

Speaking on the occasion, Lyngdoh said that he is proud to see that the first radio station in rural Meghalaya has come up in Jongksha.

Lyngdoh also thanked the Sordar of Jongksha, Olet Kharsohnoh, for taking the initiative to start this radio station in collaboration with NECTAR.

He also said that through this radio station people from other places can get more information about Mawkynew, especially of the beautiful tourist sites that the area is blessed with.

Lyngdoh also said that students can make use of the radio station to get tutorials on various subjects like mathematics, science and other subjects, free of cost.



Assam Meghalaya Tripura Mizoram Manipur Nagaland Arunachal Pradesh Business Entertainment >

Opinion

INNOVATIO

GROW YOUR BUSINESS WITH US
Website Development • Digital Marketing

CALL - 9430108600

Home > Assam

NECTAR hosts NE start-up conclave 2024 at Guwahati's Srimanta Sankardeva Kalakshetra

by Northeast News — April 5, 2024 in Assam



The inaugurating session witnessed participation from more than 25 young students.

Recommended

382 female recruits shine at Assam Rifles attestation parade in Nagaland
© 9 MONTHS AGO

Unemployment, a challenge in Meghalaya as job-seekers multiply: CM Sangma
© 10 MONTHS AGO



By Dr. Sunita Upadhyaya

Saffron, the oldest and the costliest spice in the world is known for its organoleptic properties. Often referred to as 'red gold' the thread-like dried stigmas of the Crocus flower are the storehouse of several bioactive compounds including crocetin, crocin, picrocrocin, kaempferol and saffranal making it a potential functional food. It has wide-ranging therapeutic properties including anti-cancer, anti-diabetic, anti-depressant, anti-seizure, anti-inflammatory, and hypolipidemic. Known for its unique flavour, aroma, and colour, saffron is a popular ingredient in various food and beverage products.



North East Start Up & Entrepreneurs' Conclave 2024 Begins at Kalakshetra

The Conclave was inaugurated by Prof. Abhay Karandikar, Secretary, Department of Science of Technology, Govt of India in online mode.



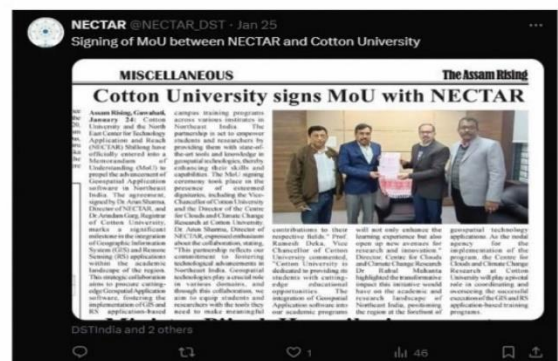
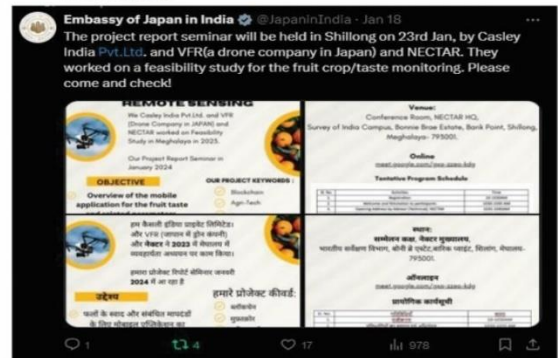
North East Start Up & Entrepreneurs' Conclave 2024 Begins at Kalakshetra

Pratidin Time

Updated on: 27 Mar 2024, 10:17 pm



The North East Centre for Technology Application and Reach (NECTAR), an autonomous body under the Department of Science and Technology (DST), Government of India is organizing 'North East Start Up & Entrepreneurs' Conclave 2024' at Srimanta Sankaradeva Kalakshetra, Guwahati on 27th & 28th March 2024. The Conclave aims to foster innovation and entrepreneurship in North East India. It will also display the vibrancy of the North East startup ecosystem, bringing together stakeholders to unite investment, innovation, and connectivity. This was stated by Dr. Arun Kumar Sarma, Director General of NECTAR in a press conference today.







दिनेश जैन एण्ड असोशीएट चार्टर्ड एकाउंटेंट्स

A-115 विकास मार्ग 2 दूसरा तल शकपूर
न्यू दिल्ली-110092.
फोन नो 42487261, 22017204
मो नंबर 9810092750
9810922575

स्वतंत्र लेखापरीक्षक की रिपोर्ट

सेवा में, सदस्य, उत्तर पूर्वी प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग एवं प्रसार केंद्र (नेक्टर)

वित्तीय विवरणों पर रिपोर्ट

हमने उत्तर पूर्वी प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग एवं प्रसार केंद्र (नेक्टर) ("संस्था के रूप में संदर्भित") के वित्तीय विवरणों जिसमें 31 मार्च, 2024 तक के तुलन-पत्र, आय और व्यय का विवरण, समाप्त हुए वर्ष के लिए प्राप्ति एवं भुगतान खाता और वित्तीय विवरणों की अनुसूचियाँ जिसमें लेखा नीतियों का महत्वपूर्ण सारांश भी शामिल है की लेखा परीक्षा की है।

अभिमत का आधार

हमने इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट ऑफ इंडिया (आईसीएआई) द्वारा जारी लेखापरीक्षा के मानकों (एस ए एस) के अनुसार अपनी लेखा-परीक्षा की है। उन मानकों के अंतर्गत हमारे दायित्वों को हमारे प्रतिवेदन में वित्तीय विवरणों की लेखा परीक्षा के प्रतिवेदन के लिए उन मानकों के अंतर्गत लेखापरीक्षक की दायित्व खंड में आगे वर्णित किया गया है। हम वित्तीय विवरणों के बारे में अपने लेखा परीक्षा के लिए अपेक्षित आचार नीति के साथ – साथ इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट ऑफ इंडिया (आईसीएआई) द्वारा जारी आचार संहिता के अनुरूप इस केंद्र से स्वतंत्र (संबंधित नहीं) हैं, और इन अपेक्षाओं के अनुरूप हमने अपने अन्य नैतिक दायित्वों का पालन किया है। हमें विश्वास है कि हमारी लेखा परीक्षा के लिए हमने जो साक्ष्य प्राप्त किए हैं, वे हमारे अभिमत को आधार प्रदान करने के लिए पर्याप्त और उपयुक्त हैं।

वित्तीय विवरणों के मामले में प्रबंधन का दायित्व

प्रबंधन का दायित्व है कि सोसायटी द्वारा अपने उपनियम (उपविधि) के अनुसार इन वित्तीय विवरणों को इस प्रकार तैयार करवाए, जो भारत में आमतौर पर स्वीकृत लेखांकन सिद्धांतों के अनुसार सोसायटी की वित्तीय स्थिति और वित्तीय निष्पादन के बारे में सही दृश्य प्रस्तुत करते हैं।

इस दायित्व में सोसायटी की परिसंपत्ति की सुरक्षा के किए और धोखाधड़ी और अन्य अनियमितताओं को रोकने और पता लगाने के लिए कानून के अनुसार पर्याप्त लेखांकन रिकार्ड का रखरखाव, उचित लेखांकन नीतियों का चयन और उपयोग, तर्कसंगत एवं और विवेकपूर्ण निर्णय लेना और अनुमान तैयार करना; तथा उपयुक्त आंतरिक वित्तीय नियंत्रणों के डिजाइन, कार्यान्वयन और रखरखाव करना शामिल है, जो लेखांकन अभिलेखों की सटीकता और पूर्णता सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी ढंग से संचालित किए जा रहे हों, जो एक सही और निष्पक्ष दृश्य प्रस्तुत करने वाले वित्तीय विवरणों की तैयारी और प्रस्तुति के लिए सुसंगत हो तथा धोखाधड़ी या त्रुटि के कारण सूचना की गलत प्रस्तुति से मुक्त हों।

वित्तीय विवरणों की लेखा परीक्षा के लिए लेखा परीक्षक के दायित्व

हमारा दायित्व, अपने लेखापरीक्षण में इन वित्तीय विवरणों पर अपना अभिमत देना है। हमने इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट ऑफ इंडिया (आईसीएआई) द्वारा जारी लेखा परीक्षा के मानकों के अनुसार अपनी लेखा परीक्षा की है। इन मानकों से यह अपेक्षा की जाती है

कि हम इन वित्तीय विवरणों की सामग्री की यथार्थता के बारे में समुचित आश्वासन प्राप्त करने के लिए लेखा परीक्षा का आयोजन करें और इसे निष्पादित करें ताकि वित्तीय विवरण समग्र रूप में सूचना की गलत प्रस्तुति से मुक्त हों।

एक लेखापरीक्षा में राशियों और वित्तीय विवरण में दर्शाए गए तथ्यों के संबंध में लेखापरीक्षा साक्ष्य प्राप्त करने की प्रक्रिया का निष्पादन शामिल है। चुनी गई प्रक्रियाएं लेखा परीक्षकों के निर्णय पर निर्भर करती हैं जिनमें किसी जालसाजी या त्रुटि के कारण वित्तीय विवरणों की सामग्री संबंधित गलत बयानी जे खतरे का मूल्यांकन भी शामिल होता है। इन खतरों के मूल्यांकन के लिए लेखापरीक्षक आंतरिक नियंत्रण पर विचार करता है जो कि सोसाइटी द्वारा वित्तीय विवरणों को तैयार करने और उनके सही प्रस्तुतीकरण से संबंधित हों ताकि लेखा परीक्षा प्रक्रियाओं को डिजाइन किया जा सके जो कि परिस्थितियों के अनुसार उपयुक्त हों लेकिन यह इकाई आंतरिक नियंत्रण के प्रभाव पर अपनी राय देने के उद्देश्य से ना हों। एक लेखा परीक्षा में प्रयुक्त लेखनीतियों की उपयुक्तता के मूल्यांकन के साथ - साथ वित्तीय विवरणों की समग्र प्रस्तुति का मूल्यांकन भी शामिल होता है।

हम विश्वास करते हैं कि हमें प्राप्त लेखापरीक्षा साक्ष्य पर्याप्त एवं उपयुक्त हैं और हमें अपनी लेखापरीक्षा पर अभिमत देने का आधार प्रदान करते हैं।

अभिमत

इस रिपोर्ट के अनुलग्नक -1 के अनुसार हमारी लेखापरीक्षा टिप्पणियों के अधीन, हम रिपोर्ट करते हैं कि:

1. हमने उन सभी सूचनाओं और स्पष्टीकरणों को प्राप्त किया है जो हमारी लेखापरीक्षा के उद्देश्यों के लिए सर्वोत्तम जानकारी और विश्वास के अनुसार आवश्यक थे।
2. हमारा अभिमत है, सोसायटी द्वारा लेखा पुस्तकों को विधि के अनुसार उचित रूप से बनाए रखा गया है।
3. इस रिपोर्ट से संबंधित तुलन-पत्र और आय एवं व्यय लेखा बहियों के अनुरूप हैं।
4. हमारे विचार में, हमें दी गई जानकारी और दिए गए स्पष्टीकरण के अनुसार उपर्युक्त लेखा, अनुसूचियाँ तथा उन पर की गई टिप्पणियां सही एवं निष्पक्ष स्थिति को प्रदर्शित करते हैं :-
 1. तुलन-पत्र के संबंध में, सोसायटी के कार्यों के लिए 31 मार्च, 2024 तक की स्थिति; तथा
 2. आय एवं व्यय खाते के संबंध में, इसी तिथि को समाप्त लेखांकन वर्ष के लिए आय से अधिक व्यय

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 25.07 .2024

दिनेश जैन एण्ड असोशीएट
चार्टर्ड एकाउंटेंट्स
फर्म रजिस्ट्रेशन नंबर: 004885N
हस्ता /-

(दिनेश कु जैन)
भागीदार
सदस्यता संख्या 082033
यूडीआईएन : 24082033BKDIBV8205

लेखा परीक्षा विश्लेषण - अनुलग्नक -1

1. सोसायटी द्वारा अपने कर्मचारियों के लिए स्रोत पर कर कटौती रिटर्न आयकर अधिनियम के अनुसार नहीं है, मार्च 2024 के महीने के वेतन के विवरण को स्रोत पर कर कटौती रिटर्न में शामिल नहीं किया गया है। हमें सोसायटी द्वारा सूचित किया गया है कि वे इस प्रथा का पालन कर रहे हैं क्योंकि मूल संगठन डीएसटी भी उसी का अनुसरण कर रहा है और मार्च महीने के वेतन का भुगतान अप्रैल में किया गया है। हालांकि, सोसायटी को आयकर प्रावधान के अनुरूप नीति की समीक्षा करने की सलाह दी गई है।
2. लेखापरीक्षा के दौरान, यह देखा गया कि 31 मार्च, 2024 तक न तो देनदार / लेनदार और न ही टी.डी.ए. लोन बकाया पार्टियों से किसी भी बकाया की पुष्टि नहीं की गई। ज्यादातर मामलों में सोसायटी ने पहले ही कानूनी कार्रवाई की है।
3. लेखापरीक्षा के दौरान, यह देखा गया कि विभिन्न टी.डी.ए. ऋण मध्यस्थता और कानूनी प्रक्रिया में हैं। सोसायटी को मामलों के निपटान के लिए जल्द से जल्द आवश्यक कदम उठाने होंगे। 31.03.2024 तक कानूनी कार्यवाही में कुल 87 मामले हैं जिनमें 30 मामले मध्यस्थता में हैं और 57 अन्य मामले के तहत हैं।
4. आपूर्तिकर्ताओं (6 पक्षों) के 53.05 लाख रुपये का अग्रिम लंबे समय से बकाया है। इसे एकत्र करने के प्रयास किए जाने चाहिए और वसूली न होने की स्थिति में इसके विरुद्ध पर्याप्त प्रावधान किया जाना चाहिए।
5. सोसायटी को अपने संचालन के प्रत्येक वर्ष में प्रत्येक तीन महीने में कम से कम एक बार कार्यकारी परिषद (ईसी) की बैठक आयोजित करने के लिए अनिवार्य किया गया था। इसलिए वर्ष के दौरान कार्यकारी समिति की 4 बैठकें आयोजित की जानी चाहिए थीं। हालांकि, समिति द्वारा 21.07.2023 और 15.02.2024 को केवल दो ईसी बैठकें आयोजित की गईं।
6. 31.03.2024 को 28.74 लाख रुपये का शेष समापन स्टॉक सोसायटी के शिलांग/गुवाहाटी स्थान पर पड़े हैं। जिसमें वर्ष के दौरान कोई हलचल नहीं होती है।
7. सोसायटी को रुपये 9,11,796/- की राशि टाइफेक से वापस मिलनी है। ₹ 2,15,622/- रुपये का टीडीएस और ₹ 6,96,174/ सीपीएफ ब्याज शामिल है दिनांक 31.03.2024 को।
8. सोसायटी को अन्य सरकारी विभागों से विभिन्न परियोजना विशिष्ट अनुदान प्राप्त हुए हैं जिन्हें निर्धारित निधि के रूप में बनाए रखा जाता है और बैलेंस शीट के माध्यम से भेजा जाता है और उक्त परियोजनाओं के पूरा होने पर, वास्तविक अधिशेष / घाटा लाभ और हानि खाते में लिया जाएगा।
9. वित्तीय वर्ष 2021-22 के दौरान दिनांक 06.08.2021 को एक समझौता निष्पादित किया गया जो कि श्री शांतमनु, विकास आयुक्त (हस्तशिल्प), कपड़ा मंत्रालय, भारत सरकार (प्रतिनिधित्व भारत के राष्ट्रपति) और नेक्टर के बीच था, इसके द्वारा बांस और बेंत विकास संस्थान (बीसीडीआई) के संचालन और प्रबंधन नियंत्रण के लिए नेक्टर को सौंपा गया है। तीन साल की अवधि के लिए ताकी त्रिपुरा और उत्तर पूर्व के साथ-साथ शेष भारत में विभिन्न प्रकार की आजीविका के विषय में मदद हो सके।

बीसीडीआई का संचालन और प्रबंधन नियंत्रण लेने के बाद, नेक्टर ने एक परियोजना के रूप में गतिविधियां शुरू कीं। 31.03.2024 और 31.03.2023 को वित्तीय सारांश नीचे संक्षेप में दिया गया है और नेक्टर के वित्तीय विवरणों में पूरी तरह से शामिल किया गया है।

विशिष्ट	चालू वर्ष 31.03.2024	विगत वर्ष 31.03.2023
प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए प्राप्त कुल अनुदान	105.67	104.57
प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए खर्च की गई कुल राशि	101.89	109.56
अधिशेष	3.78	(4.99)
कॉर्पस/पूँजीगत निधि 55.41		
वर्तमान देयताएं	164.87	161 .09
कुल	33.85	3.57
नकद और बैंक शेष	198.72	164.66
अन्य संपत्तियां एफ/ए एवं सीए	97.18	63.88
कुल	101.54	100.78

उत्तर पूर्वी प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग एवं प्रसार केंद्र लेखा परीक्षा टिप्पणियों के जवाब “अनुलग्नक -1”

लेखा परीक्षा टिप्पणियों पर बिंदुवार उत्तर नीचे दिए गए हैं :-

1. सरकार में (विशेष रूप से डीएसटी में) हर साल अप्रैल में मार्च के वेतन का भुगतान करने की प्रथा है। जैसा कि अप्रैल में भुगतान किया गया था, इसलिए इसे अगले साल की पहली तिमाही के रिटर्न में शामिल किया है। इस प्रथा की समीक्षा की जाएगी और भविष्य में ध्यान रखा जाएगा।
2. सभी देनदार / लेनदारों को उनके टी.डी.ए ऋण बकाया राशि को प्राप्त करने के लिए ईमेल भेजा गया। इसपर अभी तक कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली है। नेक्टर ने टी.डी.ए के अधिकांश डिफॉल्टरों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की है।
3. लगभग सभी टीडीए ऋण चूककर्ताओं के विरुद्ध मध्यस्थता शुरू कर दी गई है। कुछ मामलों में पुनर्भुगतान के नए पुनर्धारण पर हस्ताक्षर किए गए हैं और पुनर्धारण के बाद पीडीसी प्राप्त हुई है। अन्य मामलों में पक्षकारों ने उनके खिलाफ कानूनी मामला दर्ज होने के बाद बकाया राशि का भुगतान करना शुरू कर दिया है।
4. आपूतकर्ताओं के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही शुरू कर दी गई है और वसूली प्रक्रियाधीन है।
5. कार्यकारी परिषद की दो बैठकें आयोजित की गईं, कार्यकारी परिषद की दो अन्य बैठकें कार्यकारी परिषद के सदस्यों के समय की अनुपलब्धता के कारण आयोजित नहीं की जा सकीं।
6. कुछ स्टॉक आइटम नेक्टर के अन्य स्थानों पर पड़े हैं। अधिकांश आइटम बांस आधारित हैं और इसे नेक्टर /बीसीडीआई की बांस से संबंधित वस्तुओं के उत्पादन में उपभोग करने की योजना है।
7. टाइफेक से रुपये 9,11,796 /- की राशि प्राप्त करने की वसूली की प्रक्रिया चल रही है।
8. अन्य सरकारी विभाग से परियोजना के लिए प्राप्त अनुदान को बैलेंस शीट के माध्यम से दिखाया गया है और परियोजना के पूरा होने के बाद अधिशेष और घाटे को भारत सरकार के अनुसार लाभ और हानि खाते में लिया गया है।
9. बीसीडीआई की सभी गतिविधियों को डीसी (हस्तशिल्प) कपड़ा मंत्रालय और नेक्टर के बीच हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन के अनुसार किया जाता है।

उत्तर पूर्वी प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग एवं प्रसार केंद्र
31 मार्च, 2024 को यथास्थिति तुलन-पत्र (बैलेंस शीट)

विवरण	अनुसूची	चालू वर्ष	विगत वर्ष
निकाय पूंजीगत निधि और देयताएं			
निकाय / पूंजीगत निधि	अनुसूची 1	1,105,391,028.83	885,873,308.55
आरक्षित और अधिशेष			-
उदृष्टि / विन्यास निधि	अनुसूची 2	1,21,05,868.00	45,917,336.00
सुरक्षित ऋण और उधार			-
असुरक्षित ऋण और उधार			-
अस्थगित ऋण देयताएं			-
चालू देयताएं और प्रावधान	अनुसूची 3	25,823,327.91	23,042,802.91
कुल		1,143,320,224.74	954,833,447.46
परिसंपत्तियां			
अचल परिसंपत्तियां (निवल)	अनुसूची 4	278,678,002.45	62,758,303.79
निवेश उदृष्टि / विन्यास निधि से		-	-
निवेश - अन्य		-	-
चालू परिसंपत्तियां ऋण, अग्रिम इत्यादि	अनुसूची 5	864,642,222.29	892,075,143.67
कुल		1,143,320,224.74	954,833,447.46
महत्वपूर्ण लेखांकन नीतियां	अनुलग्नक ए		

हमारी इसी तारीख की संलग्न रिपोर्ट के अनुसार
दिनेश जैन एण्ड असोशीएट
चार्टर्ड एकाउंटेंट्स
फर्म रजिस्ट्रेशन नंबर: 004885N

हस्ता /-
(दिनेश कु जैन)
सदस्यता संख्या 082033
यूडीआईएन : 24082033BKDIBV8205
दिनांक 25.07.2024
नई दिल्ली

हस्ता /-
लेखा प्रबन्धक
(नेक्टर)

हस्ता /-
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
(नेक्टर)

हस्ता /-
महानिदेशक भागीदार
(नेक्टर)

उत्तर पूर्वी प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग एवं प्रसार केंद्र
31 मार्च, 2024 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय लेखा

विवरण	अनुसूची	चालू वर्ष	विगत वर्ष
आय			
प्रचार गतिविधियों से आय	अनुसूची 6	17,549,246.00	693,509.00
अनुदान / सहायता	अनुसूची 7	151,984,810.00	102,507,862.00
शुल्क / अभिदान	अनुसूची 8	83,500.00	106,510.50
निवेशों से आय		-	-
रायल्टी, प्रकाशन इत्यादि से आय		-	-
अर्जित व्याज	अनुसूची 9	14,250,424.00	15,805,702.00
अन्य आय (भागीदार अंशदान सहित)	अनुसूची 10	7,962,988.00	9,390,102.55
तैयार माल के स्टॉक में वृद्धि / (हास) और प्रगतिपरक कार्य	अनुसूची 11	-	(334,100.77)
कुल (क)		191,830,968.00	128,169,585.28
व्यय			
स्थापना व्यय	अनुसूची 12	52,216,488.00	47,318,013.00
अन्य प्रशासनिक व्यय आदि	अनुसूची 13	42,115,518.07	27,482,395.28
बिक्री का खर्च		-	-
अनुदान, सहायता आदि पर खर्च (परियोजना खर्च)	अनुसूची 14	85,111,330.00	79,480,389.00
व्याज		-	-
पूर्व अवधि का व्यय	अनुसूची 15	2,189,129.00	796,891.00
मूल्य हास (वर्ष के अंत में कुल जोड़)	अनुसूची 4	22,908,449.34	11,580,404.44
कुल (ख)		204,540,914.41	166,658,092.72
व्यय पर आय के आधिक्य के कारण शेष (क-ख)			
आय पर व्य के आधिक्य के कारण शेष (ख-क)		(12,709,946.41)	(38,488,507.44)
बांस और बेंत विकास संस्थान बीसीडीआई का अधिशेष		378,233.69	(499,764.52)
निकाय / पूंजीगत निधि को अंतरित अधिशेष के रूप में शेष		-	-
निकाय / पूंजीगत निधि को अंतरित घाटे के रूप में शेष		(12,331,712.72)	(38,988,271.96)

हमारी इसी तारीख की संलग्न रिपोर्ट के अनुसार

दिनेश जैन एण्ड असोशीएट

चार्टर्ड एकाउंटेंट्स

फर्म रजिस्ट्रेशन नंबर: 004885N

(दिनेश कु जैन)

सदस्यता संख्या 082033

यूडीआईएन : 24082033BKDIBV8205

दिनांक 25.07.2024

नई दिल्ली

लेखा प्रबन्धक

(नेक्टर)

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी

(नेक्टर)

महानिदेशक भागीदार

(नेक्टर)

उत्तर पूर्वी प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग एवं प्रसार केंद्र
31 मार्च, 2024 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति एवं भुगतान

राशि रु. में

प्रतियां	चालू वर्ष	गत वर्ष	भुगतान	चालू वर्ष	गत वर्ष	
1	प्रारंभिक शेष		1			
क	नकदी		क	स्थापना खर्च		44,894,820.00
ख	बैंक में जमा		ख	प्रशासनिक खर्च	52,290,178.00	
	i) चालू खाते में		ग	विक्री खर्च	45,801,853.44	34,519,168.30
	ii) जमा खाते में	104,483,150.00	2	विभिन्न परियोजनाओं से निधियों के बदले भुगतान	-	-
	iii) बचत खाते में	271,788,348.06	क	खुद की परियोजनाओं पर खर्च	-	-
				प्रौद्योगिकियों का डिलेवरी एंड सर्विसेज	16,945,180.00	25,071,933.00
2	प्राप्त अनुदान			राज्य सरकार को प्रौद्योगिकी सहायता	1,440,000.00	960,000.00
क	भारत सरकार से	391,100,000.00		प्रौद्योगिकी निर्णय में राज्य सरकार को सहायता।	4,044,429.00	6,834,286.00
ख	भारत सरकार से- शिड प्रोजेक्ट	-		टेक्नोलॉजीज-परामर्श परियोजनाएं	234,500.00	1,174,167.00
ग	एमएससीएफसी-भू-स्थानिक परियोजना	4,390,185.00		प्रौद्योगिकियों का विकास - अनुदान	27,525,052.00	35,054,190.00
घ	PM-DeVINE परियोजना (डोनर)	33,046,601.00		प्रौद्योगिकी - विस्तार और समेकन	16,268,737.00	9,908,203.00

ड	एमबीबी.मेघालय परियोजना	122,668,207.00	20,170,000.00	प्रौद्योगिकी विकास सहायता - ऋण	8,753,250.00	14,670,000.00	
च	नैशनल लाइवस्टॉक मिशन एम.मत्स्य पालन	-	5,000,000.00	घरेलू परियोजनाएं (शहद मिशन और केसर)	4,988,362.00	1,174,516.00	
छ	नेरामैक-सीबीबीओ	11,025,000.00		नेरामैक-सीबीबीओ	13,529,698.00		94,847,295.00
3	निवेशों से आय						
क	उदृष्टि / वित्तनिधि से	-	-				
ख	निजी निधियों से	-	-				
4	प्राप्त व्यय						
क	बैंक जमा पर	6,585,568.00	7,227,022.00	(बी) निर्धारित परियोजनाओं पर खर्च			
ख	ऋण अग्रिम आदि पर	7,747,701.00	6,960,191.00	क) एसडीआर नगालैंड और मेघालय पुलिस के लिए अनुदान	-	-	
ग	ऋण अग्रिम आदि	-	-	ख) टॉस प्रोजेक्ट के लिए अनुदान		1,190,156.00	
घ	एचबीए अग्रिम पर व्याज	-	-	ग) बांस प्रोजेक्ट के लिए अनुदान	7,931,351.00	420,120.00	-
ड	आयकर वापसी पर व्याज	-	7,020.00	घ) भू-स्थानिक परियोजना	10,414,019.00	5,429,424.00	
च	दंडात्मक व्याज	-	-	ड) PM-DeVine परियोजना (डोनर)	48,792,245.00	768,107.00	
5	अन्य आय (विवरण दें)	-	-	च) एमबीबी.मेघालय परियोजना	110,878,171.00	21,822,431.00	
				छ) शिड प्रोजेक्ट	11,076,922.00	2,467,365.00	
				ज) HGH प्रोजेक्ट	3,994,023.00	2,978,781.00	

घ	कृषि परियोजना से प्राप्त राशि	-	370,421.00	आपूर्तिकर्ताओं और अन्य लोगों के लिए अग्रिम	-			
ङ	परियोजना अग्रिम से वापसी	6,583.00	747,000.00		-			
च	आयकर से वापसी	16,224.00	99,559.00	सुरक्षा जमा राशि			1,491,921.00	1,00,000.00
छ	कर्मचारियों से वापसी	615,099.00	494,039.00	देय पक्षों को भुगतान				
	सिपिएफ और ईएमडी-प्राप्त	130,000.00	-	7 अंत शेष				
झ	एचजीएच प्रदर्शनी निधि प्राप्त हुई	7,781,920.00	9,13,305.00	क हस्तागत रोकड़				
	देय राशि से वापसी	-	14,00,000.00	ख बैंक बैलेंस				
				i) चालू खातों में	-			
				ii) जमा खातों में	224,153,764.99		104,483,150.00	
				iii) बचत खातों में	111,124,434.00		271,788,348.06	376,271,498.06
	कुल	967,626,206.50	663,848,760.04	कुल			967,626,206.50	663,848,760.04

हमारी इसी तारीख की संलग्न रिपोर्ट के अनुसार

दिनेश जैन एण्ड असोशिएट
चार्टर्ड एकाउंटेंट्स
फर्म रजिस्ट्रेशन नंबर: 004885N

हस्ता /- (दिनेश कु जैन)
भागीदार
सदस्यता संख्या 082033
यूडीआईएन : 24082033BKDJBY8205

हस्ता /- लेखा प्रबन्धक
(नेक्टर)
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
(नेक्टर)

हस्ता /- महानिदेशक
(नेक्टर)

घ	कृषि परियोजना से प्राप्त राशि	-	370,421.00	आपूर्तिकर्ताओं और अन्य लोगों के लिए अग्रिम	-			
ड	परियोजना अग्रिम से वापसी	6,583.00	747,000.00		-			
च	आयकर से वापसी	16,224.00	99,559.00	सुरक्षा जमा राशि		1,491,921.00		1,00,000.00
छ	कर्मचारियों से वापसी	615,099.00	494,039.00	देय पक्षों को भुगतान				
	सीपीएफ और ईएमडी-प्राप्त	130,000.00	-	अंत शेष	7			
झ	एचजीएच प्रदर्शनी निधि प्राप्त हुई	7,781,920.00	9,13,305.00	हस्तगत रोकड़	क			
	देय राशि से वापसी	-	14,00,000.00	बैंक बैलेंस	ख			
				i) चालू खातों में		-		
				ii) जमा खातों में		224,153,764.99	104,483,150.00	
				iii) बचत खातों में		111,124,434.00	271,788,348.06	376,271,498.06
	कुल	967,626,206.50	663,848,760.04	कुल		967,626,206.50	663,848,760.04	

हमारी इसी तारीख की संलग्न रिपोर्ट के अनुसार

दिनेश जैन एण्ड असोसिएट
चार्टर्ड एकाउंटेंट्स
फर्म रजिस्ट्रेशन नंबर: 004885N

हस्ता /-
(दिनेश कु जैन)
भागीदार
सदस्यता संख्या 082033
यूडीआईएन : 24082033BKDIBV8205

हस्ता /-
लेखा प्रबन्धक
(नेक्टर)
हस्ता /-
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
(नेक्टर)

उत्तर पूर्वी प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग एवं प्रसार केंद्र
31 मार्च, 2024 की स्थिति के अनुसार तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूचियाँ

राशि रु. में

अनुसूची 1 - निकाय पूंजीगत निधि	चालू वर्ष	गत वर्ष
नेक्टर		
आद्य शेष (प्रारंभिक शेष)	885,873,308.55	897,873,750.06
व्यय पर आय अधिक्य		
जोड़ : TDA का समायोजन	750,000.00	
जोड़ : डीएसटी से प्राप्त पूंजी निधि	238,500,000.00	40,000,000.00
घटाएं: आस्थगित राजस्व अनुदान	(6,594,336.00)	(8,867,064.55)
घटाएं: पूंजीगत अनुदान वापसी योग्य	-	(4,145,105.00)
घटाएं: डीएसटी को फंड रिटर्न	(806,231.00)	
कुल	1,117,722,741.55	924,861,580.51
आय से अधिक व्यय	(12,331,712.72)	(38,988,271.96)
कुल	1,105,391,028.83	885,873,308.55
समाप्ति के समय बकाया	1,105,391,028.83	885,873,308.55
अंतिम शेष	1,105,391,028.83	885,873,308.55

अनुसूची 2 रिज़र्व और अधिशेष	चालू वर्ष	गत वर्ष
ए) निधियों का प्रारंभिक शेष	45,917,336.00	57,390,979.00
बी) निधियों में वृद्धि		
दान/अनुदान		
क) अनुदान सीड परियोजना के लिए अनुदान	130,632.00	-
ख) पीएम डिवाइन परियोजना के लिए अनुदान	33,046,601.00	9,07,567.00
ग) भू-स्थानिक परियोजना के लिए अनुदान	226,449.00	43,90,815.00
घ) मेघालय एमबीबी परियोजना के लिए अनुदान	122,668,207.00	20,170,000.00
ड) राष्ट्रीय लाइव स्टॉक परियोजना के लिए अनुदान	-	50,00,000.00
च) डीसी हैन्डिक्रेफ्ट के लिए अनुदान	6,486,978.00	9,13,305.00
छ) नेरमेक सी बी बी ओ	50,644.00	
फंड के कारण किए गए निवेश से आय	-	-
अन्य परिवर्धन (निर्दिष्ट करें)	-	-
कुल (ए + बी)	208,526,847.00	88,772,666.00
सी) निधियों के उद्देश्यों के प्रति उपयोग/व्यय		
i) पूंजीगत व्यय	-	-
टॉस बांस और एसडीआर परियोजना व्यय	-	67,72,793.00
सीड परियोजना के लिए व्यय	7,343,540.00	-
पीएम डिवाइन परियोजना के लिए व्यय	36,456,377.00	-

ii) राजस्व व्यय		
क) टॉस बांस और एसडीआर परियोजना व्यय	7,931,351.00	1,08,000.00
ख) सीड परियोजना के लिए व्यय	3,873,288.00	25,62,817.00
ग) पीएम डिवाइन परियोजना के लिए व्यय	13,312,731.00	7,68,107.00
घ) भू-स्थानिक परियोजना के लिए व्यय	10,388,382.00	57,58,873.00
ड) मेघालय एमबीबी परियोजना के लिए व्यय	108,759,762.00	2,38,39,361.00
च) राष्ट्रीय लाइव स्टॉक परियोजना के लिए व्यय	3,950,000.00	-
छ) डीसी हैंडीक्रैफ्ट के लिए व्यय	4,405,548.00	29,94,735.00
ज) नेरमेक सी बी बी ओ	-	50,644.00-
कुल (सी)	196,420,979.00	42,855,330.00
वर्ष के अंत में शुद्ध शेष (ए+बी+सी)	12,105,868.00	45,917,336.00
नोट:		
1. प्रकटीकरण अनुदान से जुड़ी शर्तों के आधार पर प्रासंगिक शीर्षों के तहत किया जाएगा		
2. केंद्र/राज्य सरकारों से प्राप्त योजना निधि को अलग निधि के रूप में दिखाया जाना है और किसी अन्य निधि के साथ मिश्रित नहीं किया जाना है		

उत्तर पूर्वी प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग एवं प्रसार केंद्र
31 मार्च, 2024 की स्थिति के अनुसार तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूचियाँ

राशि रु. में

अनुसूची 3 वर्तमान देयताएँ तथा प्रावधान	चालू वर्ष	गत वर्ष
क.वर्तमान देयताएँ		
1.प्रतिग्रहण	-	-
2.विविध लेनदार		
क० माल के लिए	855,506.00	855,506.00
ख० अन्य	750,869.00	99,567.00
3.अग्रिम प्राप्ति		
भागीदार अंशदान देय	820,785.00	820,785.00
4.उपार्जित ब्याज पर देय नहीं		
क.सुरक्षित ऋण / उधार	-	-
ख.असुरक्षित ऋण / उधार	-	-
5.सांविधिक देयताएँ		
क.बकाया राशि	-	-
ख.अन्य : टीडीएस देय	1,440,397.00	2,764,510.00
ग.जीएसटी देय	16,660.00	37,970.00
घ.ईपीएफ देय	-	-
6. अन्य वर्तमान देयताएँ		
प्रशासनिक खर्च देय (अनुलग्नक-1)	1,478,140.00	1,348,250.00
स्थापना खर्च देय (अनुलग्नक-2)	4,107,730.00	3,714,353.00
बांस और बेत विकास संस्थान बीसीडीआई	6,461,560.91	3,510,181.91
एसडीआर टेक्नोलौजी	9,434,880.00	9,434,880.00
पूँजीगत अनुदान वापसी योग्य	-	-
बयाना राशि		
प्रतिभूति प्रतिधारण मुद्रा – आर एस सोफ्टेक	46,800.00	46,800.00
ओवीएन बायोएनर्जी प्रा. लिमिटेड, गुडगाँव	1,00,000.00	1,00,000.00
श्री ईजीनियर्स, हैदराबाद	1,00,000.00	1,00,000.00
देवा बाम्बू एण्ड एलाईड इंड., इम्फाल	5,000.00	5,000.00
ढंजाल मकेनिकल वर्क्स प्रा. लिमिटेड	1,00,000.00	1,00,000.00
प्रिंस कार्बन एण्ड चारकोल इंड.	5,000.00	5,000.00
आर.डी। इंडस्ट्रियल कॉर्पोरेशन, कोलकाता	1,00,000.00	1,00,000.00
कुल (क)	25,823,327.91	23,042,802.91
ख. प्रावधान		
1.कराधान के लिए	-	-
2.ग्रेच्युटी	-	-
3.अधिवर्षिता / पेंशन	-	-
4.संचित अवकाश वेतन / नकदीकरण	-	-
5.व्यापार आश्वासन / दावे	-	-
6.अन्य (स्पष्ट करें)	-	-
कुल (ख)	-	-
कुल (क+ख)	25,823,327.91	23,042,802.91

अनुसूची 4- अचल संपत्ति - अमूल	अवमूल्यन की दर	सकल ब्लॉक				अवमूल्यन							नेट ब्लॉक	नेट ब्लॉक
		वर्ष की शुरुआत में लागत / मूल्य 01.04.2023	वर्ष के दौरान परिवर्धन 01.04.2023 - 30.09.2023	वर्ष के दौरान परिवर्धन 01.10.2023 - 31.03.2024	वर्ष के दौरान कटौती 01.04.2023 - 31.03.2024	वर्ष के अंत में लागत / मूल्य 31.03.2024	वर्ष 01.04.2023 की शुरुआत से	ओपनिंग बैलेंस पर 01.04.2023	वर्ष के दौरान परिवर्धन पर 01.04.2023 - 30.09.2023	वर्ष के दौरान परिवर्धन पर 01.10.2023 - 31.03.2024	वर्ष के लिए मूल्यहास	वर्ष के अंत तक कुल 31.03.2024	31.3.2024 के चालू वर्ष के अंत तक	चालू वर्ष के अंत तक 31.3.2023
या क्रिप्स														
A. अचल संपत्ति														
1. भूमि														
2. भवन														
a) फ़्लैट/हॉल भूमि पर		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
b) लॉज/हॉल भूमि पर		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
ग) स्वामित्व वाले प्लॉट/परिसर		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
d) भूमि पर अधिसूचनाएं जो इकाई से संबंधित नहीं हैं		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
ई) आंतरिक कार्य	0%	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
3. संचयन मशीनरी और उपकरण	15%	11,667,391.59	883,283.00	15,971,320.00	-	28,521,994.59	6,048,079.02	842,896.90	132,492.45	1,197,849.01	2,173,238.36	8,221,317.38	20,300,677.21	5,619,312.57
4. वाहन	15%	889,675.00	-	-	-	889,675.00	579,300.05	46,556.24	-	-	46,556.24	625,856.29	263,818.71	310,374.95
5. फर्नीचर और फिक्स्चर	10%	7,840,206.41	817,734.00	1,870,650.00	-	10,528,590.41	3,026,993.54	481,321.29	81,773.40	93,532.50	656,627.19	3,683,620.73	6,844,969.68	4,813,212.87
6. कार्यालय उपकरण	15%	9,268,717.13	89,996.00	127,501.00	24,268.00	9,461,946.13	3,611,177.99	848,630.87	13,499.40	9,562.58	871,692.85	4,482,870.83	4,979,075.29	5,657,539.14
7. कंप्यूटर/बाह्य उपकरण	40%	34,413,783.07	-	3,804,625.00	43,529.00	38,174,879.07	17,575,875.18	6,735,163.15	-	760,925.00	7,496,088.15	25,071,963.33	13,102,915.74	16,837,907.89
8. इलेक्ट्रिक इंस्टॉलेशन		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-

वार्षिक रिपोर्ट
2023-24

उत्तर पूर्वी प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग एवं प्रसार केंद्र
31 मार्च, 2024 की स्थिति के अनुसार तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूचियाँ

अनुसूची 5 वर्तमान आस्तियाँ, ऋण, अग्रिम इत्यादि	चालू वर्ष	गत वर्ष
क. वर्तमान आस्तियाँ		
1. मालसूची		
क. भंडार एवं स्पेयर्स	-	-
ख. फुटकर औज़ार	-	-
ग. बिक्री के लिए माल		
तैयार माल	2,874,229.27	2,874,229.27
तैयार होने वाला माल		
कच्चा माल		
घ. सॉफ्टवेयर परिभाषित रेडियो – एसडीआर	-	-
2. लेनदारी लेखे (प्रचार गतिविधियाँ)		
क. छह महीने से अधिक की अवधि का बकाया ऋण	25,180,388.54	25,320,388.54
ख. अन्य	3,814,417.00	8,327.00
3. नकदी शेष (चेक / ड्राफ्ट्स और अग्रदाय सहित)	-	-
4. बैंकों में जमा राशियाँ	-	-
क) अनुसूचित बैंकों के पास	-	-
चालू खातों में	-	-
जमा खातों में (अल्पावधि जमा)	111,124,434.00	1,04,483,150.00
बचत खातों में	224,153,764.99	2,71,788,348.06
बांस और बैंत विकास संस्थान बीसीडीआई बचत खातों में	9,718,502.82	63,88,890.13
ख) गैर-अनुसूचित बैंकों के पास	-	-
चालू खातों में	-	-
जमा खातों में (अल्पावधि जमा)	-	-
बचत खातों में	-	-
5. डाकघर बचत खाते	-	-
कुल (क)	376,865,736.62	4,10,863,333.00

उत्तर पूर्वी प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग एवं प्रसार केंद्र
31 मार्च, 2024 की स्थिति के अनुसार तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूचियाँ

अनुसूची 5 वर्तमान आस्तियाँ, ऋण, अग्रिम इत्यादि	चालू वर्ष	गत वर्ष
ख. ऋण, अग्रिम और अन्य आस्तियाँ		
1. ऋण		
क) प्रौद्योगिकी विकास सहायता ऋण	461,856,249.00	4,57,938,331.00
ख) स्टाफ और अन्य ऋण		
अ) स्टाफ : अग्रिम (अनुलग्नक-3)	5,076,961.00	48,68,353.00
आ) अन्य : गतिविधियों में संलग्न संस्थाएँ / इकाई के समान उद्देश्य		
इ) अन्य – सीपीडब्ल्यूडी को अग्रिम	-	-
ई) कर्मचारियों से वसूली	-	-
2. अग्रिम और अन्य मदों में नकदी में वसूली योग्य राशि या वस्तु रूप में या मूल्य रूप में प्राप्य		
अ) पूंजी खाते पर	-	-
आ) परियोजनाओं के लिए पूर्व भुगतान	-	-
इ) प्रतिभूति		
प्रतिभूति : ई-साइन सीडेक	100,000.00	1,00,000.00
प्रतिभूति : एम टी एन एल	1,500.00	1,500.00
प्रतिभूति : किराया टी डी सी गुवाहाटी	166,662.00	1,66,662.00
प्रतिभूति : कुतुब सर्विस स्टेशन	10,000.00	10,000.00
प्रतिभूति : नेक्टर गेस्ट हाउस	200,000.00	1,95,000.00
प्रतिभूति : बी.एस.एन.एल	2,499.00	2,499.00
प्रतिभूति : पानी की बोतल	3,000.00	3,000.00
प्रतिभूति : एस ओ आई, शिल्लोंग	236,700.00	1,20,000.00
प्रतिभूति : गैस शिल्लोंग	3,550.00	3,550.00
प्रतिभूति : एपीडीसीएल (बिजली)	537,060.00	82,500.00
प्रतिभूति : रिलायंस	3,536.00	-
प्रतिभूति : गेस्ट हाउस गुवाहाटी	2,00,000.00	-
प्रतिभूति : GBP गुवाहाटी	217,125.00	-
एमडी : कृषि भवन	5,00,000.00	-
ई) अन्य		
मध्यस्थता वसूली व्यय	54,313.00	54,313.00
टाईफेक से वसूली	911,796.00	911,796.00
दिवालिआपन के लिए शुल्क	45,436.00	45,436.00
पूर्वभुगतान बीमा शुल्क	8,120.00	760.00
पूर्वभुगतान वार्षिक रखरखाव शुल्क	3,837.00	11,472.00
भू-राजस्व शुल्क	1,000.00	2,000.00
पूर्वभुगतान वेबसाइट रखरखाव	825.00	1445.00
एसडीआर की स्थापना अरुणाचल प्रदेश	435,963.00	435,963.00
ए बी कम्पोजिट प्रा लिमिटेड	1,797,982.95	1,797,982.95
आपूर्तिकर्ताओं और अन्य को अग्रिम (अनुलग्नक-5)	5,350,532.00	5,350,532.00
3. उपचित आय		

अ) उद्दिष्ट / अक्षय निधि पर निवेश से	-	-
आ) निवेश पर – अन्य		
इ) ऋण और अग्रिम पर		
ई) अन्य : उपचित ब्याज	5,197,827.00	50,20,857.00
4. दावे प्राप्य		
जी एस टी प्राप्य	4,543,665.72	40,71,634.72
टी डी एस (निर्धारण वर्ष 2023-24)	-	16,224.00
टी डी एस (निर्धारण वर्ष 2024-25)	3,10,346.00	-
कुल (ख)	487,776,485.67	481,211,810.67
कुल (क+ख)	864,642,222.29	892,075,143.67

उत्तर पूर्वी प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग एवं प्रसार केंद्र
31 मार्च, 2024 की स्थिति के अनुसार आय और व्यय खाते के भाग के रूप में अनुसूचियाँ

अनुसूची 6 प्रचार गतिविधियों से आय	चालू वर्ष	गत वर्ष
1. प्रचार गतिविधियों से आय		
क) तैयार माल का विक्रय/व्यापार	-	3,93,300.00
ख) कच्चे माल का विक्रय	-	-
ग) रद्दी का विक्रय	-	-
घ) फुटकर	-	-
2. सेवाओं से आय		
क) श्रम तथा प्रक्रमण संसाधन शुल्क	-	-
ख) व्यावसायिक / परामर्शदात्री सेवाएं	3,250,846.00-	2,25,000.00-
ग) एजेंसी आदृत और दलाली	-	-
घ) रखरखाव सेवाएँ (उपकरण / संपत्ति)	-	-
ङ) अन्य (निर्दिष्ट करें)	48,400.00	75,209.00-
च) नेरमेक प्रोजेक्ट प्राप्ति	14,250,000.00	-
कुल	17,549,246.00	6,93,509.00

अनुसूची 7 अनुदान / सब्सिडी	चालू वर्ष	गत वर्ष
अप्रतिसंहरणीय अनुदान और सब्सिडी प्राप्य		
1. केंद्र सरकार से अनुदान सहायता	-	-
सहायता अनुदान (सामान्य)	115,400,000.00	7,66,00,000.00
घटाएँ : सहायता अनुदान (सामान्य)	(129,165.00)	(3,381.00)
सहायता अनुदान (वेतन)	37,200,000.00	3,00,00,000.00
घटाएँ : सहायता अनुदान (वेतन)	(486,025.00)	(40,88,757.00)
2. राज्य सरकार से	-	-
3. सरकारी एजेंसी से	-	-
4. संस्थानों / कल्याणकारी निकाय से	-	-
5. अंतर्राष्ट्रीय संगठनों से	-	-
6. अन्य (निर्दिष्ट करें)	-	-
कुल	151,984,810.00	102,507,862.00

अनुसूची 8 शुल्क / अंशदान	चालू वर्ष	गत वर्ष
1. प्रवेश शुल्क	-	-
2. आरटीआई प्राप्ति	-	52.00
3. संगोष्ठी / कार्यक्रम शुल्क	-	20,500
4. प्रक्रिया शुल्क	-	27,933.50
5. अन्य (निविदा राशि)	83,500.00	58,025.00
कुल	83,500.00	1,06,510.50

उत्तर पूर्वी प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग एवं प्रसार केंद्र
31 मार्च, 2024 की स्थिति के अनुसार आय और व्यय खाते के भाग के रूप में अनुसूचियाँ

अनुसूची 9 अर्जित ब्याज	चालू वर्ष	गत वर्ष
1.सावधि जमा पर		
क) अनुसूचित बैंक से प्राप्त	6,833,785.00	91,90,504.00
ख) गैर-अनुसूचित बैंक से प्राप्त	-	-
ग) संगठनों से प्राप्त	-	-
घ) अन्य	-	-
2.बचत खातों पर		
क) अनुसूचित बैंक से प्राप्त	7,416,639.00	66,08,178.00
ख) गैर-अनुसूचित बैंक से प्राप्त	-	-
ग) डाकघर बचत खातों से प्राप्त	-	-
घ) अन्य	-	-
3.ऋणों पर		
क) कर्मचारी / स्टाफ से	-	-
ख) अन्य (दीर्घावधि के अग्रिम पर)	-	-
4. देनदारों और अन्य प्राप्तियों पर ब्याज		
क) दंडात्मक ब्याज	-	-
ख) आयकर रिफंड पर ब्याज	-	7020.00
कुल	14,250,424.00	1,58,05,702.00

उत्तर पूर्वी प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग एवं प्रसार केंद्र
31 मार्च, 2024 की स्थिति के अनुसार आय और व्यय खाते के भाग के रूप में अनुसूचियाँ

अनुसूची 10 अन्य आय	चालू वर्ष	गत वर्ष
1. आस्तियों के विक्रय / निपटान से प्राप्त		
क) स्वामित्व आस्तियों से	-	-
ख) अनुदान के बिना अर्जित आस्तियां, निःशुल्क प्राप्ति से	-	-
2. निर्यात प्रोत्साहन वसूली से		
3. विविध सेवाओं से प्राप्त शुल्क से (HGH परियोजना)	1,294,942.00	-
4. विविध आय		
आस्थगित राजस्व अनुदान	6,594,336.00	88,67,064.55
अन्य प्राप्ति	25,710.00	3,29,977.00
उपयोगकर्ता शुल्क	48,000.00	1,34,570.00
विविध प्राप्ति	-	58,491.00
कुल (क)	7,962,988.00	93,90,102.55
भागीदार अंशदान		
कुल (ख)	-	-
परियोजना अनुदान से वापसी	-	-
कुल (ग)	-	-
कार्यशील पूंजी ऋण से वापसी		
कुल (घ)	-	-
कुल (क)+(ख)+(ग)+(घ)	7,962,988.00	93,90,102.55

अनुसूची 11 तैयार माल और तैयार होने वाले माल के स्टॉक में वृद्धि / (घटत)	चालू वर्ष	गत वर्ष
क) शेषमाल		
तैयार माल	28,74,229.27	28,74,229.27
तैयार होने वाला माल	-	-
ख) घटाएँ : आरंभिक स्टॉक	-	-
तैयार माल	28,74,229.27	32,08,330.04
तैयार होने वाला माल	-	-
निवल वृद्धि / (घटत) {क-ख}	-	(3,34,100.77)

अनुसूची 12 स्थापना व्यय	चालू वर्ष	गत वर्ष
1. वेतन	45,489,777.00	39,753,801.00
2. भत्ते एवं अधिलाभ	784,207.00	7,51,730.00
3. भविष्य निधि में नियोक्ता का अंशदान	574,821.00	6,12,009.00
4. मजदूरी	636,018.00	9,24,491.00
5. कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति और सेवा निवृत्ति लाभ पर खर्च	-	12,41,942.00
6. कर्मचारी कल्याण खर्च		
7. एनपीएस योगदान	4,104,442.00	3,63,0315.00
8. अन्य (निर्दिष्ट करें)		

चिकित्सा प्रतिपूर्ति	441,751.00	21,2244.00
शिक्षा शुल्क	162,000.00	166,500.00
ईपीएफ प्रशासनिक प्रभार	23,472.00	24,981.00
कुल	52,216,488.00	47,318,013.00

उत्तर पूर्वी प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग एवं प्रसार केंद्र
31 मार्च, 2024 की स्थिति के अनुसार आय और व्यय खाते के भाग के रूप में अनुसूचियाँ

अनुसूची 13 प्रशासनिक व्यय	चालू वर्ष	गत वर्ष
क) मरम्मत और रखरखाव	886,702.00	394,319.00
ख) किराया, दरें और कर	4,191,900.00	793,029.00
ग) कार किराया प्रभार	1,076,619.00	1,377,853.00
घ) डाक एवं कूरियर प्रभार	55,108.00	113,280.00
ड) प्रिंटिंग एवं स्टेशनरी	652,182.00	693,927.00
च) यात्रा व्यय (घरेलू)	2,769,638.00	2,840,418.00
छ) संगोष्ठी/कार्यशालाओं पर व्यय	2,543,780.00	2,369,703.00
ज) बैठक खर्च	175,936.00	377,908.00
अ) लेखा परीक्षा शुल्क	119,250.00	105,800.00
झ) विज्ञापन खर्च	387,062.00	153,943.00
ञ) सवारी खर्च	148,565.00	88,589.00
ट) दूरभाष एवं संचार खर्च	170,398.00	118,213.00
ठ) इंटरनेट खर्च	1,377,057.00	941,465.00
ड) एंटी वायरस शुल्क	514,946.00	-
ढ) हिंदी कार्यक्रम व्यय	202,871.00	58,500.00
ण) लीगल तथा व्यावसायिक शुल्क	1,639,518.00	1,447,094.00
त) परीक्षण शुल्क	-	50,327.00
थ) मध्यस्थता का खर्च	382,500.00	306,750.00
द) सदस्यता तथा शुल्क	296,315.00	457,092.00
ध) वार्षिक रखरखाव शुल्क	12,750.00	7,783.00
न) शिपिंग और परिवहन	283,054.00	12,683.00
न) वेबसाइट शुल्क	161,630.00	134,811.49
प) प्रचार एवं प्रसार	465,467.00	156,700.00
फ) विविध कार्यालयी व्यय	937,935.00	809,000.98
ब) विद्युत	225,320.00	152,416.00
भ) बैंक शुल्क	13,089.07	10,981.81
म) समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ	53,986.00	39,122.00
य) प्रदर्शनी व्यय	3,588,576.00	230,345.00
र) मानदेय और सरकारी सदस्य	226,234.00	89,000.00
र) सुरक्षा शुल्क	375,101.00	280,541.00
ल) अतिथि गृह रखरखाव व्यय	347,124.00	243,984.00
ळ) बीमा शुल्क	22,738.00	12,657.00
ळ) उपभोग योग्य वस्तुएं	574,990.00	4,267,010.00
व) एनसीएलटी केस शुल्क	7,602,768.00	3,821,751.00
श) नेक्टर कार्यालय शिलांग और क्वार्टर का नवीनीकरण	2,679,824.00	278,707.00
ष) गृह व्यवस्था शुल्क	886,209.00	275,975.00
ह) उपभोग योग्य वस्तुएं	166,416.00	145,862.00
त्र) परामर्श शुल्क/सेवा शुल्क	1,246.00	3,173,414.00
ज्ञ) ई-ऑफिस सेवा शुल्क	5,900,714.00	651,441.00
कुल	42,115,518.07	27,482,395.28

उत्तर पूर्वी प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग एवं प्रसार केंद्र
31 मार्च, 2024 की स्थिति के अनुसार तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूचियाँ

अनुसूची 14 अनुदान, सहायिकी इत्यादि पर व्यय	चालू वर्ष	गत वर्ष
क) संस्थानों / संगठनों को दिया जाने वाला अनुदान		
अनुदान (अनुलग्नक 4)	66,451,315.00	78,255,779.00
ऋण	-	
ख) संस्थानों / संगठनों को दी जाने वाली सहायिकी	18,660,015.00	12,24,610.00-
कुल	85,111,330.00	79,480,389.00

अनुसूची 15 पूर्वगामी व्यय	चालू वर्ष	गत वर्ष
क) कर	34020.00	-
ख) मध्यस्थता खर्च	-	-
ग) टेक्सेस	-	-
घ) अन्य कार्यालय व्यय	12,400.00	18,900.00
ङ) CRA व्यय	845.00	-
च) कार किराया व्यय	1,29,040.00	-
छ) कानूनी और व्यावसायिक शुल्क	77,495.00	321.00
ज) समाचार पत्र पत्रिकाएँ	603.00	750.00
झ) दूरभाष व्यय	13,803.00	35,658.00
ञ) रखरखाव शुल्क	4700.00	4700.00
ट) शिलांग कार्यालय का किराया	1,044,000.00	62,667.00
ठ) मुद्रण शुल्क	-	2400.00
ड) सुरक्षा शुल्क	-	24,480.00
ढ) बिजली शुल्क	-	2,43,361.00
ण) ग्रंटइटी	876,923.00	1,73,654.00
त) परियोजन व्यय	-	2,30,000.00
कुल	2,189,129.00	7,96,891.00

उत्तर पूर्वी प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग एवं प्रसार केंद्र

अनुलग्नक -1

प्रशासनिक व्यय देय

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
वाहन व्यय देय		2,524.00
विविध कार्यालयी व्यय देय		62190.00
विद्युत देय		35,935.00
यात्रा व्यय देय (घरेलू)		2,48,182.00
लेखा - परिक्षण शुल्क देय		66,627.00
प्रशासनिक व्यय देय		23,965.00
डाक-व्यय तथा कूरियर शुल्क देय		1,404.00
इन्टरनेट देय		35,006.00
सुरक्षा शुल्क देय		25,494.00
लीगल तथा व्यावसायिक शुल्क देय	78,480.00	1,05,480.00
समाचार पत्र व्यय देय		1,080.00
मानदेय		2,500.00
कार किराया शुल्क देय		2,21,422.00
इंटरनेट स्टाइपेंड देय	10,000.00	1,04,739.00
परियोजना कर्मचारियों के लिए देय वेतन	1,389,660.00	4,11,702.00
कुल	1,478,140.00	13,48,250.00

अनुलग्नक -2

स्थापना व्यय देय

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
एनपीएस योगदान देय	703,353.00	6,43,394.00
वेतन देय	3,327,093.00	29,84,791.00
QTR शुल्क देय	13,064.00	-
वेतन देय	64,220.00	86,168.00
कुल	4,107,730.00	37,14,353.00

स्टाफ अग्रिम

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
खुदरा रोकड़ अग्रिम		
बी के मंथन	3,000.00	3,000.00
गेवीन वेडरोफफ	30,000.00	14,892.00
फेडलिया डींगदोह	20,000.00	20,000.00
भरत फुकन	20,000.00	15,000.00
अजीत कुमार	20,000.00	20,000.00
राजदीप सिंह	20,000.00	-
सीमोन फुकन	20,000.00	-
यात्रा अवकाश अग्रिम		
देबरता गॉंगओई	62,000.00	
डॉ कॉलिन रेनथेली	26,000.00	
एचबीए एडवांस		
अंकित श्रीवास्तव	2,138,000.00	23,30,000.00
सोमनाथ नाथ	2,179,000.00	21,79,000.00
आधिकारिक अग्रिम एवं दौरा अग्रिम		
बी के मंथन	24000.00	24000.00
मनोरंजन डेका	-	9,500.00
रवि सिंह	11,840.00	11,840.00
राकेश कुमार शर्मा	-	70,000.00
राम कुमार	16,000.00	-
अक्षय कुमार पट्टी	46,000.00	-
साइमन फुकन	100,000.00	30,000.00
वीरेंद्र कुमार यदाव	30,000.00	-
बिरेन्द्र कुमार शर्मा	30,000.00	-
सिमंता दास	-	60,000.00
रवि कुमार सिंह	81,121.00	81,121.00
डॉ कॉलिन रेनथेली	100,000.00	-
डॉ अभिनव कान्त	100,000.00	-
कुल	5,076,961.00	48,68,353.00

उत्तर पूर्वी प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग एवं प्रसार केंद्र
अनुदान

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
राज्य सरकार को निर्णय समर्थित प्रौद्योगिकी सहायता		
शहद परीक्षण प्रयोगशाला-दीमापुर (NBHM)	1,050,000.00	2,100,000.00
आईओटी आधारित नर्स कॉलिंग सिस्टम	-	1,000,000.00
मोबाइल क्लिनिक रोगी निगरानी प्रणाली	1,494,429.00	996,286.00
रोगी निगरानी प्रणाली	-	2,298,000.00
सौर ऊर्जा संचालित कोल्ड स्टोरेज-सेरछिप, मिजोरम	-	440,000.00
सौर ऊर्जा कोल्ड स्टोरेज की स्थापना-मेघालय	1,500,000.00	-
कुल (A)	4,044,429.00	6,834,286.00
राज्य सरकार को प्रौद्योगिकी सहायता		
पारंपरिक की आकृति डिजाइन और प्रतिकृति प्रणाली	1,440,000.00	960,000.00
कुल (बी)	1,440,000.00	960,000.00
प्रौद्योगिकी परामर्श परियोजनाएं		
उत्पादों का भौतिक रसायन और शैल्फ जीवन मूल्यांकन-निफ्ट	234,500.00	209,167.00
विशेषता चाय का उत्पादन और विपणन-एएयू, जोरहाट	-	627,000.00
आईआईटी दिल्ली द्वारा फूड बॉक्स और लिक्विड कंटेनर का विकास	-	338,000.00
कुल (C)	234,500.00	1,174,167.00
प्रौद्योगिकी अनुदान का विकास		
CSIR-CIMAP (सौर सुगंध आसवन का विकास)	374,645.00	191,400.00
कोम्बुचा-पारस बायोसाइंसेज का विकास	180,000.00	760,000.00

आभासी प्रयोगशाला का विकास-असम	-	403,200.00
गमुसा लूम टाइप के लिए सॉफ्टवेयर का विकास	(6,583.00)	919,000.00
कपड़ा और फैशन का बुनियादी उन्नयन- आरकेएम	-	1,000,000.00
सीमांत किसानों के लिए एकीकृत कृषि प्रणाली	-	420,000.00
कम लागत वाला जल उपचार संयंत्र-एनआईटी, मणिपुर	352,000.00	-
ट्यूलिप की खेती	265,230.00	-
मधुमक्खी पालन कॉलोनी	270,000.00	-
इमल्सफाइड मीट प्रोडक्ट्स प्रोजेक्ट्स	1,000,000.00	-
मशरूम की जैविक खेती-सैतूल, मिजोरम	-	313,000.00
अदरक और हल्दी प्रसंस्करण की स्थापना -कामरूप	-	669,000.00
इलेक्ट्रिक स्मोकर-डीओ नाम के साथ धूम्रपान इकाई की स्थापना	303,600.00	-
मौफैक्टू बायो-सैंपलर (आव्या) के लिए यूनिट की स्थापना	-	1,500,000.00
ट्यूमर मार्जिन डिटेक्शन-जीआरएस इंडिया प्राइवेट लिमिटेड।		495,000.00
वेस्ट टू वेल्थ-उदलगुरी फार्मर्स कॉप सोसाइटी		952,513.00
कम लागत उपयोगकर्ता के अनुकूल झाड़ू बाइंडिंग	640,000.00	-
वन सर्वेक्षण के लिए एयरोस्टेटिक ड्रोन	944,000.00	944,000.00
कृषि एकीकृत खेती सिक्किम	315,200.00	315,200.00
एंटी माइक्रोबियल कोटिंग (मास्क) -3 डी पासमा प्रौद्योगिकी		547,912.00
बायोडिग्रेडेबल लो-कॉस्ट किट (IIT-Delhi)	246,400.00	246,000.00
पारंपरिक कौना क्राफ्ट को उत्प्रेरित करना	-	917,440.00

इलिकियम ग्रिफिथी का विकास - मोन्यूल	1,380,000.00	920,000.00
प्रोजेक्ट मॉनिटरिंग डैशबोर्ड-सीईएम का विकास	752,435.00	752,435.00
विकास तात्कालिक हाइपोक्लोराइट जेनरेटर-एम्प्रिकेयर	621,600.00	789,600.00
प्रशिक्षण/उत्पादन-बेल मेट यूनिट-आईआईटी गुव का विकास	-	2,081,616.00
डिमोरिया एरी क्लस्टर	320,000.00	320,000.00
मसाला एवं सुगंधित आसवन इकाई की स्थापना	1,077,000.00	718,000.00
लोटस फाइबर का निष्कर्षण और प्रसंस्करण	485,000.00	1,940,000.00
अनानास पत्ती फाइबर का निष्कर्षण-एनआईटी मेघा	506,352.00	506,352.00
हाइड्रोलिक राम पंप सिंचाई	-	176,927.00
रंगीन मोती उत्पादन-कपास यूनो में नवाचार	260,000.00	260,000.00
एकीकृत डेयरी उत्पाद (दिखोमुखू)	-	1,250,000.00
थर्मल इंजरी स्टो का उपयोग करते हुए एकीकृत नवाचार	264,224.00	1,980,000.00
कम्पोस्टेबल बायोप्लास्टिक-इकोस्टार्च का विनिर्माण	198,600.00	1,880,000.00
बहुउद्देशीय इको एंजाइम प्रोसेसिंग यूनिट (MEEPU)	1,180,620.00	787,140.00
मशरूम की खेती -असम (एमडीएफ)	-	1,500,000.00
मशरूम स्पॉन उत्पादन इकाई	-	1,312,000.00
फर्नीचर बनाने के लिए वेस्ट वुड का पुनर्चक्रण	250,000.00	1,000,000.00
अदरक एवं हल्दी प्रो.यूनिट आसाम की स्थापना	-	960,000.00
हाथ और घर का बना चॉकलेट बनाने का संयंत्र स्थापित करना	555,600.00	555,600.00
सरसों प्रसंस्करण इकाई की स्थापना-डाटा परामर्श	852,000.00	852,000.00

असमिया भाषा में मोबाइल स्किल डेवलपमेंट कोर्स	800,000.00	-
दृष्टिबाधित के लिए कौशल विकास प्रशिक्षण	1,356,000.00	-
ऑक्सन मेंटर्स आत्मनिर्भरने (माइंडशेयर)	-	1,254,000.00
बम्बू उत्पादों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	2,276,603.00	-
प्रशिक्षण पर हांड्स पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	367,000.00	-
कौशल विकास प्रशिक्षण-एनआईटी (आंध्र प्रदेश)	2,620,900.00	5,463,100.00
एनईआर-ईडीआई में कौशल उद्यमिता कार्यक्रम	-	515,000.00
केले के रेशे हथकरघा एवं हस्तशिल्प पर प्रशिक्षण-	327,500.00	327,500.00
सूक्ष्मप्रचार पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	162,035.00	162,035.00
एनईआर में तकनीकी-उद्यमिता को बढ़ावा देना	1,339,200.00	4,226,590.00
जीवन जीने के लिए हिडेन संस्कृति एनईआर संगीत को जागृत करना	1,497,500.00	1,000,000.00
मधुमक्खी पालन प्रशिक्षण-नागालैंड	-	225,500.00
मशरूम से पौष्टिक सुपरफूड बनाना	958,800.00	958,800.00
सांस्कृतिक विरासत का डिजिटलीकरण और दस्तावेजीकरण	-	220,000.00
ड्रोन जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम	938,490.00	938,490.00
टोफू मूल्य संवर्धन के माध्यम से आजीविका सृजन	450,000.00	450,000.00
मनु.सुपारी पत्ता प्लेट-FISS	-	990,500.00
सुपारी पत्ता प्लेट, त्रिपुरा का निर्माण	-	1,000,000.00
कुल (E)	16,945,180.00	24,324,933.00
प्रौद्योगिकी विस्तार और समेकन		

असमिया भाषा में मोबाइल स्किल डेवलपमेंट कोर्स	800,000.00	-
दृष्टिबाधित के लिए कौशल विकास प्रशिक्षण	1,356,000.00	-
ऑक्सन मेंटर्स आत्मनिर्भरने (माइंडशेयर)	-	1,254,000.00
बम्बू उत्पादों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	2,276,603.00	-
प्रशिक्षण पर हांड्स पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	367,000.00	-
कौशल विकास प्रशिक्षण-एनआईटी (आंध्र प्रदेश)	2,620,900.00	5,463,100.00
एनईआर-ईडीआई में कौशल उद्यमिता कार्यक्रम	-	515,000.00
केले के रेशे हथकरघा एवं हस्तशिल्प पर प्रशिक्षण-	327,500.00	327,500.00
सूक्ष्मप्रचार पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	162,035.00	162,035.00
एनईआर में तकनीकी-उद्यमिता को बढ़ावा देना	1,339,200.00	4,226,590.00
जीवन जीने के लिए हिडेन संस्कृति एनईआर संगीत को जागृत करना	1,497,500.00	1,000,000.00
मधुमक्खी पालन प्रशिक्षण-नागालैंड	-	225,500.00
मशरूम से पौष्टिक सुपरफूड बनाना	958,800.00	958,800.00
सांस्कृतिक विरासत का डिजिटलीकरण और दस्तावेजीकरण	-	220,000.00
ड्रोन जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम	938,490.00	938,490.00
टोफू मूल्य संवर्धन के माध्यम से आजीविका सृजन	450,000.00	450,000.00
मनु, सुपारी पत्ता प्लेट-FISS	-	990,500.00
सुपारी पत्ता प्लेट, त्रिपुरा का निर्माण	-	1,000,000.00
कुल (E)	16,945,180.00	24,324,933.00
प्रौद्योगिकी विस्तार और समेकन		

आरसी-कन्याका/सीआरई के विकास के लिए वैज्ञानिक मधुमक्खी पालन	1,170,000.00	-
कुल (एफ)	16,268,737.00	9,908,203.00
अनुदान पर कुल व्यय (ए+बी+सी+डी+ई+एफ)	66,451,315.00	78,255,779.00
अनुलग्नक - 5		
आपूर्तिकर्ताओं और अन्य लोगों के लिए अग्रिम	चालू वर्ष	गत वर्ष
हरि ओम सेल्स एंड सर्विस	2,860,089.00	2,860,089.00
एस. पी. इंजीनियर्स	1,658,197.00	1,658,197.00
एफपीवी मॉडल इंटरनेशनल	83,667.00	83,667.00
आरसी बाजार	87,388.00	87,388.00
व्योम विस्टा	171,750.00	171,750.00
करुणेश एंटरप्राइजेज	489,441.00	489,441.00
कुल	5,350,532.00	5,350,532.00

अनुलग्नक -ए

महत्वपूर्ण लेखांकन नीतियाँ

उत्तर पूर्वी प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग एवं प्रसार केंद्र (नेक्टर)

1. सोसाइटी ने लेखांकन के प्रोद्घवन आधार को अपनाया है। वार्षिक खाते केंद्रीय स्वायत्त निकायों के लिए निर्धारित एवं लागू लेखांकन मानकों के अनुरूप हैं।
2. अचल संपत्तियाँ कम संचित मूल्यहास पर बताई गई हैं। परिसंपत्ति को उसके वर्तमान स्थान और स्थिति में लाने की कोई अन्य लागत और खरीद मूल्य का समावेश है।
3. अचल संपत्तियों पर मूल्यहास की गणना आयकर अधिनियम, 1961 में निर्धारित की गई दरों के अनुसार क्रमागत हास विधि (डब्ल्यूडीवी) से किया गया है।
4. भविष्य निधि और अधिवर्षिता निधि के रूप में सेवानिवृत्ति लाभों को अंशदान लाभ योजना के रूप में परिभाषित किया गया है और इस तरह के अंशदानों के देय होने पर उन्हें उस वर्ष के आय और व्यय विवरण में दर्शाया जाता है।
5. ग्रेच्युटी लाभ का हिसाब और भुगतान बीमांकित मूल्यांकन पद्धति के बिना सोसाइटी द्वारा की गई आंतरिक गणना के अनुसार किया जाता है।
6. माल-सूची मूल्य लागत मूल्य पर है अथवा शुद्ध वसूली मूल्य जो भी कम हो
7. विभिन्न परियोजनाओं के तहत जारी की गई राशि को उस वर्ष के व्यय के रूप में शामिल किया जाता है जिसमें भुगतान किया जाता है, इस तथ्य पर ध्यान दिए बिना कि राशि का पूरी तरह से विशिष्ट उद्देश्य के लिए उपयोग किया गया है या नहीं।
8. विभिन्न परियोजनाओं के तहत जारी की गई राशि को उस वर्ष के व्यय के रूप में देखा जाएगा जिसमें भुगतान इस तथ्य के बावजूद किया गया है कि क्या राशि पूरी तरह से विशिष्ट उद्देश्य के लिए उपयोग की गई है या नहीं।

दिनेश जैन एण्ड असोशीएट
चार्टर्ड एकाउंटेंट्स
फर्म रजिस्ट्रेशन नंबर: 004885N

हस्ता /-

(दिनेश कु जैन)

भागीदार

सदस्यता संख्या 082033

यूडीआईएन : 24082033BKDIBV8205

दिनांक 25.07.2024

नई दिल्ली

हस्ता /-

लेखा प्रबन्धक

(नेक्टर)

हस्ता /-

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी

(नेक्टर)

हस्ता /-

महानिदेशक

(नेक्टर)



मुख्यालय :

सर्वे ऑफ इंडिया कैम्पस,
बोनी ब्रे एस्टेट,
बारिक प्वाइंट,
शिलांग - 793 001
मेघालय

+ 91-364-2505034/2506085

नई दिल्ली कार्यालय का पता :

द्वितीय मंजिल
विश्वकर्मा भवन,
शहीत जीत सिंह मार्ग,
नई दिल्ली - 110016

+ 91-11-42525646/206/208

गुवाहाटी का पता :

उत्तर पूर्वी प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग एवं प्रसार केंद्र (नेक्टर)
प्रथम तल, गुवाहाटी बायोटेक पार्क, अमीनगांव, नामती जलाह,
गुवाहाटी, असम - 781031

आगरतला का पता :

बांस एवं बेंत विकास संस्थान (बीसीडीआई)
सी/ओ उत्तर पूर्वी प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग एवं प्रसार केंद्र (नेक्टर)
लिचुबागान, पी.ओ. - अगरतला सचिवालय
अगरतला - 799010 (त्रिपुरा)